अध्याय दो

पुनर्जागरण और समाज

साधारण अर्थों में 'रिनासां' का मतलब पुनर्जन्म होता है। ऐतिहासिक संदर्भ में इसका अभिप्राय उस महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आंदोलन से है जिसमें रोम और यूनान के पुराशास्त्रीय युग में फिर से इटली के शिक्षित समुदाय की रुचि जगी। इसका उद्देश्य पुराशास्त्रीय काल की सांस्कृतिक उपलब्धियों का पुनर्अन्वेषण करना था। उस युग की कलाओं और साहित्य को बचाना था ताकि उन्हें पुनर्जीवित किया जा सके और एक ऐसी नई संस्कृति का सृजन किया जा सके जो मध्यकालीन बंधनों से मुक्त हो। यह प्राचीन अतीत की केवल खोज नहीं थी बल्कि इसमें कला, साहित्य, सामाजिक मूल्यों और राजनीतिक जीवन के पुराशास्त्रीय ज्ञान का सामाजिक व्यवस्था की अपनी अवधारणा के रूप में अनुप्रयोग करना भी था। लोग मानते थे कि पुराशास्त्रीय ज्ञान समयुगीन जगत यानी मध्यकाल के ज्ञान से बहुत अलग था। अतः 1300 ई. और 1600 ई. के बीच यूरोप के कई भागों में, मुख्य रूप से इतालवी नगर-राज्यों में, अनेक आंदोलनों के जरिए सामाजिक मूल्यों के पुनर्निर्माण के बड़े-बड़े प्रयास किए गए। यह विचारणा, साहित्य, कला और वास्तु, राजनीति और राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में गहन सर्जनात्मकता का काल बन गया। इस आंदोलन का स्वरूप बहुत जटिल था। इसने प्रत्येक क्षेत्र के सामाजिक वातावरण के अनुसार अलग-अलग रूप ले लिए। 'रिनासां' या पुनर्जागरण को एक सर्वमान्य अर्थ देना कठिन है। इस आंदोलन की प्रकृति और महत्ता बदलते दृष्टिकोणों व व्याख्या के साथ बदलती रही है। आरंभिक चरण से ही पुनर्जागरण के संपूर्ण विषय ने अनेक इतिहासकारों का ध्यान आकर्षित किया है।

पुनर्जागरण की शुरुआत 'ब्लैक डेथ' के समय से या इससे भी पहले चौदहवीं शताब्दी में देखी जा सकती है। यह उस समय से लेकर सोलहवीं सदी के आरंभ तक चलता रहा। लगभग दो सौ वर्षों से अधिक की इस अवधि ने राजनीतिक उथल-पुथल, निरंतर युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं से हुई भारी तबाही देखी। फिर भी इतालवी राज्यों व यूरोप के कुछ अन्य भागों के इतिहास में यह काल सांस्कृतिक दृष्टि से काफी उर्वर समय था।

अर्थ

पुनर्जागरण और इतिहास में इसके स्थान की अवधारणा में कई परिवर्तन आए हैं क्योंकि

इसकी व्याख्याएं अलग-अलग ढंग से की गई हैं। 'रिनासां' शब्द की उत्पत्ति एक इतालवी कला सिद्धांतकार जोर्जिया वसारी (1511-1574) के लेखनों से हुई। उन्होंने पिछली दो सदियों का वर्णन करने के लिए *रिनस्सिटा* शब्द का प्रयोग किया। उसी समय फ्रांसीसी प्रकृतिवादी पीयर बेलोन (1518-1564) ने 'रिनासां' शब्द का इस्तेमाल किया, जिसका अभिप्राय नए भाव में पुराशास्त्रीय प्राचीनता से था। इतालवियों ने इस आंदोलन को *रिनास्सिमेंतो* कहा। इसे प्राचीन उत्कृष्ट साहित्य की पुनः प्रतिष्ठा के साथ हुई एक अविशिष्ट परिघटना के रूप में देखा जाता था। थ्योदोर डी बेंज ने 1453 में कुस्तुनतुनिया के पतन को इसका कारण बताया जिसकी वजह से यूनानियों का इटली पलायन हुआ। बाद की सदियों में इस विचार को स्वीकार किया गया लेकिन अब स्वीकार नहीं किया जाता है क्योंकि बिना किसी संदेह के यह साबित हो गया है कि इस आंदोलन की शुरुआत चौदहवीं सदी के आरंभ में हुई। पुनर्जन्म या पुनर्प्रतिष्ठा की बात इटली में जियोटो के समय से जोर पकड़ने लगी। पुनर्जागरण के समय में कलाकारों, कवियों की उपलब्धियों की तुलना प्राचीन कलाकारों व रचनाकारों से की जाती थी। पुनर्जागरण के समय के लेखक मध्यकाल की संस्कृति को नापसंद करते थे। वे इस काल को 'अंधकार युग' या 'बर्बरतापूर्ण अंधकार' कहते थे। पुनर्जागरण को आधुनिक और मध्ययुगीन यूरोप की विभाजक रेखा माना गया है। बहुत से इतालवी जानते थे कि पुरातन काल में रोम सभ्य संसार का केंद्र था। लेकिन गोथ्स और वंडाल्स के जर्मन आक्रमण ने रोम साम्राज्य की शक्ति और गौरव को नष्ट कर दिया। पुराशास्त्रीय काल (जिसे वे गर्व से स्मरण करते थे) के बाद मध्य युग का काफी लंबा समय रहा। वे इसे घोर अंधकार, अंधविश्वास, आर्थिक मंदी और निरंतर युद्ध का काल मानते थे। इतालवी मानते थे कि इस दौरान कला और साहित्य का यूरोप से पलायन हो गया था। यह अतीत की एक उच्च संस्कृति की मौत का द्योतक था। पुनर्जागरण के माध्यम से ही उन्होंने जीवन के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पहलुओं में परिवर्तन लाना चाहा। बुद्धिजीवी मध्य युग की कला को *गोथिक* कहते थे, जिसका अभिप्राय बर्बरतापूर्ण चरित्र से था। पुनर्जागरण के समय के विद्वान पुनर्जागरण के पूर्व के बौद्धिक आंदोलन की आलोचना करते थे। यह आंदोलन वितंडावाद के रूप में जाना जाता था, जिसने बाद के लेखनों को प्रभावित किया। एलिस्टर ई. मैक्ग्राथ ने तो यहां तक कहा है कि वितंडावाद शायद मानव इतिहास का सबसे घृणित बौद्धिक आंदोलन था। यह एक मध्ययुगीन आंदोलन था जो 1250-1500 ई. के बीच फल-फूल रहा था। यह धार्मिक विश्वास के विवेकपूर्ण औचित्य पर बहुत अधिक बल देता था। यद्यपि यह आंदोलन उत्तरी यूरोप के कई भागों में सफल हुआ था, लेकिन इसका केंद्र पेरिस विश्वविद्यालय बन गया। इसके परिणामस्वरूप यहां अनेक धार्मिक स्कूलों की स्थापना हुई और दूसरी ओर धार्मिक बहस छिड़ गई। इस आंदोलन ने ईसाई धर्मशास्त्र को सुव्यवस्थित करने और इसका विस्तार करने का प्रयास किया। अरस्तु की पूर्व-कल्पनाओं

पर आधारित अपनी दर्शन पद्धति का विकास करके इसने धर्म की पद्धति और सिद्धांत मुहैया कराना चाहा। पांडित्यपूर्ण लेखन आम तौर पर लंबे और तर्कपरक होते थे। ये तर्क, दर्शन और धर्मशास्त्र पर आधारित होते थे। पुनर्जागरण के भीतर मानववाद एक आंदोलन था जिसने वितंडावाद पर निरंतर हमले किए। प्रबुद्धवाद (यूरोप का एक और सांस्कृतिक और बौद्धिक आंदोलन था जो फ्रांस की क्रांति के पहले अठारहवीं सदी में हुआ) काल ने मध्य युग के प्रति पूर्वाग्रहों को फिर से ताजा कर दिया और इसने उसे और अधिक तीक्ष्ण बना दिया। प्रबुद्धवादी लेखकों ने मध्यकालीन संस्कृति को अंधविश्वास का युग कहा, जिसका अंत पुनर्जागरण के विवेकपूर्ण चिंतन से हुआ। विख्यात प्रबुद्धवादी विद्वान वाल्तेर ने पुनर्जागरण के बौद्धिक अवयव पर जोर देते हुए कहा कि इसने स्वतंत्रता की भावना को बढ़ावा दिया है और देशी साहित्य और कला को पुनर्जीवित किया है। अपनी पुस्तक *एसे ऑन मैनर्स* (1756) में वाल्तेर ने लिखा कि सोलहवीं सदी एक ऐसा समय था जब प्रकृति ने करीब-करीब सभी क्षेत्रों में, सबसे अधिक इटली में, कुछ असाधारण पुरुषों को पैदा किया। पीटर बर्क के अनुसार, प्रबुद्धवादी लेखकों ने इस परिघटना के दो कारण बताए—स्वतंत्रता और इटलीवासियों की संपन्नता। शाफ्टसबरी मानते थे कि चित्रकला का पुनर्जीवन वेनिस, जेनोआ और फ्लोरेंस जैसे स्वतंत्र राज्यों में नागरिक स्वतंत्रता के कारण हुआ। सिसमोंडी भी इस स्वतंत्रता को महत्वपूर्ण मानते थे। वह पुनर्जागरण के विकास में इतालवी शहरों में धन और स्वतंत्रता की मौजूदगी के महत्व पर बल देते थे। प्रबुद्धवादी लेखकों का मानना था कि स्वतंत्रता वाणिज्य को प्रोत्साहित करती है जो प्रकारांतर से संस्कृति को प्रोत्साहित करती है क्योंकि वाणिज्य और कला के सभी रूप सहचर समझे जाते थे।

आधुनिक सभ्यता के विकास में पुनर्जागरण को महत्व देने का यह दृष्टिकोण काफी लंबे समय तक प्रचलन में रहा, यद्यपि ऐतिहासिक साहित्य में पुनर्जागरण की अवधारणा में कई परिवर्तन हुए। जेकब बर्खार्ट की पुस्तक *डाई कल्चर डेस रिनासां इन इटालिएन* (1860) की आलोचना के बावजूद इसे पुनर्जागरण का सर्वश्रेष्ठ विश्लेषण माना जाता है। यह संस्कृति को समाज से जोड़ने का प्रयास था। बर्खार्ट ने तीन 'शक्तियों'—राज्य, संस्कृति और धर्म के आपस में एक-दूसरे पर प्रभाव के अर्थ में समाजों की विवेचना की। उन्होंने पुनर्जागरण की अवधारणा का कला और साहित्य से विस्तार करके इसमें व्यापक संदर्भ में इतिहास और सामाजिक जगत को समाहित किया। बर्खार्ट के अनुसार पुनर्जागरण ने उन अभिवृत्तियों को उद्घाटित किया जिसने आरंभ में इटली को और बाद में पूरी दुनिया को बदल डाला। इसने 'आधुनिक' युग की शुरुआत प्राकृतिक परिघटनाओं, नैतिक और धार्मिक प्रश्न, सार्वजनिक जीवन और कला और साहित्य के सर्जनात्मक जगत के प्रति एक नए दृष्टिकोण से की। इसने व्यक्तिवाद के युग का भी आरंभ किया। सामान्य अर्थ में पुनर्जागरण के बारे में यह विचार अभी भी मौजूद है। डेनिस हे बर्खार्ट के आलोचकों को दो

बड़े संवर्गों में बांटते हैं। पहले संवर्ग में वे हैं जो यह तर्क देते थे कि पुनर्जागरण जो इटली में चौदहवीं और पंद्रहवीं सदियों में आरंभ हुआ, यूरोप के सांस्कृतिक विकास के अनेक प्रसंगों में से केवल एक था। इसलिए पुनर्जागरण को पुराशास्त्रीय प्राचीनत्व की ओर क्रमिक लेकिन विषम वापसी के लिए एक जातिगत नाम दिया जाना चाहिए। आलोचकों का दूसरा संवर्ग इस बात पर बल देता है कि इतालवी पुनर्जागरण को विशेष महत्वपूर्ण नहीं माना जाना चाहिए। इसे एक अलग घटना मानने की आवश्यकता नहीं। पहले विचार की वैधता है क्योंकि मध्यकालीन संस्कृति का अध्ययन *कैरोलिनियन* पुनर्जागरण और 'बारहवीं सदी' के पुनर्जागरण के महत्व को उजागर करता है। इन आंदोलनों में कई लोग प्राचीन पांडुलिपियों की खोज और संरक्षण में जुटे थे तथापि यह भी स्वीकार किया जाता है कि इन आंदोलनों ने व्यापक जनसमुदाय को आकर्षित नहीं किया। न ही इन्हें व्यापक संरक्षण मिला। इतालवी पुनर्जागरण की भी यही स्थिति थी। बर्खार्ट ने पुनर्जागरण को व्यक्तिवाद का जन्मदाता माना। कई विद्वान बर्खार्ट की आलोचना इसलिए करते हैं क्योंकि उन्होंने मध्यकाल के कार्पोरेट जगत की समाप्ति पर बहुत अधिक जोर दिया था। जिन संस्थाओं को उन्होंने समाप्तप्राय माना—जैसे श्रेणीधर्म व्यवस्था, वणिक समुदाय (गिल्ड्स) और चर्च, सोलहवीं सदी इटली में भी वे महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही थीं।

मध्यकाल की जो तसवीर पुनर्जागरण के लेखकों ने खींची थी, वे तथ्य पर आधारित नहीं थी। मध्यकाल का आधुनिक शोध बिना किसी संदेह के यह स्थापित करता है कि मध्यकाल के बीच का समय प्राचीन कला और साहित्य के 'अंत' का काल नहीं था। दरअसल यूनान की संस्कृति के प्रति पाश्चात्य आकर्षण मध्यकाल से ही शुरू हुआ। रॉबर्ट ग्रॉसटेस्ट और रोजर बेकन जैसे विद्वानों ने ग्रीक व्याकरण के अध्ययन को पुनर्जीवित किया और अरस्तु की कई पुस्तकों का अनुवाद किया। सेंट थामस एक्विनस की अरस्तु में गहरी रुचि थी। ट्रेविजांड, थ्योदोर गाजा और जॉक लफ़ेव्र देताप्ल्स जैसे अनेक मानववादी अरस्तु के महान प्रशंसक थे। लैटिन क्लासिक्स का पुनरुत्थान सिसरो के इर्द-गिर्द केंद्रित था। वह मध्यकाल के सबसे लब्धप्रतिष्ठित विद्वान और लेखक थे। गोथिक कला का मुख्य रूप से उत्तर में, आरंभिक उथल-पुथल की अवधि के बाद निरंतर उत्थान हुआ। ई. एच. गोंबरीच के अनुसार, इटलीवासी उत्तर में रह रहे लोगों की तुलना में कला के इस क्रमिक विकास और प्रकटन से कम वाकिफ थे। इसलिए वे जियोटो की उपलब्धियों को महान नवपरिवर्तन मानते थे।

कार्ल मार्क्स और एंगेल्स ने पुनर्जागरण को कला और अर्थव्यवस्था के बीच संबंध के परिप्रेक्ष्य में रखा, अर्थात सांस्कृतिक और भौतिक उत्पादन के बीच संबंध के संदर्भ में। उनका मानना था कि आर्थिक *आधार* सांस्कृतिक *अधिसंरचना* का निर्माण करता है। इतालवी पुनर्जागरण में रेफेल जैसे व्यक्ति अपनी प्रतिभा का विकास करने में सफल हो सकते थे या नहीं यह पूर्णरूपेण मांग पर निर्भर करता था। और मांग प्रकारांतर से श्रम-

विभाजन और इससे उत्पन्न मानव संस्कृति की स्थितियों पर निर्भर करती थी। एंगेल्स मानते थे कि यह आंदोलन पश्चिम के इतिहास में बहुत बड़ा मोड़ था। सोलहवीं सदी को विविध घटनाओं जैसे नई संस्कृति, नए धर्म, आर्थिक संगठनों, नई दुनिया और नए विज्ञान के निर्माण का काल मानते हुए उन्होंने तर्क दिया कि यह मानवजाति द्वारा अब तक अनुभूत सबसे महान 'प्रगतिशील क्रांति' थी (कार्ल मार्क्स और एफ. एंगेल्स, *सलेक्टेड वर्क्स*, खंड 2; एंगेल्स, एफ., *डायलेक्टिक्स ऑफ नेचर*, पृ. 30)। आल्फ्रेड वॉन मार्टिन ने भी पुनर्जागरण को व्यक्तिवाद और आधुनिकता की उत्पत्ति का श्रेय देते हुए पुनर्जागरण को 'बुर्जुआ क्रांति' कहकर इसके आर्थिक आधार पर बल दिया। इसमें कुलीन और पादरी के स्थान पर पूंजीपतियों का समाज के अगुओं के रूप में उदय हुआ।

कुछ विद्वान पुनर्जागरण को दिए जाने वाले महत्व को न केवल नकारते हैं बल्कि वे तर्क देते हैं कि पुनर्जागरण जैसी कोई घटना कभी हुई ही नहीं। इटियेन गिलसन ने कहा कि आधुनिक जगत का निर्माण भौतिक विज्ञान पर आधारित था। लेकिन मानववादियों ने इसमें रुचि नहीं दिखाई और इसलिए इस मान्यता को स्वीकार नहीं किया जा सकता कि पुनर्जागरण ने आधुनिक विश्व के निर्माण में सहायता की। लिन थॉर्नडाइक ने अपनी पुस्तक *अ हिस्टरी ऑफ मैजिक एंड एक्सपेरीमेंटल साइंस* में तर्क दिया कि वास्तविक पुनर्जागरण दरअसल बारहवीं सदी के आसपास हुआ। मध्यकालीन लैटिन और वितंडावाद में बहुत खूबियां थीं। गोथिक वास्तुकला और शिल्प के समान ही गोथिक चित्रकला की अनदेखी की गई थी। लोकतंत्र और जन-शिक्षा में आरंभिक आधुनिक काल में बढ़ोतरी होने के बजाए कमी आई। एच.ओ. टेलर और हेलेन वडेल जैसे लेखक कहते हैं कि बारहवीं सदी से पुराशास्त्रीय (क्लासिकल) और ईसाई परंपराएं साथ-साथ चलती रहीं और मध्यकालीन कवि पुराशास्त्रीय कवियों से भी उतने ही प्रभावित थे। जॉन हुईजिंगा अपनी पुस्तक *द वेनिंग ऑफ द मिडल एजेज* में पुनर्जागरण को 'मध्ययुग का शरद्काल' कहते हैं। इसी प्रकार डब्ल्यू.के. फर्गुसन अपनी पुस्तक *द रिनासां इन हिस्टोरिकल थॉट* में पुनर्जागरण की उत्पत्ति और इसकी जड़ें मध्ययुग में तलाशते हैं। हाल के कई लेखक मानते हैं कि मध्यकाल के लोग दुनिया की खोज से उतने ही जुड़े थे जितना उनके पुनर्जागरण के परवर्ती।

जिन लेखकों ने पुनर्जागरण की सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत की है उनमें गारिन अंताल, माइकेल बेक्सेंडल, हांस बैरोन और पॉल ओस्कार क्रिस्टेलर के नाम प्रमुख हैं। अंताल ने तर्क दिया कि उद्योग और अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने फ्लोरेंस को असामान्य रूप से विकसित बुर्जुआ वर्ग दिया। पुनर्जागरण के समय की कला अभिजात्य वर्ग के उतार-चढ़ाव को दरशाती है। यह कला और संरक्षक के बीच संबंध को भी उजागर करती है। बेक्सेंडल ने यह थीसिस दी कि चित्रकला एक प्रकार से संरक्षक और कलाकार के बीच सामाजिक संबंध की द्योतक है। इस संबंध में संरक्षक की भूमिका निर्णायक होती थी। इस विचार से

कई अन्य भी सहमत थे। ऐसे अनेक लेखक हैं जो पुनर्जागरण को सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में पेश करते हैं।

अतः पुनर्जागरण का अर्थ और महत्व इसकी व्याख्या पर निर्भर करता है। अब पुनर्जागरण को इतिहास की एक अलग अवधि या मध्यकाल और आधुनिक काल को विभाजित करने वाले युग के रूप में नहीं देखा जाता है। मध्यकाल का एक अपेक्षाकृत गहन और व्यापक अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि यह समय संक्रांति का था। इसमें मध्ययुग और आधुनिक युग दोनों के तत्व मौजूद थे। यह अपने आप में कोई अलग काल नहीं था बल्कि निरंतर ऐतिहासिक विकास का एक भाग था। पुनर्जागरण मध्यकाल की आशा की पूर्ति का द्योतक था, महज पुराशास्त्रीय प्राचीनत्व की ओर वापसी नहीं। उस काल की सामाजिक-आर्थिक शक्तियों ने मध्यकालीन समाज, सामंती प्रथा और सार्वभौम चर्च को छिन्न-भिन्न कर दिया चूंकि वे आपस में एक-दूसरे से जुड़े थे। वाणिज्य और उद्योग के पुनरुत्थान के साथ-साथ शहरों और मुद्रा अर्थव्यवस्था का भी विकास हुआ। भूमि काश्तकारी और कृषि पर आधारित मध्ययुगीन समाज अनंत काल तक नहीं चल सकता था। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने नए विचारों को जन्म दिए। इन विचारों ने न केवल उच्च मानकों का सृजन किया और कला और साहित्य में नई अभिरुचि पैदा की बल्कि अभिजात्य शासक वर्ग के नजरिए को भी प्रभावित किया। इससे यूरोपीय संस्कृति पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। इसने यूरोपियों को समाज की एक नई दृष्टि दी जिसका निर्माण करने के लिए वे प्रयत्नशील थे।

सामाजिक आधार

एक आंदोलन के रूप में पुनर्जागरण शहरी वातावरण का उत्पाद था। यह उन क्षेत्रों में पनपा और विकसित हुआ जहां महत्वपूर्ण नगर या शहर थे। इस खयाल से, जैसा कि पिछले अध्याय में उल्लेख किया गया, इटली के नगर-राज्य यूरोप के सर्वाधिक शहरीकृत केंद्र थे। पुनर्जागरण संस्कृति इतालवी नगर-राज्यों की रोचक और विचित्र दुनिया का उत्पाद थी। इनमें प्राचीन जगत का पुनरुत्थान और वर्तमान समाज में इसका अनुप्रयोग उस समय की नागरिक आवश्यकताओं को दरशाता था। इटली के बाहर उत्तर-पश्चिमी यूरोप में बरगंडी शहर में पुनर्जागरण संस्कृति का विकास हुआ क्योंकि यह व्यापार और विनिर्माण का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। आम तौर पर यह पूछा जाता है कि पुनर्जागरण इटली में ही क्यों पल्लवित हुआ? इसके कई कारण थे.

इटली में पुनर्जागरण उत्तरी और मध्य इटली के शहरों में मौजूद शहरी वातावरण से शुरू हुआ। उत्तरी और मध्य इटली में बहुत बड़ी संख्या में शहर थे। इन शहरों का शहरी जीवन यूरोप के अन्य किसी भी भाग से अधिक गतिशील और परिष्कृत था। इन शहरों की

सामाजिक संरचना भी असमान थी। प्रमुख सामाजिक समूह, खास तौर पर फ्लोरेंस में, तीन श्रेणियों के थे। सामाजिक ढांचे के शीर्ष पर सबसे धनी लोग थे। इन्हें *नोबली*, प्रिंसपली, ग्रैंडी या 'प्रथम नागरिक' कहा जाता था। इनका राजनीतिक सत्ता पर एकाधिकार था। तमाम महत्वपूर्ण आधिकारिक पद ये अपने पास रखते थे। इस समूह के सदस्य शिक्षित, व्यापक रूप से भ्रमण किए हुए, अनुभवी होते थे। ये शहर के मध्य में भव्य महलों में रहते थे। इन्हें शोहरत की भूख होती थी। *नोबली* के नीचे *मेजानी* या *पोपुलरी* की श्रेणी थी। इस श्रेणी के लोगों के पास सीमित साधन होते थे। इनमें दुकानदार, बेकर, शराब विक्रेता, दवा बेचने वाले, कलाकार, वकील, नौकरशाह और शिक्षक आते थे। वे अपने-अपने क्षेत्र में काम करते थे। शिल्प संघों का पदानुक्रम पर आधारित एक सुस्पष्ट सोपान होता था। शीर्ष के चार शिल्प संघों—कपड़ा व्यापारियों (कैलिमाला), ऊन विनिर्माताओं (आटेस डेला लाना), रेशम विनिर्माताओं (आर्टे डेला सेटा) और बैंकरों (कैंबियों) पर ग्रैंडी का करीब-करीब एकाधिकार था। *मेजनी* संपन्न वर्ग था लेकिन सरकार में इसकी भागीदारी बहुत सीमित थी। यद्यपि बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि कम थी लेकिन वे देशी भाषा पढ़ और लिख सकते थे और अपने लेखों (एकाउंट्स) के लिए अंकगणित पर निर्भर करते थे। समाज के सबसे निचले स्तर पर गरीब लोग (पोवेटी) या जन-सामान्य थे। फ्लोरेंस में इस श्रेणी के एक तिहाई लोग कपड़ा विनिर्माताओं से जुड़े थे। इसका एक बड़ा भाग घरेलू नौकरों और मजदूरों का था। ये लोग राजनीतिक सत्ता के करीब-करीब बाहर थे। समाज के उच्च वर्ग के लोगों ने पुनर्जागरण लाया और इन्हें मध्य वर्ग के लोगों ने अकसर धन मुहैया कराया।

इटली के नगरों में धन के केंद्रीकरण और उनके सक्रिय नागरी जीवन ने जीवन के अपेक्षाकृत अधिक सांसारिक दृष्टिकोण का निर्माण किया। कोई भी शासक स्वयं नानाविध बौद्धिक और सांस्कृतिक प्रयोगों को रोक नहीं सकता था। इटली का पुनर्जागरण एक सौ वर्षों की नागरिक स्वायत्तता का नतीजा था। लोदी के शांति समझौते (1454) ने एक ऐसी स्थिति का निर्माण किया था जिसमें कोई भी शासक अन्य नगर-राज्यों पर अपनी संपूर्ण राजनीतिक सत्ता का दावा नहीं कर सकता था। साथ ही व्यक्ति विशेष किसी आक्रमणकारी का शिकार भी नहीं हो सकता था। पुनर्जागरण के विकास में यह एक महत्वपूर्ण कारक था। बहुत से स्व-शासी नगर-राज्यों की उपस्थिति ने उन्हें राजनीतिक और सांस्कृतिक शत्रुता के जरिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करने को प्रेरित किया। डेनिस हे के अनुसार इटली के राज्यों की राजव्यवस्था ने ही सांस्कृतिक बदलावों के केंद्र का काम किया। इसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक और बौद्धिक गतिविधियों में उल्लेखनीय विविधता आई, जो कि यूरोप के शेष भागों में नहीं देखी जा सकती थी। इसने संरक्षण के बहुत से स्रोत उपलब्ध कराए। अपने नगरों के विकास के लिए सबसे प्रतिभाशाली लोगों को रखने की होड़ शुरू हो गई। इस प्रतियोगिता ने पूर्णता (परफेक्शन) के मानक को ऊंचा कर दिया। इटली के नगरों में

लब्धप्रतिष्ठित कलाकारों और अनेक उपलब्धियां प्राप्त कर चुकी महान शख्सियतों की बाढ़ सी आ गई।

आर्थिक विकास ने इटली के पुनर्जागरण का भौतिक आधार तैयार किया। सदियों से इटली व्यवसाय और विनिर्माण की गतिविधियों वाला क्षेत्र रहा था। अत्यधिक वाणिज्यिक और वित्तीय विकास, जनसंख्या वृद्धि और उत्पादन के बढ़ते स्तर ने इटली की अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में कतिपय पूर्व-पूंजीवादी लक्षणों को संवर्द्धित किए। इटली के व्यापारियों, खास तौर पर फ्लोरेंस के व्यापारियों के पास निवेश के लिए अकूत नकदी पूंजी थी। इसका उपयोग उन्होंने भू-संपदा, व्यापार, खनिज संसाधनों, सैनिक अभियानों के वित्तपोषण और कला परियोजनाओं में किया। तेरहवीं सदी के अंत से फ्लोरेंस के व्यापारियों और बैंकरों ने चर्च संबंधी बैंकिंग का नियंत्रण प्राप्त कर लिया और इसके टैक्स कलेक्टर बन गए। शीघ्र ही वे आल्प्स के दोनों ओर यूरोपीय बैंकिंग पर हावी होने और अत्यधिक लाभ कमाने लगे। इससे उन्होंने बहुत अधिक धन का सृजन किया। उनके पास पूंजी निवेश का ज्ञान और कौशल था जिससे वे अधिकतम लाभ कमा रहे थे। तीन सदियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार, बैंकिंग और उद्योग ने व्यापारी या बुर्जुआ मानसिकता का पोषण किया। इसने मात्रा को बढ़ाने, गणना करने और हिसाब लगाने की क्षमता को प्रदर्शित किया क्योंकि शहरी समाज को आर्थिक कारोबारों में परिशुद्धता की आवश्यकता थी। माप की कला और समय का महत्व वणिक मानसिकता के महत्वपूर्ण अवयव थे। एकाउंट्स को सही रखने के लिए गणितीय ज्ञान की शहरी आवश्यकताओं और इटली के राज्यों के बीच निरंतर युद्ध ने सैनिक और हाइड्रॉलिक इंजीनियरों की मांग का सृजन किया। बड़ी संख्या में अधिकारियों की मौजूदगी को उचित नागरिक शिक्षा की आवश्यकता थी ताकि वे शहरी मामलों की जरूरतों को समझ सकें। बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य होने से अच्छे वास्तुकारों और पेंटरों की मांग बढ़ी। इसलिए इटली के शहरों ने पुनर्जागरण के लिए उपयुक्त माहौल उपलब्ध कराए।

इटली के कुलीन वर्ग के लोग, शेष सामंती यूरोप के कुलीनों के विपरीत, शहरों में रहना अधिक पसंद करते थे। वे पूरी तरह शहरी नागरिक मामलों में लग गए। ग्रामीण महलों में रहने के बजाए उन्होंने शहरों में महल बनवाए। उत्तर के सामंती यूरोप में जमींदारों, कुलीनों और शहरी व्यापारियों के बीच एक प्रकार का विभाजन था। इसके विपरीत इटली के जमींदार वाणिज्यिक और औद्योगिक घरानों के साथ समान स्तर पर शहरी जीवन में शामिल हो रहे थे। व्यापारियों और उद्योगपतियों की दुनिया में ग्रामीण समाज का यही एकीकरण इटली को यूरोप के अन्य क्षेत्रों से अलग करता था। कुलीनों ने अपने टाउन-हाउस को अपने सामाजिक जीवन का केंद्र बना लिया। कुलीन तंत्र और बड़े पूंजीपति वर्ग के बीच कोई बड़ा भेद नहीं था। इटली के कुलीन वर्ग और प्रमुख वाणिज्यिक और औद्योगिक समूहों के बीच मिलन के परिणामस्वरूप अपेक्षाकृत एकीकृत नागरिक समाज का निर्माण हुआ जिसमें वीरता की मध्यकालीन परंपरा और वीरोचित तत्वों के प्रति

झुकाव धीरे-धीरे कम हो गया। साथ ही अभिजात्य वर्गीय लोकाचार का सृजन हो गया था जो निजी प्रयोजनों के लिए खूब खर्च करने की कुलीनों की प्रवृत्ति को दरशाता था। इस अभिजात्य वर्ग की सामाजिक और आर्थिक प्रधानता फ्लोरेंस जैसे राज्यों में सरकार पर इसके नियंत्रण से और भी सुदृढ़ हो गई थी। कुलीनों का व्यापारियों के साथ साहचर्य शिष्टाचार प्रस्तुत करता था। इटली का सामाजिक जीवन अधिकाधिक अभिजात्यवर्गीय होता जा रहा था। यह मिलान में सबसे अधिक द्रष्टव्य था जहां एक दरबारी समाज विकसित हो गया था। जबकि रिपब्लिकन राज्यों में भी अभिजात्य लोग दरबारी कुलीनतंत्र के समान व्यवहार करने लगे। सोलहवीं सदी के आरंभ तक कुलीन या अभिजात्य से क्या आशा की जाती थी, इसका सर्वश्रेष्ठ चित्रण बाल्देसरे कास्तिग्लियोन की पुस्तक *दि बुक ऑफ दि कोर्टियर* (1528) में किया गया है। उन्होंने कुछ मौलिक गुणों का उल्लेख किया है। यह आशा की जाती थी कि ये गुण प्रत्येक दरबारी में मौजूद हों। उसमें अच्छा चरित्र, कुलीन परिवार में जन्म, विनम्रता और प्रतिभा होनी चाहिए थी। इन्हें मौलिक गुण समझा जाता था। इसके अलावा उसमें परिष्कृत गुण होने चाहिए थे, जिनका विकास मानववादी या पुराशास्त्रीय शिक्षा, कला के ज्ञान, संगीत और चित्रकला के माध्यम से किया गया हो। साथ ही वह व्यायाम भी करे ताकि उसका व्यक्तित्व सुविकसित हो। उससे यह भी आशा की जाती थी कि वह आचरण के कतिपय मानक का अनुसरण करे जैसे नागरिक मामलों में आवश्यक चतुराई और राजनय। यह पुस्तक उन आदर्शों को उजागर करती है जो पुनर्जागरण के महान संरक्षक हासिल करने की कोशिश करते थे। बर्खार्ट कहते हैं कि कास्तिग्लियोन की यह पुस्तक उच्च और मध्यम वर्गों के विलय को प्रतिबिंबित करती है। यह विलय नगरों में उनके एक साथ रहने का परिणाम था।

पुनर्जागरण होने का एक अन्य महत्वपूर्ण कारक इटली के शहरों में धन का होना था। तेरहवीं सदी तक इटली की अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक गतिविधियों के कारण पूरे यूरोप में सबसे अधिक संपन्न हो गई थी। मध्यकाल के अंत समय से संस्कृति में भारी निवेश शायद शहरी गौरव और प्रति व्यक्ति संपत्ति के केंद्रीकरण के कारण था। कई इतिहासकार मानते हैं कि संस्कृति के लिए मुख्य रूप से सार्वजनिक शहरी समर्थन तेरहवीं सदी के मध्य तक सबसे पहले इटली में आया। रॉबर्ट लोपेज और कार्लो एम. सिपोलो जैसे विद्वान आर्थिक संपन्नता और सांस्कृतिक प्रगति के बीच संबंध पर प्रश्न करते हैं। उनके अनुसार 1330 ई. से 1530 ई. के बीच आर्थिक मंदी का दौर था। इस दौरान भूमि के मूल्य में गिरावट, ब्लैक डेथ के कारण जनसंख्या में कमी, सामंती मालिकों के लाभ में कमी और ब्याज दरों में गिरावट देखी गई। तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि वे आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक विकास के बीच विपरीत संबंध से सहमत थे। आर्थिक मंदी के इस दौर में राजनीतिक अभिजात्य लोग और व्यवसायी संरक्षण, सत्ता और प्रतिष्ठा के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करते थे। इस प्रकार संस्कृति एक आर्थिक उद्यम बन गई थी। बहरहाल, इस

विचार को इतिहासकारों का बहुत समर्थन नहीं मिला है। एक अन्य विश्लेषण के अनुसार इटली के बहुत से नगरों में शासन कर रहे राजकुमारों की बड़ी संख्या में उपस्थिति से संरक्षण और रोजगार की संभावना अधिक थी। मिलान के राजकुमार विस्कोंटी और सफ़ोज़ा, फ्लोरेंस के मेदिची, फेरारा के इस्ते और मांतुवा के गोंज़ागो जैसे महान शासकों ने अपने-अपने दरबारों में कला और साहित्य को संरक्षण देकर पुनर्जागरण में बहुत बड़ा योगदान दिया। यहां तक कि छोटे कुलीन परिवारों ने भी इसी प्रकार के योगदान दिए। रोम के पोप भी इटली के राज्यों के राजकुमारों से पीछे नहीं थे। एलेक्जेंडर षष्ठम, जुलियस द्वितीय और लियो दशम कला और वास्तुकला के क्षेत्र में अपने योगदान के कारण 'रिनासां' पोप कहलाते हैं।

चौदहवीं सदी के मध्य से मध्ययुग की पांडित्य शिक्षा और क्षात्र-धर्म संबंधी कविता के रूप और अंतर्वस्तु के विरुद्ध सजग प्रतिक्रिया आरंभ हुई। इससे पाठकों की रुचि में परिवर्तन होने लगा और क्लासिसिज्म और आक्रामक शक्ति को बल मिला। सिसरो के लेखन नए मानक पेश करने लगे और प्राचीन कुलीन-वर्ग के सांस्कृतिक विचारों को प्रस्तुत किया। सिसरो की पुस्तक *ह्यूमैनिटाज* ने शिक्षा का नारा दिया जो मनुष्य को सामाजिक परंपराओं और पेशे की संकीर्ण मानसिकता से मुक्त कराने का दावा करती थी। यह प्राचीनत्व के निरूपण की संदर्शिका (गाइड) बन गई। इसके अलावा रोम की प्राचीन दुनिया के प्रति प्रशंसा और सम्मान की भावना पूरे मध्यकाल के दौरान रही थी। इटली के लोग रोम और ग्रीक की पुरानी दुनिया को बड़े ही अनुराग से स्मरण करते थे। पुनर्जागरण के मानववादी आंदोलन शुरू होने के पहले अतीत के समुत्थान के अनेक प्रयास किए गए। इतिहासकार यह भी कहते हैं कि रोम साम्राज्य के भग्नावशेष जो नगर-राज्यों के इर्द-गिर्द, खास तौर पर रोम के निकट मौजूद थे, ने इटलीवासियों को अतीत का गौरव पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। कहा जाता है कि पुनर्जागरण के सबसे महान वास्तुकार ब्रुनेलेशी मंदिरों और महलों के भग्नावशेषों की माप करने के लिए रोम जाया करते थे। वह उनकी आकृतियों और सजावट के खाकाचित्र बनाकर लाते थे ताकि समन्वय के नए मॉडल्स तैयार किए जा सकें। वेनिस और जेनोआ के व्यापारियों और ग्रीक विद्वानों और धर्मशास्त्रियों के जरिए इटली के बुद्धिजीवियों पर बाइजैंटाइन साम्राज्य का प्रभाव प्राचीनत्व को पुनः स्थापित करने का एक और बड़ा कारण था। यह बौद्धिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करता था। नतीजतन ग्रीक और रोम की संस्कृतियों का महान मिलन हुआ। ग्रीक प्रभाव के इटली में प्रवेश के कई मार्ग थे। वेनिस के. बाइजैंटाइन के साथ जबरदस्त वाणिज्यिक संबंध थे। लेकिन अनेक ग्रीक राजदूतों और भगोड़ों जैसे निकाका के कार्डिनल बेसारियोन, जिसने अपना पुस्तकालय मानववादी विद्वानों को दान दे दिया था, के जरिए अप्रत्यक्ष रूप से ग्रीक ज्ञान भी पहुंच रहा था। पूरब में फ्लोरेंस के विस्तार ने भी उन्हें ग्रीकों के और निकट ला दिया, खास तौर पर 1406 में पीसा के विजय के बाद।

मैनुएल क्राइसोलारास जैसे लोग ग्रीक पढ़ाते थे। युवा विद्यार्थी और बुद्धिजीवी, जिनमें मानववादी विचारों के प्रति ललक थी, उन्हें घेरे रहते थे।

इटली के नगरों में राजनीतिक उथल-पुथल ने भी शत्रुता के कुछ रूप को जन्म दिया। इससे भिन्न-भिन्न बौद्धिक प्रतिक्रियाएं भी हुईं, जैसा कि फ्लोरेंस के मामले में था। 1494 में पोपुलर पार्टी और रिपब्लिकंस ने फ्रांसीसी सेना की सहायता से मेदिची घराने के शासन को अपदस्थ कर दिया, जिसने फ्रांसीसी शासक चार्ल्स अष्टम के नेपल्स ने प्रयाण का विरोध किया था। इसके फलस्वरूप फ्लोरेंस में रिपब्लिकंस और शाही सत्ता के बीच घमासान लड़ाई छिड़ गई। यह घटना ऐसे समय में हुई जब फ्लोरेंस पुनर्जागरण का मुख्य केंद्र बना हुआ था। इन लड़ाइयों के विरुद्ध बौद्धिक प्रतिक्रियाएं महत्वपूर्ण सिद्ध हुईं। लंबी लड़ाई के बाद मेदिची चर्च और स्पैनिश सेना की सहायता से सत्ता में आए, लेकिन बहुत कम समय के लिए। इसी पृष्ठभूमि में मैकियावेली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *द प्रिंस* लिखी। इसके फलस्वरूप उस क्षेत्र के बौद्धिकों द्वारा व्यापक राजनीतिक संवाद और फ्लोरेंस के इतिहास का विशेष अध्ययन किया जाने लगा। कई अभिजात्य रिपब्लिकन सिटी की समस्याओं का विश्लेषण करने और समयुगीन राजनीति और साहित्य पर विचार-विमर्श करने के लिए ओटिसिलारी गोर्डेस में गुप्त रूप से मिले। इस समूह में अधिकांश ने *रिपब्लिकनिज्म* के पक्ष में विचार दिए। इस युग का बौद्धिक माहौल विचार-विमर्श को बढ़ावा देता था। इससे नगर के संविधान और सरकार के स्वरूप के प्रश्न पर नए विचार सामने आए। इस अवधि के दौरान कुछ प्रतिभावान लोग राज्य की सेवा में थे। 1512 में मिशेल एंजेलो, जो कि पुनर्जागरण के समय के महान प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, ने किलेबंदी के कार्य का पर्यवेक्षण स्वयं किया था।

पुनर्जागरण की उत्पत्ति और इसके विकास में संरक्षण ने भी एक अहम भूमिका अदा की। आम तौर पर कलाकारों, वास्तुकारों और विद्वानों के पास इतना धन नहीं होता था कि वे अपनी परियोजनाएं बड़े पैमाने पर पूरी कर सकें। उनमें से अधिकांश को वित्तीय सुरक्षा के लिए संरक्षकों (पैट्रंस) पर निर्भर करना पड़ता था। कुछ विद्वानों का मानना है कि पुराशास्त्रीय कला और साहित्य के पुनरुत्थान का एक प्रमुख कारण यह तथ्य था कि शहर संरक्षण के बिलकुल नए स्रोत प्रस्तुत कर सकते थे। पहले कला के कार्य कॉर्पोरेट निकायों या चर्च द्वारा कराए जाते थे। यह प्रथा पूरे पुनर्जागरण काल तक जारी रही। इसके साथ-साथ बैंकरों, व्यापारी राजकुमारों और कला का कार्य कराने में दिलचस्पी रखने वाले विभिन्न समूहों के रूप में संरक्षण के स्रोत मिल गए। हाल के वर्षों में इतिहासकारों ने पुनर्जागरण के दौरान कला के मानकों के निर्धारण में और विषय-वस्तु के चयन में संरक्षकों की भूमिका पर जोर दिया है या उनकी भूमिका को अस्वीकार किया है। सामाजिक ख्याति प्राप्त करने और भविष्य में अमरत्व प्राप्त करने की आकांक्षा को ही संरक्षण का मुख्य कारण समझा जाता था। कुछ संरक्षक की कामना उस कलाकृति के जरिए पहचाने जाने की होती थी जिसे उन्होंने बनवाया था। यह कोसिमो डी मेदिची के लेखनों से बिलकुल स्पष्ट है। उन्होंने अपनी ख्याति और

फ्लोरेंस के गौरव की स्थापना के लिए कई महल और चर्च बनवाए। दरअसल अभिजात्यों और धनी व्यापारियों के बीच संरक्षण के लिए एक प्रकार की होड़ थी। यह राज्य में अलग-अलग किस्म की थी। पीटर बर्क इसके पीछे तीन उद्देश्य बताते हैं—धर्मपरायणता, प्रतिष्ठा और आनंद। चर्च कला का सबसे बड़ा संरक्षक था, और वैसे ही फ्लोरेंस में मेदिची परिवार था। वसारी के अनुसार कभी-कभी शिल्पकार और दर्जी या शिल्प संघ के सदस्य भी कलाकृति बनवाने के लिए कलाकार नियुक्त करते थे।

इस प्रतिस्पर्धा के फलस्वरूप कलाकारों और वास्तुकारों को इतालवी राज्यों में इतने बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर मिले जितने पहले कभी नहीं थे। जहां कुछ संरक्षक शिल्पकारों और वास्तुकारों को यांत्रिक कौशल वाले या महज कुशल दस्तकार समझते थे, वहीं कोसिमो डी मेदिची उन्हें प्रतिभाशील व्यक्ति मानते थे। पहले बड़ी परियोजनाओं के लिए निम्न मध्यम वर्ग से शायद ही कोई कलाकार नियुक्त किए जाते थे लेकिन धीरे-धीरे व्यक्तिगत प्रतिभा को भी पहचान मिलने लगी। उदाहरण के लिए मिशेल एंजेलो अपने संरक्षक के यहां अपनी शर्तों पर काम करते थे। अतः हम पाते हैं कि पुनर्जागरण के सबसे आरंभिक काल में संरक्षण के मामले में शहरी जनसमर्थन ही हावी था क्योंकि नगरों में धन का केंद्रीकरण और रिपब्लिकन विचारों की लोकप्रियता थी। यह कहना गलत होगा कि पुनर्जागरण में धर्म की कोई भूमिका नहीं थी। कई विशालकाय भवन धर्मपरायणता, नागरिक गौरव और धार्मिक संरक्षण के मिश्रण थे। दि सिटी काउंसिल ऑफ सिएना ने सेंट मेरी के गोथिक चर्च के पुनर्निर्माण का निर्णय लिया। यह धार्मिक भावना से प्रेरित निर्णय था लेकिन यह नागरिक मूल्यों से भी जुड़ा था। सामुदायिक सरकारों ने नगर के गौरव को बढ़ाने के लिए *सिटी हाल्स* (नगरों के बड़े-बड़े हॉल) बनवाए। नगर परिषदों ने भी प्रतिस्पर्द्धा की भावना से गलियों, चौराहों, निवासस्थलों और सार्वजनिक भवन बनवाए या उनका सौंदर्यीकरण करवाया। चौदहवीं सदी में कला विषयक गतिविधियों के पहले चरण में सार्वजनिक संस्थाओं ने अहम भूमिका निभाई। सिएना नगर ने राजनीतिक विचारों के संचरण के लिए कला के उपयोग का प्रदर्शन किया। फ्लोरेंस में सार्वजनिक कला का आयोजन और वित्तपोषण प्रायः विविध शिल्प संघों द्वारा किया जाता था। कुछ बड़े शिल्प संघों ने सैन मिशल के पूजास्थलों के शिल्प का निर्माण करवाया। यह अनाज बाजार का प्रसिद्ध पूजास्थल था। कपड़ा व्यापारियों के संघ ने सेंट जॉन द बैपतिस्त के भित्तिचित्रों के लिए भुगतान किया। जबकि रेशम व्यापारियों के संघ ने अस्पताल के भवन का निर्माण करवाया। इन शिल्पसंघों का नगर के प्रशासन में महत्वपूर्ण राजनीतिक दबदबा था। तथापि पंद्रहवीं सदी के दौरान इटली के अधिकांश नगर-राज्य छोटे-छोटे राजबाड़ों के खानदानी शासन के शिकार हो गए और संरक्षण पर राजवाड़ों का एकाधिकार हो गया। इसके बाद पुनर्जागरण इटली के शासकों के दरबारों या पोप के दरबारों में विकसित होने लगा। पुनर्जागरण के समय के पोप न केवल ईसाई धर्म के आध्यात्मिक नेताओं के रूप में बल्कि मध्य इटली के राज्यों के मालिकों के

रूप में अपनी भूमिका महत्वपूर्ण बनाने के लिए पंद्रहवीं सदी के अंत से विशिष्ट विचारधारात्मक कार्यक्रम कार्यान्वित करने लगे।

पंद्रहवीं सदी के मध्य से इटली के कई भागों में धनाढ्य लोग पुनर्जागरण के संरक्षक बन गए। इटली के शहरों के कुछ परिवारों ने ग्रामीण इलाकों में व्यक्तिगत महल या विला बनवाए, जो उनके ग्रीष्मकालीन आरामगाह थे। वे इन महलों, बागीचों और बंगलों में अधिकारियों और समकक्ष अभिजात्यों की मेजबानी और खातिरदारी करते थे। भवन के अंदर खूबसूरत नक्कासी, चित्रकारी और सजावट होती थी। उनके पास रत्नों का संकलन और उनके पुस्तकालयों में प्राचीन पांडुलिपियों और प्रसिद्ध रचनाओं का संग्रह किया जाने लगा। इतालवी नगर-राज्यों की प्रतिस्पर्द्धी भावना विस्तृत नक्कासी और खूबसूरती वाले पूजास्थलों और विशाल गिरजाघरों के निर्माण में उजागर होती थी। साथ ही यह भी स्मरणीय है कि पुनर्जागरण एक सांस्कृतिक आंदोलन था जो समाज के उच्चे वर्ग तक ही सीमित था। यह किसी भी सूरत में लोकतांत्रिक या जनवादी आंदोलन नहीं था। इसका सामाजिक आधार शासक वर्ग तक सीमित रहा। इटली के बहुसंख्य गरीब, निरक्षर और हाशिए पर रहने वाले ग्रामीण किसानों के लिए पुनर्जागरण का कोई मतलब नहीं था। साथ ही पुनर्जागरण के उदय के लिए शहरी वातावरण का होना आवश्यक था। ग्रामीण या सामंती समाज में इसका इतने बड़े पैमाने पर विकास संभव नहीं हो पाता।

इतालवी मानववाद

इटली में पुनर्जागरण में दो महत्वपूर्ण परिघटनाएं शामिल थीं : प्राचीन लैटिन और ग्रीक में नई अभिरुचि, जिसे मानववाद के साथ जोड़ा गया; और दृश्य कलाओं का क्षेत्र, जिसने इस काल में गौरव का शिखर प्राप्त किया। आधुनिक लेखक अकादमिक अनुशासनों के समूह के रूप में मानववाद और पुनर्जागरण की संपूर्ण संस्कृति के बीच संबंध के बारे में विपरीत विचार रखते हैं। बर्खार्ट और जॉर्ज वोइट पुनर्जागरण मानववाद को इटली की राजनीति और समाज के साथ जटिल रूप से जुड़ी परिघटना के रूप में देखते हैं। इनके विपरीत पी.ओ. क्रिस्टेलर और ऑगस्टिन रेनॉट जैसे विद्वानों ने मानववाद को सामाजिक संदर्भ से अलग कर दिया है। वे मानववादियों को अलग अकादमिक समूह मानते हैं जिनका सरोकार मुख्य रूप से पारंपरिक मानविकी विषयों से था। इसके बाद अंगरेजी के शब्द 'ह्यूमैनिज्म' की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'ह्यूमैनिटाज' से हुई। इसका प्रयोग सिसरो व अन्य समकालीन लेखकों द्वारा उन सांस्कृतिक मूल्यों के लिए किया जाता था जो उदारवादी शिक्षा से लिए गए थे। इटली के लोग इसका प्रयोग प्राचीन साहित्य और इससे जुड़ी कलाओं व अलंकार के शिक्षक या छात्र को परिभाषित करने के लिए करते थे। बाद में इसने शिक्षित अभिजात्य वर्ग के लोगों और बौद्धिकों एक अकादमिक आंदोलन का स्वरूप ले लिया, जो

ह्यूमैनिस्ट्स या मानववादी कहलाते थे।

एक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में मानववाद प्राचीन ग्रीक और रोम की पुस्तकों की पुनः खोज और उनके अध्ययन, उन पुस्तकों से गृहीत विचारों के संकलन और समंजन, पुनर्स्थापन और निरूपण से जुड़ गया। एक मानववादी की रुचि पुरातात्विक अध्ययन से लेकर लिखे हुए दस्तावेजों के भाषाशास्त्रीय अध्ययन तक, अतीत के अध्ययन से लेकर महाकाव्यों, अनुवादों और मूल पांडुलिपियों के भाष्यों तक में थी। उनके विषयों के दायरे में सृजनात्मक और दृश्य कलाओं, नीतिशास्त्र, दवा और गणित आदि आते थे। दरअसल मानववाद पश्चिमी यूरोप के सांस्कृतिक बदलाव का साधन बन गया।

प्राचीन साहित्य में रुचि न तो इटली तक सीमित थी न ही पुनर्जागरण के लोगों तक। निकोलस मन्न कहते हैं कि बारहवीं सदी की फ्रांसीसी संस्कृति में प्राचीन सामग्री की भरमार थी। यहां तक कि देशी साहित्य पर भी इसका प्रभाव था। सदी के अंत तक प्रकाशित अन्य छोटी रचनाओं के अलावा तीन प्रेमकथाएं *रोमां डी थिबेस*, *इनीस* और *रोमां डी ट्रॉय* प्रकाशित हो चुकी थीं, जो प्राचीन काल की पुस्तकों पर आधारित थीं। जॉन ऑफ सेलिस्बरी उस युग के प्रख्यात अंगरेजी विद्वान थे। उन्हें लैटिन साहित्य का भी कुछ ज्ञान था। उन्होंने वाग्मिता की प्रशंसा की और उदारवादी अध्ययनों का समर्थन किया। यही थीम्स बाद में इटली के मानववादियों के बीच बहुत लोकप्रिय हुई। फिर भी प्राचीन साहित्य को पुनर्जीवित करने के ये आरंभिक प्रयास न तो लोकप्रिय हुए न ही इनमें किसी आंदोलन का चरित्र था। वहां का सामंती और कृषक समाज किसी बौद्धिक आंदोलन के विकास में सबसे बड़ी बाधा था। इटली के राज्यों की बहुत बड़ी आबादी शहरी थी। इसमें शिक्षित आम आदमी, वकील और नौकरशाह शामिल थे। इसी वर्ग के लोगों ने मानववाद के विचारों को बढ़ावा दिया। जहां फ्रांसीसी पुराशास्त्रीय अध्ययन व्याकरण तक सीमित था, जो चौदहवीं सदी तक जारी रहा, वहीं इटली में शहरी समाज द्वारा इसके अनेक उपयोग किए गए। इटली के मानववादी प्राचीन साहित्य के अपने ज्ञान का उपयोग वाक्पटुता के स्तर को बढ़ाने के लिए करते थे। अलंकार उन्हें सार्वजनिक भाषणों की कला के रूप में, व्यावसायिक और सरकारी पत्रों के लिखने में, वकालत में और राजनय संबंधी बातचीत में काम आता था क्योंकि कई मानववादी शिक्षकों, सचिवों या शासकों और नगर परिषदों के चांसलरों, विदेशी दरबारों में राज्य के राजदूतों जैसे प्रभावशाली पदों पर आसीन थे या राज्य के मामलों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे। संभ्रांत लोगों के एक वर्ग के रूप में राज्य के मामलों में उनका बहुत बड़ा प्रभाव था। वे काफी हद तक धर्मनिरपेक्ष थे और उनमें से कई पादरी नहीं बल्कि यजमान थे।

चौदहवीं सदी में फ्लोरेंस में मानववादी शिक्षा के कई केंद्र थे जैसे फ्लोरेंस, पादुवा, विसेंजा और वेरोना। नेपल्स के दरबार में ग्रीक अध्ययनों का पुनरुत्थान हुआ। मानववादी गतिविधियों का एक और केंद्र फ्रांस में था। इसका इतालवी मानववाद पर बहुत प्रभाव था। यह केंद्र एविगॉन स्थित पेपल क्यूरिया था। पोप की तथाकथित 'बेबिलोनियन कैद' की

अवधि के दौरान, फ्रांसीसी सुरक्षा में पोप की राजधानी को अस्थायी तौर पर एविगॉन ले जाया गया था। नतीजा यह हुआ कि एविगॉन एक महत्वपूर्ण राजनयिक और सांस्कृतिक केंद्र बन गया। पोप ने न केवल विद्वानों और लेखकों को संरक्षण प्रदान किया बल्कि एक महत्वपूर्ण पुस्तकालय बनवाया जिसमें बहुत सारी पुराशास्त्रीय पुस्तकें और पांडुलिपियां थीं। इस दरबार से उत्पन्न सबसे प्रख्यात बुद्धिजीवी फ्रैंसिस्को पेट्रार्क (1304-74) थे। अकसर उन्हें मानववाद का जनक कहा जाता है। उनके पिता चाहते थे कि वह यूनिवर्सिटी ऑफ बोलोना में कानून का अध्ययन करें। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद पेट्रार्क ने साहित्य का अध्ययन किया। वह उत्कृष्ट विद्वान और मौलिक लेखक थे। वह दांते अलिघियरी (1265-1321) के बहुत बड़े प्रशंसक थे। दांते एक महान कवि और विद्वान थे। उन्होंने अपनी असाधारण पुस्तक *डिवाइन कामेडी* की रचना की। यह पुस्तक दग्धता और मौजूदा समाज की सूक्ष्म आलोचना से परिपूर्ण थी। दांते ने मध्यकाल से पुनर्जागरण काल तक साहित्य में संक्रांति का प्रतिनिधित्व किया। हालांकि उनका जीवन दर्शन धर्म से जुड़ा था, लेकिन उनका लेखन मानव जीवन के सभी पहलुओं में उनकी गहरी रुचि को दरशाता है। यद्यपि दांते विलक्षण प्रतिभा के विद्वान थे जो लैटिन, फ्रेंच और जर्मन में लिख सकते थे, फिर भी उन्होंने अपने लेखन के लिए इटैलियन चुना और इससे बाद के मानववादी जगत के सांस्कृतिक क्षितिज का विस्तार किया। लेकिन वह पेट्रार्क ही थे जिन्होंने प्राचीन लेखकों के प्रति गहरी रुचि पैदा की। उन्होंने प्राचीन रचनाओं से सीखकर अलंकार की कला में सफलतापूर्वक महारत हासिल की और कविता के प्रति लगाव विकसित किया। उनके लेखन पर इसका गहरा प्रभाव था। पेट्रार्क ने धर्मनिरपेक्ष जगत को बढ़ावा दिया। एक राजनीतिज्ञ और राजनय के रूप में वह राजनीतिक जीवन में सक्रिय रहे।

पेट्रार्क ने अपने आरंभिक जीवन का अधिकांश भाग एविगॉन में बिताया। यहां उनका परिचय कार्यालय (क्यूरिया) की सांस्कृतिक और बौद्धिक दुनिया से हुआ। उन्हें अनेक पांडुलिपियां मिलीं। उन्होंने पांडुलिपियों को सफलतापूर्वक व्यवस्थित करके लिवी की *हिस्टरी ऑफ रोम* पुस्तक का पुनर्निर्माण किया। पुराशास्त्रीय पाठों और पांडुलिपियों की खोज करने की पेट्रार्क की धुन ने बाद की पीढ़ी के विद्वानों को प्रभावित किया। प्राचीन पाठों का अध्ययन सभी मानववादियों का मुख्य कार्य हो गया। उनके इस शौक ने उनके मित्र और शिष्य जियोवानी बोकाचियो को भी प्रभावित किया। पेट्रार्क को उनकी देशी भाषा की कविताओं और महान सोनेट्स (कविता के एक नए रूप) *कैंजोनियरे* के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। उनकी कविताओं में रोम के कवियों के प्रभाव की झलक मिलती है। फिर भी एक मानववादी के रूप में उनकी ख्याति उनकी लैटिन की रचनाओं पर निर्भर है। शिक्षा और पुराशास्त्रीय अध्ययनों के प्रति उनमें असीम उत्साह और चाह थी। वह समयुगीन समाज के बहुत बड़े आलोचक और शहरी हिंसा और युद्ध से क्षुब्ध थे। उन्होंने ही 'अंधकार युग' (डार्क एजेज) की अभिव्यक्ति को लोकप्रिय बनाया जो प्राचीन काल को उनके अपने

समय से अलग करता है। सुधार के साधन के रूप में प्राचीन साहित्य के महत्व को उजागर करके उन्होंने अन्यों को रास्ता दिखाया। उन्होंने यह बताया कि प्राचीन साहित्य का अध्ययन एक साध्य का साधन है न कि अपने आप में एक साध्य। उनके सुधार कार्यक्रमों में पहले प्राचीन संस्कृति का पुनर्निर्माण करना था। उसके बाद उन्हें सावधानीपूर्वक समझना और प्राचीन विरासत का अनुकरण करना था। अंततः प्राचीन मूल्यों और शैलियों का महज अनुकरण करने के बजाए उन्होंने कई परिवर्तनों और सुधारों का सुझाव दिया। अंत तक पेट्रार्क कई भावी मानववादियों के समान एक ईसाई बने रहे लेकिन वह मानसिक रूप से समयुगीन ईसाइयत और प्राचीन गैर-ईसाई धर्म के बीच बंटे हुए थे।

पेट्रार्क के सुधार कार्यक्रम ने इतालवी बौद्धिक जीवन को बहुत प्रेरित किया और इसके अनंतर बदलाव में योगदान दिया। साहित्य, दर्शन, राजनीति और शिक्षा पर विचार-विमर्श में शामिल कई युवा विद्वान उनकी ओर आकर्षित हुए। प्राचीन जगत की ऐतिहासिक और साहित्यिक पड़ताल की उनकी पद्धति मानववादियों द्वारा भविष्य में किए जाने वाले अध्ययनों का आधार बन गई। फ्लोरेंस के धनाढ्य अल्पतंत्र समर्थकों के बीच उनका कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हुआ। मध्य युग के पांडित्यपूर्ण दर्शन की भर्त्सना करने वाले वह पहले व्यक्ति थे क्योंकि उनका दर्शन तर्क के सख्त अनुप्रयोग पर आधारित था और अत्यधिक तकनीकी प्रकृति का था जिसे शायद ही आनंद लेकर पढ़ा जा सके। पेट्रार्क के नेतृत्व में मानववादियों ने अलंकार या भाषा की सुंदरता को महत्व दिया। इसे तार्किक प्रमाण से अधिक महत्वपूर्ण समझा जाता था। मानववादियों की अगली पीढ़ी भी वितंडावाद पर हमले करती रही। इससे कुछ इतिहासकार यह मानने लगे हैं कि मानववाद वितंडावाद का प्रतिसिद्धांत है। फ्रेडरिक बी आर्ट्ज के अनुसार पेट्रार्क की सबसे बड़ी कमी उनके भाव की पारंपरिकता है—स्वप्न, उल्लास और काव्यात्मक उदासी के भावों में एकरूपता। तथापि उनके काव्यों ने एक पैटर्न का निर्माण किया और कई कवि उनके शब्द, अलंकार और भावों के विश्लेषण की पद्धतियां उनसे ग्रहण करते रहे।

जियोवानी बोकाचियो (1313-75) एक अन्य मानववादी थे। वह अपनी पुस्तक *डेकामेरॉन* के लिए जाने जाते थे। इसमें कोई सौ से अधिक कहानियां थीं। प्राचीन लैटिन पांडुलिपियों की बोकाचियो की खोज दांते और पेट्रार्क से भी आगे निकल गई। इसकी वजह थी उनका ग्रीक भाषा का ज्ञान। उन्होंने शैली में, लैटिन विद्वत्ता में और देशी गद्य और पद्य में नए आविष्कार किए। उन्होंने प्राचीन मिथक, भूगोल और इतिहास पर कुछ उत्कृष्ट पुस्तकें लिखीं। लेकिन उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य गैर-ईसाई देवताओं का वंशक्रम तैयार करना था। उन्होंने विद्वानों, कलाकारों और संगीतकारों को एक नई अंतर्दृष्टि दी। पेट्रार्क के समान ही वह भी मानते थे कि कविता एक साधन है जिसके जरिए सचाई को सांकेतिक रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। वह एक अच्छे कलाकार थे। उनकी वाग्मिता विलक्षण थी। बारीकियों को परखने के लिए बहुत तेज नजरें थीं। एक मानववादी के रूप में

बोकाचियो की पुस्तक ने साहित्यिक और कलात्मक निरूपण के कई नए क्षेत्र दिखलाए। उनकी पुस्तक को व्यापक पठनीयता मिली और बाद की पीढ़ी के लेखकों और कवियों पर उनका काफी प्रभाव पड़ा।

पेट्रार्क द्वारा प्रतिपादित और फ्लोरेंस के चांसलर कोलुसियो सालुटाटी (1331-1406) सहित बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा विकसित मानववादी कार्यक्रम ने नागरिक मानववाद (सिविक ह्यूमैनिज्म) की विचारधारा को जन्म दिया। नागरिक मानववाद के विकास में सिसरो ने भी प्रेरणा-स्रोत का काम किया। ये लोग मानते थे कि अपने राज्य के लिए सक्रिय जीवन बिताना अनिवार्य है और धन-दौलत सहित सब कुछ तभी काम का है जब यह कार्य की शक्ति में वृद्धि करता हो। नागरिक मामलों में सक्रिय जीवन बौद्धिक क्षमता के विकास में बाधा नहीं करता बल्कि इसे प्रोत्साहित करता है। उनका तर्क था कि राज्य के मामलों में भागीदारी से कोई व्यक्ति बौद्धिक और नैतिक दोनों रूप में परिपक्व होता है। नागरिक मानववादी नगर जीवन के पुरातन मूल्यों को दरशाते हुए पत्र, भाषण और इतिहास लिखते थे। सिसरो के समान नागरिक मानववादी मानते थे कि नैतिक मूल्य सार्वजनिक जीवन के भीतर छिपे होते हैं। सार्वजनिक जीवन में भागीदारी नैतिक कार्य माना जाता था। नागरिक मानववादी सार्वजनिक शुचिता को बढ़ावा देने के लिए लोगों को तैयार करना और गणराज्यीय विशिष्टताओं को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार और प्रशासन को चलाने में लागों को समर्थ बनाना अपना काम समझते थे। लियोनार्दो ब्रुनी (1370-1444) ने अपने लेखनों में रोम गणराज्य के इतिहास का पुनर्निर्माण किया। उन्होंने यह सुझाव दिया कि रोमन राज्यों की खूबियों को फ्लोरेंस में भी अपनाया जाना चाहिए। यद्यपि नागरिक मानववाद पहले पहल फ्लोरेंस में उभरा लेकिन शीघ्र ही इटली के अन्य राज्यों में फैल गया। यह शहरी समाज के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता था। इस आंदोलन ने मानववादियों की सरकार की गतिविधियों में भागीदारी बढ़ा दी। वे अलंकार के ज्ञान का उपयोग राज्य की सेवा में करने लगे जिसे उन्होंने प्राचीन जगत से प्राप्त किया था। सबसे बड़े आलंकारिक साहित्यकार सफल राजनय बन गए।

लगभग 1490 ई. से 1530 ई. तक पुनर्जागरण के मध्य अवधि के दौरान कला के समान ही साहित्य के प्राचीन आदर्शों में रुचि बढ़ी। प्लाटस, टेरेंस (हास्य नाटकों), सेनेका (त्रासद नाटकों) और होरेस (व्यंग्य) की कुछ प्राचीन रचनाओं की प्रतिलिपियां तैयार की गईं और मानववादियों ने उनका रूपांतरण किया। पेट्रार्क के बाद लुडोविको एरियोस्टो (1474-1533) सबसे प्रतिभाशाली साहित्यकार बनकर उभरे। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन *हाउस ऑफ एस्टे* की सेवा में बिताया। वह लैटिन और देशी भाषा दोनों में ही कविताएं लिखते थे। उनका लेखन पूर्णता दरशाता है। उन्हें न केवल चरित्र-चित्रण में बल्कि कथानक की खोज और उनके संचालन में महारत थी। उनके व्यंग्यों में शालीनता, लालित्य और सरलता झलकती है। इन पर होरेस की शैली का प्रभाव दिखता है। एरियोस्टो

को दरबार की नाट्यशाला के लिए हास्य नाटक लिखने का काम दिया गया था। उनकी सबसे बड़ी रचना *ओरलैंडो फ्यूरियोसो* थी। मानव व्यवहार में उनकी गहरी अंतर्दृष्टि थी। इस काल के अन्य महान गद्यकार काऊंट कास्टिग्लियोन (1478-1529) थे। उनके मित्र रफेल द्वारा बनाई गई उनकी तसवीर में वह एक शहरी कुलीन दिखते हैं। उनकी पुस्तक *बुक ऑफ दि कोर्टियर* शासक वर्गों में काफी लोकप्रिय हुई। वह लैटिन और इटैलियन दोनों भाषाओं में लिखते थे।

मानववादी बड़ी संख्या में राज्य की सेवा में अपने विशिष्ट गुणों को प्रदर्शित करते थे। वे अपने आधिकारिक पदों या लेखनों के जरिए महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना चाहते थे। उनकी रुचियां भी अलग-अलग तरह की थीं। जैसा कि पी.ओ. क्रिस्टेलर कहते हैं कि आरंभिक मानववादियों का कोई एक सुस्पष्ट दर्शन या जीवन के प्रति दृष्टिकोण नहीं था। लैटिन और ग्रीक क्लासिक्स के प्रति जो उनका उत्साह था और साहित्य और नैतिकता के लिए उनमें जो मूल्य उन्हें दिखता था, वही उनकी एकता का आभास देता था। उनके अलग-अलग निष्कर्षों के बावजूद वे मनुष्य, उसकी भावनाओं और क्षमता की विलक्षणता पर बल देकर लेखन के लालित्य, बोली और नैतिकता पर जोर देते थे। वे मानते थे कि रोमवासी जानते हैं कि किसी भी चीज को कैसे अभिव्यक्त किया जाता है। कई मानववादी लेखकों ने लैटिन तरीका अपनाया क्योंकि इसकी अभिव्यक्ति बहुत खूबसूरत थी। वहीं ग्रीकों का अधिक जोर शैली पर न होकर विचारों पर था।

सौंदर्य के प्रति प्रेम मानववाद की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता थी। मानववादी संस्कृति का एक आकर्षक पहलू टेबल मैनर्स और अंदाज पर जोर देना था। इसे आकार, सजावट और रंग-रूप से अधिक महत्वपूर्ण माना जाता था। *ह्यूमैनिटाज* शब्द का प्रयोग केवल मानवीय दयालुता के लिए ही नहीं बल्कि परिष्कृत रुचि, शिक्षा और मानसिक विकास के लिए भी किया जाता था। दरअसल मानववाद उल्लेखनीय रूप से विषम आंदोलन था जो क्षेत्र दर क्षेत्र अलग-अलग था। नेपल्स, डर्बिनो, मांटूवा और मिलान में इसका रंग दरबारी था। रोम में प्राचीन भग्नावशेष मानववादियों के लिए प्रेरणा के स्रोत थे लेकिन पोप लियो दशम के समय तक ग्रीक में इनकी नाममात्र की रुचि थी। इसके पश्चात मानववाद पोप के चर्च की ओर अग्रसर हुआ। फ्लोरेंस का हाऊस ऑफ मेदिची मुख्य संरक्षण प्रदान करता था। यहां के शासक वर्ग भी इस आंदोलन में बहुत अधिक सक्रिय थे। वेनिस में ग्रीक के पक्ष में एक सशक्त पूर्वाग्रह था और मानविकी का अध्ययन कुलीन वर्ग के कुछ सदस्यों और विद्वानों के एक समूह तक सीमित था। उनमें से कई स्कूल में अध्यापन में लगे थे या प्रकाशन से जुड़े विद्वान लोग थे। मानववाद के भीतर कई विभाजन थे जैसे लैटिन के समर्थक और इटैलियन भाषा के समर्थक, प्राचीन काल के समर्थक अथवा आधुनिक समाज के समर्थक। प्राचीन काल के समर्थकों के भीतर भी सिसरो के अनुयायियों और सिसरो-विरोधियों के बीच यानी अनुकरण करने वालों और पुनर्व्याख्या करने वालों के बीच

विरोधाभास था। इतालवी मानववाद की प्रमुख विशेषताएं थीं—व्यक्तिवाद और मनुष्य की मान-मर्यादा, धर्मनिरपेक्षवाद, लैटिन और ग्रीक का पुनः उत्थान, देशी साहित्य का संवर्द्धन, इतिहास का अध्ययन और दर्शन के प्रति एक नया दृष्टिकोण।

मनुष्य की मान-मर्यादा

ऐसा प्रतीत होता है कि इतालवी मानववाद का जोर मनुष्य की मान-मर्यादा और विश्व में उसके विशिष्ट स्थान पर था। यह अलबेर्ती जैसे विद्वानों के लेखनों और साहित्य में ही नहीं, कलाकृतियों में भी परिलक्षित होता है। उनमें से कई मनुष्य और ब्रह्मांड के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध पर जोर देते थे। जैसा कि अलबेर्ती ने कहा, 'सौंदर्य सभी भागों के समन्वय का नाम है।' मनुष्य को ईश्वर की श्रेष्ठ कृति माना जाता था। फोकस मनुष्य की विलक्षणता और उसकी क्षमता पर था। वर्टुवियस के अनुसार एक वृत एक हृष्ट-पुष्ट मनुष्य, जिसकी बाहें खुली हों और पैर फैले हों, को समा सकता है। इसलिए ईश्वर की नजरों में एक संपूर्ण व्यक्ति ईश्वर के साथ संबंध में सूक्ष्म संसार थे और वह सूक्ष्म संसार ब्रह्मांड थे। अलबेर्ती के अनुसार चर्च ब्रह्मांड की दैवी व्यवस्था को दरशाता थे जो इसकी सर्वश्रेष्ठ कृति यानी मनुष्य को घेरे हुए थे। मानववादी लेखकों ने मनुष्य और जिस संसार में वह रहता है, उसे सुव्यवस्थित ब्रह्मांड के नए आदर्श से जोड़ते थे। वे मनुष्य की मान-मर्यादा पर बहुत जोर देते थे। इसका उद्देश्य व्यक्ति को अपनी क्षमता का अहसास कराना था।

व्यक्तिवाद और धर्मनिरपेक्षवाद मानववाद के अन्य महत्वपूर्ण पहलू थे। व्यक्तिगत क्षमता पर बल दिए जाने से नए सामाजिक विचारों का जन्म हुआ। निकोलस कुसैनस (1410-64) जैसे अनेक मानववादी मानते थे कि ईश्वर ने न केवल ब्रह्मांड की रचना की है बल्कि वह इसे स्थायी तौर पर वहन भी करता है। हर दृश्य चीज में उस रचनाकार ने अपने चिह्न छोड़े हैं। ईश्वर को पूरी तरह समझने के लिए मनुष्य को बहुत कठिन श्रम करना होगा क्योंकि मनुष्य में ही इन चिह्नों को पहचानने की क्षमता है। अतः कुछ मानववादियों के लिए प्रकृति का अध्ययन ईश्वर के 'बिंबों' की खोज की दिशा में था। बाद में इस खोज का केंद्रबिंदु मनुष्य हो गया क्योंकि उसे पृथ्वी पर ईश्वर के सृजन का सर्वोच्च रूप माना जाता था। जैसा कि हेनरिच डेकर कहते हैं कि विश्व को धार्मिक दृष्टि से समझने के प्रयास और शिक्षा की दिशा में मानववादियों की कोशिशें महज दो समानांतर प्रवृत्तियां नहीं थीं; वे मिलकर एक हो गईं। यह तथ्य कि मानवजाति के रक्षक का प्रादुर्भाव मनुष्य के रूप में हुआ और वह धार्मिक विश्वास का केंद्र था, मानववादियों के विचारों के बिलकुल अनुरूप था। धर्मनिरपेक्षवाद का मूल सरोकार शाश्वत और आध्यात्मिक विचारों के बजाए भौतिक जगत से था। अधिकांश इतालवी मानववादी और उनके संरक्षक वैराग्य-विरोधी और पांडित्य-विरोधी थे। कुछ मामलों में मानववादी संशयवादी थे। उस समय की अनेक

रचनाएं स्पष्ट दरशाती हैं कि उनमें अभी भी बहुत जबरदस्त धार्मिक भावनाएं थीं। फिर भी संपूर्ण श्रेय ईश्वर को देने के बजाए मानववादी मानते थे कि ईश्वर ने ब्रह्मांड के लिए निश्चित व्यवस्था दी है और अपने अच्छे और बुरे कामों के लिए इनसान खुद जिम्मेदार है। अतः मानव इच्छा और मानवीय नैतिकता ईश्वर द्वारा नहीं बल्कि मनुष्य द्वारा नियंत्रित हैं। वे मानते थे कि बिलकुल व्यक्तिवादी मठवासी जीवन की तुलना में सक्रिय सार्वजनिक जीवन दूसरों को अधिक लाभ पहुंचाता है और इसकी प्रशंसा भी होती है। मानववादी एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहते थे, जिसमें मनुष्य की क्षमता पूर्ण विकसित हो सके और उसकी मानसिक शक्ति अपनी संभावनाओं की ऊंचाई को प्राप्त कर सकें।

प्राचीनता का पुनरुत्थान

मानववादियों ने पुनः प्राप्त और पुनः स्थापित प्राचीन साहित्य को शुद्धतावादी रूप में उपलब्ध कराया। इसलिए उनका पहला काम उन प्राचीन पांडुलिपियों को पुनः प्राप्त करना था जिन्हें मध्ययुगीन विद्वानों ने नजरअंदाज कर दिया था। उन्होंने एकाग्रचित्त होकर प्राचीन पांडुलिपियों की खोज शुरू की। इस काम में उनके संरक्षकों ने उन्हें वित्तीय संसाधन मुहैया कराए। माना जाता है कि निकालाओ निकोली ने पुस्तकों का संग्रह तैयार करने के लिए अपने फार्म्स और पैतृक संपत्ति बेच दी। पांडुलिपियां प्राप्त करने के अलावा मानववादी अपने संरक्षकों के लिए इनकी प्रतियां तैयार करते, इनका संपादन करते या इनकी प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए उनकी टिप्पणियां लिखते। लोरेंजोवाला (1407-57) मध्यकालीन लैटिन को परिशुद्ध करने के लिए प्राचीन पुस्तकों की साहित्यिक आलोचना लिखते थे। ब्रैकियोलिनी (1380-1459) ने कई वर्षों तक पोप के सचिव के रूप में काम किया था। वह प्राचीन पांडुलिपियों को बड़ी उत्कंठा से संग्रह करते थे। उनमें प्राचीन दस्तावेजों को प्राप्त करने की असाधारण धुन थी। इन मौलिक दस्तावेजों को प्राप्त करने की विधि इसकी प्रतिलिपि तैयार करने से लेकर खरीदने और यहां तक कि इनकी चोरी करने तक थी। एक लंबी यात्रा के बाद ग्वारिनो डी वेरेनो कुस्तुनतुनिया से 50 से भी अधिक पांडुलिपियां लेकर लौटे। 1422 में जियोवानी ऑरिस्पा 238 पांडुलिपियां लेकर आए। प्राचीन पांडुलिपियों को रखना मानववादियों के लिए हैसियत का प्रतीक बन गया।

ग्रीक का पुनरुत्थान

मानववादियों में लैटिन की पुस्तकों के प्रति बहुत अधिक आकर्षण था। ग्रीक अध्ययन में उनकी रुचि बाद में जगी। माना जाता है कि पेट्रार्क ग्रीक साहित्य के प्रति आकर्षित थे। उनके पास *इलियड* की प्रति थी, लेकिन उन्होंने ग्रीक भाषा नहीं सीखी। वह तो मैनुएल क्राइसोलोरास (1350-1415) थे जो कुस्तुनतुनिया से 1397 में फ्लोरेंसे आए और इटली में

ग्रीक अध्ययन की शुरुआत की। ग्वारिनो ऑफ वेरोना एक अन्य प्रख्यात विद्वान थे जिन्होंने ग्रीक अध्ययन को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया। कई विद्वानों का तर्क था कि पुनर्जागरण प्लेटोवाद का युग था जबकि अरस्तु का अध्ययन वितंडावाद के काल तक सीमित था, हालांकि यह मानना गलत होगा कि ग्रीक का अध्ययन प्लेटो की पुस्तकों तक सीमित था। यह सच है कि मानववादी प्लेटो के अध्ययन में मूल पुस्तकों के बहुत बड़े प्रशंसक थे लेकिन उनकी रुचि अरस्तु के विचारों में भी बनी रही। लैटिन पाठों की खोज महत्वपूर्ण थी लेकिन प्राचीन ग्रीक अध्ययनों का आरंभ होना मानववादियों की वास्तविक कामयाबी थी। उन्हें कई बाइजैंटाइन विद्वानों से इसमें बहुत सहायता मिली जो पंद्रहवीं सदी के दौरान इटली में रहने के लिए आए थे। ग्रीक पाठ्यपुस्तकों के इन विशेषज्ञों ने प्लेटो, सोफोक्लीज और यूरीपडीज के थूसीडाइड्स और अन्य लेखकों के लेखनों सहित ग्रीक अध्ययनों में तेजी लाई। मार्सिलियो फिचीनो (1433-1499) और जियोवानी मिरांदालो (1463-1494) जैसे मशहूर मानववादी बुद्धिजीवियों ने फ्लोरेंस में प्लेटोनिक अकादमी की स्थापना करने में मदद की। इसके बाद इटली के अन्य भागों में इस प्रकार की कई अकादमी खुल गई। इन संस्थाओं के सदस्य विद्वान होते थे जो प्लेटो की पुस्तकों का अध्ययन और निरूपण करते थे। वे भोजों के आयोजन के जरिए प्लेटो का जन्मदिवस मनाकर अपने नायक को श्रद्धांजलि देते, प्लेटो के राजनीतिक विचारों को उजागर करते हुए भाषण देते और उनकी रचना का अनुवाद करते थे। ग्रीक दर्शनिकों के राजनीतिक विचारों का कुछ मानववादी विद्वानों पर बहुत अधिक प्रभाव था। सिसरो के माध्यम से मानववादियों ने प्राचीन ग्रीक साहित्य में बुद्धिमत्ता का आदर्श पाया। ग्रीक अध्ययन सामूहिक और व्यक्तिगत जीवन के लिए महत्वपूर्ण था। ठीक इसी प्रकार ग्रीक नीतिशास्त्र में कई सुस्पष्ट मान्यताएं थीं। ग्रीक अनुभव से नियमों के अधिष्ठापन से मानवीय जीवन की अव्यवस्थित घटनाओं को व्यवस्थित करने का साधन मिला था और इससे राजनीतिक थ्योरी और अंततः समाजशास्त्र का मार्ग प्रशस्त हुआ। ग्रीक दर्शन के लिए बढ़ता उत्साह प्लेटो और अरस्तु तक ही सीमित नहीं था। इनके अलावा स्टोइकस (आत्मसंयमी), इपीक्युरियंस (भोगवादी), इक्लेक्टिक (विभिन्नदर्शनग्राही) जैसे दर्शनवाद विकसित हुए। सिसरो एक और प्रख्यात विद्वान थे जिनका मानववादी लेखनों में विशेष स्थान था।

पंद्रहवीं सदी में फ्लोरेंस में विकसित प्लेटोनिक अकादमियों ने सार्वजनिक जीवन में विचारों और गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन संस्थाओं ने मेदिची परिवार के स्थान को वैध बनाने में मदद की और सरकार की बढ़ती हुई पेशेवर व्यावसायिकता को औचित्यपूर्ण बताया। इन्होंने शिक्षा और ज्ञान की खोज पर भी बल दिया। इन्हें यह आशा थी कि साहित्यिक अध्ययन से दर्शन का ज्ञान होगा और अनंतर मन का परिवर्तन होगा। मार्सिलियो फिचीनो ने मनुष्य की गरिमा को उजागर करते हुए ईसाई परंपराओं के संदर्भ में प्लेटो की पुस्तकों का लैटिन में अनुवाद किया। उनके अनुसार वैज्ञानिक प्रेक्षण और तर्क

उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना सच्ची बुद्धिमत्ता और अनुभव। प्रेम और चिंतन से मानवीय मान-मर्यादा प्राप्त होती है। उनके अनुसार छोटी-से-छोटी चीज से लेकर ईश्वर तक हर वस्तु का एक पदसोपान में स्थान है। इस पदसोपान में मनुष्य की आत्मा का स्थान मध्य में है जो भौतिक वस्तु को ईश्वर से जोड़ता है। जीवों के इस पदसोपान के विचार को पिचो ने और भी विस्तार दिया। *हर्मेटिकम* परंपरा का निर्माण करने वाले कई अन्य मानववादी इन विचारों से सहमत थे। हर्मेटिक्स के अनूदित पाठ मस्तिष्क, भौतिक पदार्थ और खगोलीय जगत के बीच परस्पर प्रभाव दरशाते हैं। इसने हर्मेटिक जादू (पहली सदी की चमत्कारी पुस्तकों पर आधारित) ज्योतिष और रसायन तथा प्राकृतिक जगत और ब्रह्मांड के बीच परस्पर संबंध के बारे में कुछ विवादास्पद विचारों को जन्म दिया। दुनिया के कुछ भागों में ये विचार आज भी जीवित हैं। विज्ञान के ग्रीक और अरबी लेखकों के अध्ययन ने एक ओर स्वतंत्र गणितीय और अनुभवजन्य तार्किकता में (इटली में मानववादी ज्ञान ने निकोलस कोपरनिकस के सौर्य प्रणाली की प्रकृति के बारे में क्रांतिकारी विचारों के निर्माण में सहायता की) योगदान दिया लेकिन दूसरी ओर इसने वैज्ञानिक प्रगति में बाधक रहस्यमयी और चत्मकारिक परंपराओं को भी मजबूत किया।

स्थानीय भाषा में देशी साहित्य

मध्य युग में देशी भाषा के साहित्य का विकास हो चुका था लेकिन यह अभी सीमित रूप में ही था। मानववादी प्राचीन लैटिन पर जोर देते थे। इससे विद्वानों, धर्माचार्यों और वकीलों द्वारा इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। लैटिन साहित्य का देशी शैली पर भी प्रभाव था। कुछ हद तक इसने स्थानीय भाषा का उत्थान और परिष्कार भी किया लेकिन साथ ही इसने ऐसे लेखन का विकास किया जो आवश्यकता से अधिक आत्म-सजग, पौराणिक तर्ज की बहुत अधिक नकल, आलंकारिक और प्रायः कृत्रिम था। फिर भी देशी साहित्य के संवर्द्धन में मानववादियों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। वह पेट्रार्क ही थे जिन्होंने लैटिन और देशी दोनों भाषाओं में अपनी रचनाएं की। उनकी कुछ अपूर्ण और कम प्रसिद्ध पुस्तकों जैसे *अफ्रीका* और *द सेकंड प्यूनिक वार* में यूरोपीय पुनर्जागरण साहित्य के आरंभ के साथ-साथ इटैलियन के आम जन की भाषा के रूप में उभरने के संकेत थे। वह इटैलियन में, मुख्य रूप से *टस्कन* भाषा में लिखते थे जिसमें स्थानीय भाषा के सभी चिह्न गायब हो चुके थे। पेट्रार्क की कविताएं उनके प्रशंसकों के लिए सुग्राह्य थीं क्योंकि वह अपने विचारों को टस्कन भाषा में प्रस्तुत करते थे। फ्लोरेंस के समाज के उच्च और मध्यम वर्ग के लोगों में कलात्मक पद्य और गद्य के परिष्कृत रूप ने देशी साहित्य में योगदान दिया। पेट्रार्क के बाद ग्रीक और लैटिन विद्वत्ता का समय था जो करीब एक सदी तक चला। पंद्रहवीं सदी के अंत में फ्लोरेंस के अकादमिक हलके में टस्कन भाषा के प्रति

जबरदस्त रुचि विकसित हुई जो लोरेंजो और मेदिची और उसके दरबार के प्रभाव में इटैलियन भाषा के रूप में परिवर्तित हो गई। इसके व्याकरणों, शब्दकोशों और हस्तपुस्तिकाओं के निर्माण के साथ ही प्राचीन साहित्य और सभ्यता के ज्ञान का प्रसार हुआ। पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में बहुत ही उच्च कोटि का इटैलियन देशी साहित्य उभर कर सामने आया।

मानववाद और इतिहास

प्राचीन जगत की खोज में पंद्रहवीं सदी के मध्य से इतिहास और जीवनियां और स्तुतिगान लिखे गए और मुद्रित रूप में वितरित किए गए। मानववादियों ने प्राचीन, मध्य और आधुनिक युग में इतिहास के काल विभाजन की अवधारणा शुरू की। साहित्यिक विधा में मानववादियों ने इतिहास लेखन के रूप में महत्वपूर्ण योगदान किया। आगस्टाइन और ओरोसियस परंपरा में सार्वभौम इतिहास की अवधारणा को मानववादियों ने अस्वीकार कर दिया। बनिस्बत इसके उन्होंने इतिहास में स्वाभाविक कारण-कार्य संबंध के विचार को लाया और स्रोत सामग्री के सही उपयोग का मार्ग दरशाया। इतालवी मानववादियों ने आधुनिक ऐतिहासिक छात्रवृत्ति की स्थापना की। उन्होंने उदार शिक्षा का विचार प्रस्तुत किया और उसे प्रचलन में लाए और पुरालेखशास्त्र और मुद्राशास्त्र जैसे कुछ नए विषयों की स्थापना की। मानववादियों ने इतालवी नगरों के इतिहास दोबारा लिखने में अहम भूमिका निभाई। यह कालक्रम-विज्ञान के नए बोध और उस धर्मनिरपेक्ष नजरिए पर आधारित था जिसमें इतिहास लेखन को अब दैवी क्षेत्र की प्रक्रिया नहीं माना जाता था। उनके आदर्श ग्रीक और रोमन इतिहासकार थे, खास तौर पर लिवी। प्राचीन इतिहासकारों की मुख्य कमजोरी यह थी कि वे खुद को मुख्य रूप से राजनीतिक घटनाओं तक सीमित कर लेते थे और आर्थिक पहलुओं की काफी हद तक अनदेखी करते थे। इतिहासकारों के रूप में उनकी प्रवृत्ति मुख्य ऐतिहासिक पात्रों के चरित्र को अति सरल बनाने की थी। मानववादियों में ब्रुनी की *हिस्टरी ऑफ दि फ्लोरेंटाइन पीपुल* और ब्लौंडस की *हिस्टरी सिंस दि डिक्लाइन ऑफ दि रोमंस* इतिहास की कुछ सबसे आरंभिक पुस्तकें थीं। ब्रुनी ने इतिहास के प्रति उपयोगितावादी दृष्टिकोण अपनाया। पुनर्जागरण के विद्वानों के बीच आधुनिक इतिहास लेखन के आरंभ को लेकर दो विचार हैं। कुछ लेखकों (उदाहरण के लिए हैंस बैरन) का तर्क है कि आधुनिक इतिहास का लेखन 1400 ई. के करीब ब्रुनी से आरंभ हुआ। जबकि दूसरा विचार (एफ गिलबर्ट का) यह है कि यह सोलहवीं सदी तक आरंभ नहीं हुआ था। दूसरे विचार के अनुसार इतिहास के बारे में लेखन निकोलो मैकियावेली (1469-1527) और फ्रैंसिस्को ग्विसियार्दिनी (1483-1540) के लेखनों से आरंभ हुए। ग्विसियार्दिनी ने राजनीतिक विश्लेषण में गहरी रुचि दरशाई और फ्लोरेंस पर 1494 के युद्धों के परिणामों की पड़ताल की। इतिहास के अध्ययन के कारण ही लोरेंजो वाल्ला ने उस दस्तावेज की

प्रामाणिकता को अस्वीकार कर दिया जिसके आधार पर पोप की पीढ़ी-दर-पीढ़ी ने मध्य इटली में अपने राजनीतिक आधिपत्य के अधिकार का बचाव किया था। वाल्ला का तर्क था कि यह दस्तावेज असली नहीं बल्कि नकली था।

मानववादी शिक्षा

मानववादी शिक्षा पद्धति मनुष्य के बारे में नए दृष्टिकोण के प्रसार का महत्वपूर्ण साधन बनी। पीटर बर्क के अनुसार इस शिक्षा पद्धति में अलंकार पर जोर दिया जाता था क्योंकि इसे राजनीतिक जीवन के लिए एक अच्छा प्रशिक्षण माना जाता था। पुनर्जागरण मानववाद ने शैक्षिक पाठ्यक्रम में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। इसका न केवल इटली में बल्कि यूरोप के अन्य भागों में भी प्रभाव पड़ा। मानववादी प्राचीन साहित्य खास तौर पर प्राचीन ग्रीकों और रोमनों की शैली और विषय-वस्तु को शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ रूप मानते थे। यद्यपि मानववाद एक संभ्रांत वर्गीय आंदोलन के रूप में शुरू हुआ, यह पुराशास्त्रीय शिक्षण माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा का अंग बन गया। इसने इटली, फ्रांस, इंगलैंड और जर्मनी की मध्यमवर्गीय और उच्च मध्यम वर्गीय पुरुष आबादी को प्रभावित किया। अनेक निजी, म्युनिसिपल और प्रादेशिक स्कूलों ने मानववादी शैक्षणिक कार्यक्रम अपनाए। मानववादी शिक्षकों ने इतालवी नगरों और दरबारों में स्कूलों का निर्माण करवाया। इनमें छात्रों को लैटिन, व्याकरण, अलंकार, रोम का इतिहास, राजनीतिक दर्शन, ग्रीक साहित्य और दर्शन पढ़ाए जाते थे। मानववादी प्राचीन साहित्य (क्लासिक्स) के अध्ययन को राजनीतिक क्षेत्र में राजकुमार के सलाहकारों या राजदूतों के रूप में काम करने के लिए शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ रूप मानते थे। वे उन्हें सार्वजनिक और नागरिक क्षेत्रों में भाषण देने की कला, तर्क-वितर्क या लेखन कला सिखाते थे ताकि छात्र अच्छा लोक सेवक या नागरिक सेवक बन सके। कई पुराशास्त्रीय लेखकों और प्राचीन शख्सियतों के उदाहरण पेश करने के प्रयास में मानववादियों ने राजकुमारों, विद्वानों, दार्शनिकों और मनीषियों की विस्तृत जीवनियां लिखीं। कई विद्वान इतालवी मानववादियों को लिखावट में सुधार का श्रेय देते हैं। गोथिक लिपि, जिसकी विशेषता कोणिकता और संपीड़न थी, के स्थान पर निकोली की मानववादी *कर्सिव* लिपि का प्रयोग किया जाने लगा और सालुटाटी द्वारा कैरोलिन छोटे अक्षरों का पुनरुत्थान किया गया। मानववादी शिक्षा जनसाधारण के लिए नहीं थी, यह केवल संभ्रांत वर्ग तक सीमित थी।

मानववादियों ने शैक्षणिक सिद्धांत पर निबंध लिखे और माध्यमिक स्कूलों का विकास किया। (उदाहरण के लिए विटोरिनो ने मांतुवा में एक माध्यमिक स्कूल का विकास किया)। वे मानते थे कि मध्यकालीन वितंडावाद द्वारा उत्पन्न बाधाओं को तोड़ने के लिए शिक्षा आवश्यक है। 1416 में पोजियो ब्रैसियोलिनी ने पहली सदी में रोम के कुलीन वर्ग के लिए शिक्षा पर इंस्टीट्यूट्स ऑफ ओरेटरी के क्विंटिलियन द्वारा लिखित एक शोध की खोज

की। इसने भाषा, दर्शन और धर्म की एक नई समझ दी। एक अन्य मानववादी, लोरेंजो वाल्ला ऐतिहासिक पाठ विषयक शोध के रूप में शिक्षा पर जोर देते थे। वे इटली के विभिन्न भागों में दरबारों और विश्वविद्यालयों में लेक्चर देते थे। अपने शैक्षणिक कार्यक्रम में मानववादी उदार कलाओं के महत्व पर जोर देते थे ताकि सच्ची स्वतंत्रता के रहस्यों के बारे में शिक्षा दी जा सके। शारीरिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता था क्योंकि वे स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क के विचार में विश्वास करते थे। धन-दौलत, वंशावली, सरकारी पद और पारिवारिक संबंधों के समान निजी शिक्षा फ्लोरेंस में ही नहीं इटली के अन्य शहरों में भी सामाजिक हैसियत का प्रतीक थी। इन शैक्षणिक कार्यक्रमों की सबसे बड़ी कमी यह थी कि इनमें लड़कियों को शामिल नहीं किया जाता था, यद्यपि इतालवी मानववादी मनुष्य व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास और स्वतंत्रता के विचार का प्रचार कर रहे थे।

राजनीतिक विचार

यह सच है कि मानववादियों ने ग्रीक सभ्यता की तुलना में राजनीतिक दर्शन के विकास में कोई बड़ा योगदान नहीं दिया। मानववादी आंदोलन में प्लेटो और रूसो जैसी महान शख्सियतों के होने का कोई दावा नहीं किया जा सकता था। राजनीतिक विचारणा के क्षेत्र में मानववादियों में एक ही नाम उभर कर आता है और वह नाम निकालो मैकियावेली (1469-1527) का है। पुनर्जागरण मानववादी राजनीतिक सिद्धांत के विषय से नहीं जुड़े थे क्योंकि उनमें से अधिकांश लोग शिक्षक, राजनयिक, नौकरशाह, दरबारी या राजनीतिक प्रचारक का काम करते थे। उनके लेखन मुख्य रूप से शिक्षित नेताओं के लिए थे जैसे कि धनी व्यापारियों, कुलीनों और पेशेवर लोग। यद्यपि उन्होंने राजनीतिक दर्शन की कोई प्रमुख पुस्तक नहीं लिखी, फिर भी उन्होंने बौद्धिक जगत में मूलभूत परिवर्तन लाया जिसके भीतर राजनीतिक विचार मौजूद थे। उन्होंने किसी विचार प्रणाली का विकास नहीं किया बल्कि विचारणा का माहौल तैयार करने में योगदान किया।

प्लेटोनिक अकादमी कोसिमो डी मेदिची द्वारा संरक्षणप्राप्त विद्वानों का एक अनौपचारिक समूह बन गया। मेदिची ने मार्सिलियो फिचिनो (1433 -1499) को प्लेटो के संवादों का अनुवाद करने के लिए नियुक्त किया। फिचिनो को आजीवन वृत्तिदान दिया गया ताकि वह केवल अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित करे। यद्यपि प्लेटोनिक अकादमी कभी एक औपचारिक शैक्षणिक संस्था नहीं बन सकी, लेकिन प्लेटो के दर्शन का अनुवाद जिसे नवप्लेटोवाद कहा गया, एक महत्वपूर्ण बौद्धिक दर्शन बन गया। फिचिनो के कार्य ने ईसाइयत और प्लेटोवाद को एक सिद्धांत में संश्लिष्ट कर दिया। यह सिद्धांत दो प्रमुख विचारों पर आधारित था—वस्तुओं का नियोप्लेटोनिक सोपान (वस्तु के न्यूनतम रूप से लेकर ईश्वर के रूप में सर्वोच्च आत्मा तक जीवों की एक लंबी शृंखला) और आध्यात्मिक प्रेम। यह भौतिक जगत को आध्यात्मिक जगत में मिलाने का प्रयास था। आध्यात्मिक प्रेम के इस

सिद्धांत का पाश्चात्य साहित्य पर गहरा प्रभाव था। इसने यह उजागर किया कि जिस प्रकार विश्व के सभी भाग ईश्वर के साथ जुड़े हैं, लोग भी प्रेम के जरिए मानवता में एक साथ रहते हैं। हर्मेनिटिसिज्म बौद्धिक आंदोलन का एक और रूप था। यह फिचिनो के एक ग्रीक पांडुलिपि के *कार्पस हर्मेनेटिकम* नाम से अनुवाद पर आधारित था। इस पांडुलिपि का एक पहलू ज्योतिष, जादू और कीमियागिरी जैसे रहस्यमय विज्ञानों पर जोर देता था। दूसरा पहलू धार्मिक और दर्शन संबंधी विश्वासों और अनुमानों पर जोर देता था। हर्मेनिटिसिज्म में यह तर्क दिया जाता था कि ईश्वर प्रकृति के सभी रूपों में मौजूद है—सांसारिक वस्तुओं में भी और खगोलीय पिंडों में भी। इसमें ब्रह्मांड को सजीवीय और कीमियागार रूपों में व्यक्त किया गया। अत: हर्मेनिटिक्स के अनुसार संसार एक जीवित अस्तित्व है और निरंतर गतिमान है। इसलिए उन्होंने मनुष्य के बारे में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। मनुष्य को अपार दैवी शक्ति मिली है और मूल दैवत्व प्राप्त करने के लिए मनुष्य की प्रकृति के ज्ञान की खोज और प्रकृति की शक्तियों का फलदायी प्रयोग करना चाहिए। इस दृष्टिकोण ने एक प्रकार के रहस्यवाद को जन्म दिया।

पियेत्रो पोंपोनाजी (1462-1525) मानववादी आंदोलन के महत्वपूर्ण दार्शनिकों में से एक थे। वह अरस्तु के विख्यात अनुयायी और पादुवा विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक थे। वह अरस्तु के भौतिकी के विचारों में यकीन करते थे लेकिन स्वतंत्र आत्मा की मौजूदगी को साबित नहीं कर सके। उन्होंने *ऑन दि इर्मोटलिटी ऑफ दि सोल* (1516) नामक पुस्तक लिखी। इसमें उन्होंने आत्मा की अमरता को अस्वीकार नहीं किया। लेकिन यह तर्क दिया कि चूंकि इस प्रश्न का उत्तर संभव नहीं है अत: मृत्यु के पश्चात पुरस्कार या सजा की अवधारणा के आधार पर कोई नीतिगत सिद्धांत प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। धर्म और ज्ञान के बीच फर्क करते हुए उन्होंने कहा कि जो एक दार्शनिक के लिए सही है, जरूरी नहीं है कि वह धर्मशास्त्री के लिए भी सही हो। *कोर्ट ऑफ इनक्विजिशन* के आदेश पर उनकी पुस्तक को नष्ट कर दिया गया।

मैकियावेली एक विवादास्पद विचारक थे। उनके लेखनों ने विरोधी प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया। उनका लेखन 1494 में इटली पर फ्रांसीसी आक्रमण के साथ आरंभ हुई लंबी लड़ाई द्वारा उत्पन्न राजनीतिक उथल-पुथल का परिणाम था। पुस्तकों की एक शृंखला में मैकियावेली ने राजनीति का नया विज्ञान लिखने का दावा किया। उनका जन्म फ्लोरेंस में हुआ था। वह लैटिन के जाने-माने शिक्षक-विद्वान पावलो दा रोसिंगलियोन के छात्र थे। फ्लोरेंस में सवोनरोला तंत्र के पतन के बाद नगर में नई सरकार का चुनाव हुआ। इसके साथ ही मैकियावेली उत्कर्ष पर पहुंच गए। वह *चांसरी* (उच्च न्यायालय) का प्रमुख और गणराज्य के *फॉरेन रिलेशंस कमिटी* के सचिव बन गए। उन्होंने फ्लोरेंस गणराज्य की चौदह वर्षों तक सेवा की और अनेक राजनयिक मिशनों का नेतृत्व किया। उन्होंने कई रिपोर्ट्स लिखे और वह महत्वपूर्ण राजनीतिक नेताओं के संपर्क में रहे। इससे मैकियावेली को अपनी

सर्वाधिक प्रसिद्ध पुस्तक *दि प्रिंस* (1513) में उनकी राजनीति का विश्लेषण करने का अवसर मिला। उनका उद्देश्य मेदिची को महानता के शिखर पर पहुंचने का मार्ग बताना था। मैकियावेली मानते थे कि राजनीतिक कार्रवाई तीन शक्तियों पर निर्भर करती है— *वर्चु, नेसेसिटा* और *फॉर्चुना*। उन्होंने *वर्चु* शब्द का प्रयोग उस अर्थ में नहीं किया जिस अर्थ में ईसाइयों ने किया था। उनके लिए *वर्चु* का अभिप्राय राजनीतिक रूप से सफल समाज के निर्माण के लिए आवश्यक शक्ति और जोश से था। *फॉर्चुना* को उन्होंने भाग्य के रूप में दरशाया। वह मानते थे कि भाग्य मनुष्य के व्यवहार के दायरे में हो न कि ईश्वर की इच्छा समझा जाए। इसका उपयोग राजनीतिक क्षेत्र में किया जाना चाहिए। मैकियावेली के अनुसार इसका अभिप्राय अनापेक्षित घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करना है और इसके लिए *वर्चु* आवश्यक है। राजनीतिक जीवन को वह एक निरंतर संघर्ष मानते थे जिसमें *वर्चु* का इस्तेमाल अवसरों का दोहन करने के लिए किया जाना चाहिए। उनका पूरा विश्वास था कि राजनीतिक व्यवहार के अपने नियम हैं और इसमें बुराई का सामना अच्छाई से किया जाना चाहिए। उनके अनुसार धार्मिक नैतिकता शासकों के लिए लागू नहीं होती। राजकुमार को अपने विरोधी की कमजोरी का फायदा उठाना चाहिए। दरअसल मैकियावेली को छोड़कर अन्य किसी भी विचारक ने राजनीति की नैतिक बुनियाद संबंधी पूर्व के विचारों में इतना बड़ा उलट-पुलट नहीं किया। उन्होंने नैतिकता को राजनीतिक उद्देश्यों के अधीनस्थ बना दिया। वह मानते थे कि समयुगीन नेता इतिहास की सीख को शायद ही कोई तवज्जो देते हैं। उनकी अन्य सुविख्यात पुस्तक *डिस्कोर्सेस ऑन लिवी* थी। यह सैन्य संगठन पर एक शोध-प्रबंध था। इसमें उन्होंने प्राचीन रोम गणराज्य की सभी युगों के आदर्श के रूप में प्रशंसा की। अपने समकालीन मानववादियों के विपरीत मैकियावेली ने प्राचीन महापुरुषों के आमंत्रण की पद्धति को खारिज कर दिया। वह मानते थे कि शासन करना एक प्रक्रिया है। इसके लिए विभिन्न समयों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है। पूर्व के एक मानववादी पेट्रार्क ने समकालीन समाज को बदलने में प्राचीन बुद्धिमत्ता की शक्तियों में पूरा यकीन दिखाया था। वहीं मैकियावेली ने प्राचीन बुद्धिमत्ता के महत्व को स्वीकार करते हुए इस बात पर बल दिया कि शासकों को समय की प्रकृति के अनुरूप काम करना चाहिए।

उत्तर का ईसाई मानववाद

मानववादी भावना इतालवी नगर-राज्यों तक सीमित नहीं रही। यह आल्प्स के पार विभिन्न यूरोपीय शहरों में फैली, खास तौर पर जिन नगरों ने अपने दरवाजे दक्षिण की ओर खुले रखे थे। कहा जा सकता है कि उत्तरी यूरोप में मानववाद के विचारों का प्रसार इटली से आरंभ होने वाले व्यापार मार्गों से हुआ। फिर भी इटली के बाहर मानववाद का चरित्र अलग हो

गया। उत्तरी मानववाद को इटली के नागरिक मानववाद के विपरीत अकसर ईसाई मानववाद के रूप में परिभाषित किया जाता है। इटली के बाहर के क्षेत्रों में नए ज्ञान (न्यू लर्निंग) का मूल ईसाई मतों के साथ मिश्रण हो गया। इसे ईसाई मानववाद कहा जाता है क्योंकि अधिकांश स्थानों पर चर्च, पोप और ईसाई विद्वानों ने इसे आधिकारिक मंजूरी दे दी। चर्च ने न केवल इसे संरक्षण दिया बल्कि अध्ययन का विषय भी अकसर ईसाई विषय वस्तुओं से जुड़ा होता था। यहां मनुष्य की पुन: खोज का अनिवार्य रूप से यह मतलब नहीं था कि ईश्वर का त्याग किया जाए और पूर्णता की अंतिम खोज की जाए। इसका फोकस बाइबल संबंधी अध्ययन के प्रसार और मध्यकालीन धर्मशास्त्र की आलोचना पर था। अधिकांश केंद्रों में धर्मग्रंथों पर ध्यान दिया जाता था। इटली के बाहर के मानववादियों के अनुसार प्राचीन शिक्षा और बाइबल के अध्ययन से धर्म और बौद्धिकता में बेहतर तालमेल होगा।

नए ज्ञान के प्रसार में प्रिंटिंग प्रेस ने अहम भूमिका अदा की। 1450 के दशक से यूरोप में मुद्रण संस्कृति बढ़ी। मुवेबल लीड टाइप से मुद्रण से पहले मानववादी हाथ से लिखकर पांडुलिपियों की प्रतिलिपि तैयार करते थे। प्रिंटिंग के आरंभ होने से पुस्तकों के प्रकाशन का एक व्यावहारिक तरीका मिल गया। जॉन गुटेनबर्ग ने जर्मनी स्थित मेंज में प्रिंटिंग प्रेस विकसित कर लिया था और केवल 1452-53 में ही बाइबल की लगभग 200 प्रतियां मुद्रित कीं। शीघ्र ही अन्य रचनाओं जैसे सांध्यगीतों, धर्मग्रंथों, भक्तिपरक पुस्तकों, संतों की संक्षिप्त जीवनियां, धार्मिक पुस्तकों, प्राचीन लेखनों और लोकप्रिय साहित्य का मुद्रण किया जाने लगा। प्रिंटिंग प्रेस की तकनोलोजी यूरोप के अनेक भागों में फैलने लगी। अनुमान लगाया जाता है कि पूरे यूरोप में 1500 ई. तक 1,000 से अधिक प्रिंटिंग प्रेस थे। प्रिंटिंग का प्रभाव मुद्रण संस्कृति के विकास में भी महसूस किया गया। मुद्रण की दुकानें सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संचार का महत्वपूर्ण साधन बन गईं। इससे मानववादियों के बीच मूल पांडुलिपियां प्राप्त करने की होड़ समाप्त हो गई क्योंकि इनकी बहुत सारी मुद्रित प्रतियां भिन्न-भिन्न स्थानों पर उपलब्ध होने लगीं। प्रिंटिंग ने नए ज्ञान के उद्देश्य का भी संवर्द्धन किया। उस समय के प्रख्यात मुद्रक जैसे वेनिस के अल्डस मानुशियस और बेसेल के जोहानेस फ्रेबेन मानववादी गतिविधियों से घनिष्ठ रूप से जुड़े थे। अनेक मानववादी उनकी प्रिंटिंग की दुकानों में संपादन और प्रूफ रीडिंग के लिए जाते थे। प्रिंट की दुकानें पादरियों और जनसाधारण के लिए कानून, धर्मशास्त्र, दर्शन और विज्ञान जैसे विषयों पर नए मानववादी विचारों को जानने का लोकप्रिय केंद्र बन गईं। यहां तक कि दुर्लभ पांडुलिपियों की अनेक प्रतियां यहां उपलब्ध होती थीं। प्रिंटिग प्रेस मानववादी प्रचार के महत्वपूर्ण उपकरण का काम करता था।

ईसाई मानववाद की उत्पत्ति उत्तर के *लो कंट्रीज* में, खास तौर पर नीदरलैंड में देखी जा सकती है। ईसाई अध्ययन ने इसे प्रोत्साहित किया। इसकी शुरुआत ईसाई पुनर्जागरण से जुड़े गैर-धार्मिक जनसाधारण की रहस्यमय भावना से हुई। सबसे अधिक मशहूर *डिवोशियो*

मॉडर्ना का आंदोलन था। यह ईसाई धर्म के विचारों की शिक्षा ईसा मसीह के जरिए ईश्वर से आध्यात्मिक मिलन के रूप में देता था। उनके अनुसार ईसाई जीवन ईसाई धर्म सिद्धांत से अधिक महत्वपूर्ण था। यद्यपि यह एक रूढ़िवादी आंदोलन था, यह चर्च से अलग नहीं हुआ, न ही इसने चर्च की भूमिका को अस्वीकार किया लेकिन इसने धार्मिक सत्य तक पहुंचने के पांडित्यपूर्ण तरीके को चुनौती दी। *ऑर्डर ऑफ लेमेन* की स्थापना जेरार्ड ग्रूट (1340–84) द्वारा की गई। बाद में थामस ए केंपिस (1380–1471) और वेसेल गैंसफोर्ट (1419–1489) जैसे लोगों का इस पर काफी प्रभाव पड़ा। *डिवोशियो मॉडर्ना* के सदस्यों ने अलग-अलग भागों में स्कूल स्थापित किए और प्राचीन अध्ययनों और धर्मशास्त्रों के अध्ययन पर आधारित ईसाई विचारों का प्रसार किया। इन्हीं स्कूलों से सबसे मशहूर मानववादी निकले। ईसाई मानववादियों में सबसे महान व्यक्ति डेसिडेरियस इरेस्मस (1466–1536) थे।

डेसिडेरियस इरेस्मस का अपने लेखनों और विद्वत्ता के कारण पूरे यूरोप में बहुत अधिक प्रभाव था। वह ईसाई चर्च के सामान्य आचरणों के बजाए शिक्षा में अधिक यकीन करते थे। अपने समकालिकों के लिए वह पृथ्वी के लोगों के लिए ईसाइयत को और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के मानववादी प्रयास का उदाहरण पेश करते थे। वह मानते थे कि धार्मिक रूढ़ियों और नियमों पर अनावश्यक जोर देकर ईसाई जीवन को विकृत बना दिया गया है। इरेस्मस का प्रभाव यूरोप के विभिन्न कोनों में फैल गया था। खास तौर पर सोलहवीं सदी के शिक्षित लोगों के बीच। और बाद की पीढ़ियों के लिए उत्तरी मानववाद का सार और दूसरों से अधिक वही प्रतिबिंबित करते थे। ज्ञान और धर्मपरायणता को एक साथ मिलाकर उन्होंने ईसाई धर्म को एक बौद्धिक चरित्र दिया। इरेस्मस के अनुसार धर्मपरायणता मानववाद का एक अनिवार्य अंग है। यह मनुष्य की आत्मा का एक तत्व है न कि औपचारिक धार्मिक रिवाज का हिस्सा। उनका मानना था कि धर्मशास्त्र को समझने के लिए शिक्षा आवश्यक है। उनकी छवि सुधारक की नहीं बल्कि एक बुद्धिजीवी और मौजूदा समाज के आलोचक की थी। उनके मित्र और अनुयायी इंगलैंड से लेकर पोलैंड, स्कैंडिनेवियन देशों और हंगरी और स्पेन से लेकर इटली तक पूरे यूरोप में थे। उनकी भूमिका का आकलन विभिन्न रूपों में किया गया है। उनके परिवार ने उन्हें मठ जीवन में धकेल दिया था और एक पादरी के रूप में अभिषिक्त कर दिया था। इस कटु अनुभव का उन्हें बड़ा पछतावा था क्योंकि इस कारण उनके लिए बौद्धिक गतिविधियों के सारे अवसर समाप्त हो गए थे। उनका धर्मनिरपेक्ष मिजाज चर्च के मौजूदा विचारों के अनुरूप नहीं था। परिणामस्वरूप उन्होंने ईसाई जीवन शैली और ईसाई सिद्धांत के बीच अंतर को उजागर करते हुए चर्च की निंदा शुरू कर दी। *प्रेज ऑफ फॉली* (1509) इरेस्मस की सर्वाधिक पढ़ी गई पुस्तक थी। इस पुस्तक ने उन्हें 'प्रिंस ऑफ ह्यूमैनिस्ट्स' बना दिया। प्रिंटिंग प्रेस की खोज से इस पुस्तक को बहुत लाभ हुआ। उस समय के जाने-माने मुद्रकों ने उन्हें आमंत्रित किया लेकिन उन्होंने अपना अधिकांश रचनाकालीन समय जोहानेस फ्रोबेन के साथ बेसर्ल में बिताया। यह पुस्तक पांडित्यपूर्ण विद्वत्ता और रूढ़िवाद और अज्ञानी व अंधविश्वासी लोगों के खिलाफ लिखी गई थी। उनकी दूसरी पुस्तक *कोलोक्विज* थी। इसमें व्यंग्य और आलोचना के जरिए धार्मिक रीति-रिवाजों के विषय को उठाया गया। यह मुख्य रूप से छात्रों के लिए लोकप्रिय कहानियों का संग्रह थी जो नैतिक शिक्षा और उत्कृष्ट भाषा प्रदर्शित करती थी। यह अंधविश्वासी कर्मकांडों और जादू-टोना के खिलाफ थी। उनकी एक और महत्वपूर्ण पुस्तक *हैंडबुक ऑफ दि क्रिश्चियन नाइट* (1501) थी। यह धर्मपरायणता के महत्व को उजागर करती है। इरेस्मस की और भी कई पुस्तकें हैं जैसे *एडिजेज*—जो कि ग्रीक और रोमन स्रोतों से ली गई कहावतों का संग्रह है; *कंप्लेंट ऑफ पीस* ईसाई शांतिवाद को उजागर करती है; लेकिन उनकी सबसे प्रभावशाली रचना *नोट्स ऑन दि न्यू टेस्टामेंट* (1505) है। एक प्रामाणिक पुस्तक लिखने के लिए उन्होंने दस वर्षों तक ग्रीक बाइबिल संबंधी पांडुलिपियों का अध्ययन और विश्लेषण किया। उनकी विश्लेषणात्मक टिप्पणियां और उनका अपना लैटिन अनुवाद अब तक का महानतम बाइबिल संबंधी विद्वत्तापूर्ण कार्य है। ये सभी पुस्तकें इरेस्मस की बहुमुखी प्रतिभा को दरशाती हैं। उनकी लैटिन गद्य की शैली और वाग्विदग्धता अद्भुत थी। अपनी अभिव्यक्ति से वह पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनकी रचनाएं उनकी लेखन कला को दरशाती हैं जिनमें व्यंग्य, संकेतवाद, तीखी आलोचना और हास्य का कुशल प्रयोग हुआ है। उनके विचार उस समय के कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंट अनुयायियों दोनों को आकर्षित करते थे। इरेस्मस का असाधारण प्रभाव उनके अद्भुत लेखनों के कारण ही नहीं बल्कि उनकी निरंतर भ्रमणशीलता के कारण भी था। वह अकसर इटली, फ्रांस, इंगलैंड और जर्मनी की यात्रा पर रहते थे।

सांस्कृतिक परिवर्तन पंद्रहवीं सदी के अंत में आरंभ हुए लेकिन वास्तव में इसका पल्लवन 1510 के बाद हुआ। यूरोपीय पुनर्जागरण से आ रही प्रेरणा से इंगलिश मानववाद एक बौद्धिक और कलात्मक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ। इंगलैंड में मानववाद ने नए ज्ञान का रूप लिया और शिक्षा और साहित्य को प्रभावित करना शुरू किया। नए मानववादी ज्ञान और साहित्यिक गतिविधियों से सशक्त राष्ट्रीयतावादी साहित्य का सृजन हुआ। यह पुनर्जागरण के फ्रांस पहुंचने के बाद विकसित हुआ। दरअसल इंगलैंड में चरम पुनर्जागरण कई वर्षों के अंतराल के बाद आया। इंगलैंड में उस दशक के सबसे महान मानववादी लेखक थामस मोर (1478–1535) थे। जब इरेस्मस इंगलैंड गए तो दोनों महान मानववादी, इरेस्मस और थामस मोर घनिष्ठ मित्र बन गए। लेकिन एक ही अभिरुचियां होने के बावजूद दोनों ने अलग-अलग रास्ते चुने। मोर इरेस्मस की जनसाधारण की धर्मपरायणता के प्रति चिंता और भ्रष्ट समाज के प्रति जबरदस्त क्षोभ से सहमत थे। जहां इरेस्मस ने ईसाई दर्शन प्रस्तुत किया, वहीं मोर एक ईसाई मानववादी थे और उनकी आशावादिता सीमित रही। इरेस्मस के विपरीत मोर ने सार्वजनिक जीवन चुना और इंगलिश

राज्य में चांसलर के सर्वोच्च पद पर काम किया। उन्होंने वकालत की शिक्षा ली थी और अपने सार्वजनिक सेवाकाल में रिचर्ड तृतीय का मानववादी इतिहास लिखा। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक *यूटोपिया* (1516) थी। इसमें नए खोज किए गए प्रदेश में यूटोपिया (जिसका अर्थ है कहीं नहीं) द्वीप पर एक आदर्श समाज का वर्णन किया गया था। यह मोरस नाम के एक अंगरेज और एक अज्ञात यात्री हिथलोडे के बीच मिलन के बारे में है। उनके बीच बातचीत के क्रम में थामस मोर ने समकालीन राजनीतिक समाज की सशक्त आलोचना और एक शक्तिशाली शासक के दरबार में एक मानववादी की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। उनकी यूटोपिया में राज्य पश्चगामी अनुशासन के जरिए एक ऐसे समाज को चलाता है जो मनुष्य को आदर्श सदस्य बनाता है। रोचक बात यह है कि मोर एक निरंकुश दरबार की बुराइयों का हल उतने ही शक्तिशाली राज्य के निर्माण के द्वारा ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे थे। थामस मोर के लिए एक अच्छे समाज का सार मुद्रा अर्थव्यवस्था और निजी संपत्ति का विकास होना था। एक आदर्श समाज की यह काल्पनिक तसवीर उस समय की सुस्पष्ट कुप्रथाओं और बुराइयों पर एक टिप्पणी थी जैसे एक ओर नितांत गरीबी दूसरी ओर अनर्जित अकूत संपत्ति, धार्मिक उत्पीड़न, निरर्थक युद्ध, और दमनकारी सरकार। मोर की *यूटोपिया* अपने सदस्यों को साझा लक्ष्य और अपेक्षाकृत अधिक बौद्धिक कामकाज उपलब्ध कराती है ताकि वे बुद्धिमत्ता, न्याय और संयम जैसे स्वाभाविक गुणों का आचरण कर सकें। इसमें ईसाई जीवन को महज व्यक्तिगत मामले के रूप में नहीं बल्कि सामाजिक जीवन के लिए अनिवार्य अंग के रूप में प्रस्तुत किया गया। हालांकि मोर के लेखनों में राजनीतिक मूल्यों और धार्मिक प्रथाओं की कटु आलोचना की गई थी, फिर भी वह इन यूरोपीय सिद्धांतों को स्वयं अपने लिए अमल में नहीं लाए और वह हमेशा राज्य के सार्वजनिक जीवन से जुड़े रहे। जब वह इंगलैंड के चांसलर थे, हेनरी सप्तम के तलाक के प्रश्न पर और अनंतर पोप के साथ संबंधविच्छेद पर उनका राजनीतिक जीवन अनायास रुक गया। उन्होंने राज्य के अस्थायी प्रमुख हेनरी को इंगलिश चर्च के भी सर्वोच्च प्रमुख मानने से इनकार कर दिया। नतीजतन उन्हें कैद कर लिया गया और फांसी दे दी गई। बहरहाल, थामस मोर का अपने समकालिक विद्वानों पर बहुत बड़ा प्रभाव था और उनकी *यूटोपिया* साथी मानववादियों को प्रेरित करती रही। एक सदी पूर्व के फ्लोरेंस के मानववादियों के समान ही थामस मोर ने भी समुदाय बोध पर बल दिया। अंत तक वह पक्के कैथोलिक रहे। कई अन्य अंगरेजों ने मानववादी विचारों पर आधारित नए ज्ञान में बहुत रुचि दिखाई :

ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालय साहित्यिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन गए। आरंभ में साहित्य और उपदेश पर अधिक जोर था। आरंभिक सोलहवीं सदी के अंगरेजी साहित्य में मुख्य रूप से उपदेश की पुस्तकें, दरबारी व्यवहार और अच्छे आचरण की दिग्दर्शिकाएं, भक्तिपरक साहित्य और शैक्षणिक पुस्तकें शामिल थीं। अंगरेजी साहित्य जगत में एक और जाना-माना नाम जॉन कॉलेट का था। उन्होंने इटली की यात्रा की। वह

इतालवी मानववाद, खास तौर पर नियोप्लैटोनिक दर्शन से काफी प्रभावित हुए। लौटने पर उन्होंने शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया और इंगलिश मानववादी आंदोलन के प्रमुख हस्ती बन गए। उन्होंने सेंट पॉल स्कूल की स्थापना की। इरेस्मस ने ग्रोसिन और लिनेक्रे को भी प्रभावित किया। कई अन्य शैक्षणिक पुस्तकों ने नए ज्ञान को संवर्द्धित किया। इनमें सर थामस इलियट की *ब्रोक नेम्ड गवर्नर* (1531) और *रोजर्ट एस्चैम्स टौसोफिलस* (1545) शामिल हैं। ये पुस्तकें ऐतिहासिक विषयों पर आधारित थीं। इनमें से कई इतिवृत्त के रूप में थीं जैसे ऐडवार्ड हाल की पुस्तक *यूनियन ऑफ दि टू नोबल'* और *इलस्चर फेमिलीज ऑफ लैंकेस्टर* और *योर्क*। ऐडमंड डडले की पुस्तक *ट्री ऑफ कॉमनवेल्थ* समयुगीन समाज की आलोचना थी। करीब आधी सदी के अंतराल के बाद 1570 के दशक में अंगरेजी साहित्य का अनायास पुनरुत्थान शुरू हुआ। असाधारण रूप से उत्कृष्ट कविताएं और नाटक सामने आने लगे। हूकर महान गद्यकार बनकर उभरे जबकि वायट और सर्रे ने सोलहवीं सदी के मध्य में नया साहित्यिक आंदोलन आरंभ किया। उनकी इटली यात्रा और दांते, पेट्रार्क और एरियोस्टो के लेखनों के प्रभाव ने अंगरेजी साहित्य में नई प्रवृत्तियां लाईं, यद्यपि ये विवादरहित नहीं थीं। सर्रे एक प्रतिभावान कवि थे लेकिन 30 वर्ष की उम्र में देशद्रोह के कारण फांसी पर लटका दिए गए। उनके लेखनों में इतालवी प्रभाव दिखता है। उन्होंने अंगरेजी कविता में अतुकांत छंद (ब्लैंक वर्स) का सफल प्रयोग आरंभ किया। फिर भी वायट और सर्रे द्वारा लाई गई प्रवृत्तियों से तुरंत कोई परिवर्तन नहीं आया। अंगरेजी साहित्य का महान एलिजाबेथन काल इडमंड स्पेंसर के *शेफर्ड कैलेंडर* और जॉन लिली के *यूफियस* के प्रकाशन के साथ आरंभ हुआ। 1579 में स्पेंसर पुनर्जागरण काल के सबसे प्रतिभाशाली कवि थे। उन्होंने मानववादी शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें पौराणिक इतालवी और फ्रांसीसी साहित्य की गहरी समझ थी। यह पुस्तक अंगरेजी कविता पर उनकी पूरी पकड़ और उस समय के उत्कृष्ट ग्राम्य परिदृश्य को प्रस्तुत करती है। उन्होंने अपनी अधूरी कृति *दि फेयरी क्वीन* पर 20 वर्षों तक लगातार कार्य किया। इसी कृति ने इंगलैंड में काव्य परंपरा की नींव रखी। मानववाद के प्रभाव में अंगरेजी साहित्य ने नाटक की विषयवस्तु का विकास किया। नाटक लंदन के लोगों और जमींदारों के बीच काफी लोकप्रिय हुए। सोलहवीं सदी के अंत में नाटकों में आई अचानक वृद्धि से लोगों के बीच इसकी मांग का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इंगलैंड का राजनीतिक परिवेश भी साहित्यक रचनाओं के लिए अनुकूल था। मार्लो उस समय के बहुत ही प्रतिभावान कवि थे जिन्होंने लोकप्रिय नाटकों का लेखन शुरू किया। वे अपने नाटकों के लिए इतिहास से सामग्री लेते थे और नाटक लेखन में अतुकांत छंद (ब्लैंक वर्स) का बहुत ही प्रभावी रूप से उपयोग करते थे।

क्रिस्टोफर मार्लो को शेक्सपियर पूर्व कवि-नाटककारों में सर्वाधिक प्रतिभावान समझा जाता है। उन्होंने अंगरेजी त्रासदी नाटकों के विकास में उत्कृष्ट योगदान दिया। थामस कीड उस समय के एक अन्य प्रसिद्ध लेखक थे। उनकी पुस्तक *दि स्पैनिश ट्रैजडी* बहुत अधिक

सफल हुई और इसने सोलहवीं सदी के पाठकों का दिल जीत लिया। यह प्रतिशोध की कहानी है जो जन अपेक्षाओं के अनुरूप बेहतरीन ढंग से लिखी गई है। राबर्ट ग्रीन, जॉन लिली, बेन जानसन, फ्लेचर, थामस डेकर और कई अन्य लेखकों ने अंगरेजी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस युग का साहित्य एक ऐसे समय के मानव अनुभव से जुड़ा था जब इंगलैंड का समाज बहुत तेजी से बदल रहा था। यह आर्थिक प्रगति का युग था। संपूर्ण निरंकुशता के इस युग में शेक्सपियर जैसे लेखकों ने *हैमलेट* और *मैकबेथ* में राजनीतिक वैधता के प्रश्न को उठाया। उन्होंने न केवल राजाओं के कर्तव्यों के बारे में बल्कि उनकी प्रजा के अधिकारों के बारे में भी लिखा। उन्होंने *कोरियोलेनस* में गरीब प्रजा को पूरी तरह अज्ञानी और मूढ़ के रूप में नहीं बल्कि समझदार और सक्षम प्राणियों के रूप में प्रस्तुत किया है जो स्थिति को अपने राजाओं की तुलना में बेहतर ढंग से समझते थे। शेक्सपियर ने अपने नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक तनावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। दरअसल एलिजाबेथ युग राष्ट्रीय साहित्य का उत्थान दरशाता है जो आशावाद और सामाजिक जागरूकता से परिपूर्ण है।

विलियम शेक्सपियर उन लेखकों में से एक थे, जो पूर्ण रूप से मानववादियों की श्रेणी में नहीं थे। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं में ऐतिहासिक विषयवस्तुओं और रूमानी चरित्रों का इस्तेमाल किया है। उनका मिजाज और शैली पुनर्जागरण की विचारधारा को व्यक्त करती है। उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन अपनी कविताओं, चतुर्दशपदी कविताओं (सोनेट्स) और नाटकों के जरिए पेश किया। कई विद्वान उन्हें इंगलैंड का महानतम साहित्यिक रचनाकार मानते हैं। उनकी रचनाओं में अद्भुत विविधता है। उन्होंने त्रासद, हास्य, और भावनाप्रधान और काल्पनिक नाटकों के नाटककार के रूप में अपनी प्रतिभा सिद्ध की। उन्होंने ऐतिहासिक शख्सियतों का चयन किया और काल्पनिक चरित्रों को जीवंत बना दिया। माना जाता है कि शेक्सपियर ने कुल 36 नाटक लिखे लेकिन विषयवस्तु और पात्रों के हिसाब से हर नाटक एक-दूसरे से अलग है। वह इतिहास के जरिए स्वयं एक राष्ट्र की दृष्टि न कि शासकों की दृष्टि उजागर करते हैं। अंगरेजी शिक्षा पर पुनर्जागरण के विचारों का काफी गहरा प्रभाव था। यह रोजर एश्चैम के विचारों से स्पष्ट है। वह उस समय के महान शिक्षाविदों में से एक थे तथा राजकुमारी एलिजाबेथ के शिक्षक (ट्यूटर) भी थे जो अपने युग की सबसे सुसंस्कृत, विशद अध्ययनवाली और बहुभाषी साम्राज्ञी मानी जाती थी।

फ्रांस इतालवी पुनर्जागरण और इटली के विद्वत्तापूर्ण कलात्मक कार्य से यूरोप के अन्य किसी भी भाग से अधिक परिचित था। इसका मुख्य कारण था इटली पर फ्रांसीसी सैन्य आक्रमण। इन आक्रमणों से हजारों फ्रांसीसी इटली के सीधे संपर्क में आ गए। इसका प्रभाव कुछ हद तक फ्रांसीसी साहित्य की विषयवस्तु और शैली पर पड़ा। यद्यपि फ्रांसीसी मानववाद अनिवार्य रूप से ईसाई मानववाद से भिन्न था, लेकिन फ्रांसीसी साहित्य इतालवी प्रभाव को

ग्रहण करने वाला साबित हुआ। फ्रांस में लेफेव्रे डी इटेपल्स ने इसे अपनी विद्वत्ता में मिलाकर समाज के लिए चिंता व्यक्त की। अन्य महत्वपूर्ण फ्रांसीसी मानववादी गिलाम बुदे थे। वे लेफेव्रे के समकालिक थे। उन्होंने पेरिस विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई की। बाद में वे पादुवा स्थित प्लैटोनिक एकेडमी भी गए। अरस्तु की पुस्तकों में उनकी रुचि थी। वह मध्ययुगीन ईसाई रहस्य और प्लेटो और अरस्तु के बारे में विशद ज्ञान के विचित्र मिश्रण थे। उनकी प्रमुख पुस्तक *क्विंटुप्लेक्स साल्टर* (1509) है। यह पौराणिक और ईसाई तत्वों का अद्भुत सम्मिलन प्रस्तुत करती है। पुनर्जागरण काल के महानतम फ्रांसीसी कवि राबले थे। पेशे से वह एक चिकित्सक थे लेकिन अपने युवा काल में उन्होंने पौराणिक और इतालवी साहित्य में व्यापक ज्ञान संचय कर लिया था। उस समय की एक अन्य प्रमुख पुस्तक *डिफेंस एंड इन्नोबलमेंट ऑफ दि फ्रेंच लैंग्वेज* थी। इसके लेखक दू बिले थे। इस पुस्तक के कई संस्करण और अनुवाद प्रकाशित हुए। उस समय कई विद्वान इतालवी साहित्य की शैली का अनुकरण करते थे। बिले की यह पुस्तक पौराणिक और इतालवी छंद के अध्ययन के आधार पर फ्रांसीसी कविता में नवपरिवर्तन की मांग करती है। रोंसार्द प्लेआद समूह के अग्रणी युवा कवि थे। उन्होंने कई रूपों में कविता लिखी लेकिन वे महाकाव्य पर अपनी रचना पूरी नहीं कर पाए। आरंभ में लोग उनकी मौलिक शैली पर हंसते थे लेकिन बाद में वे न केवल उनकी तारीफ करने लगे बल्कि अनुकरण भी करने लगे।

स्पेन में बोस्कन और गैसिलासो डि ला वेगा ने इतालवी चतुर्दशी पदी छंदों को लोकप्रिय बनाया और पौराणिक लैटिन कविता के नए रूपों का आरंभ किया। स्पेन में लेखन में महानतम कृति *दि लुसिएड्स* की रचना थी। यह एक प्रकार का महाकाव्य था। स्पेन में मानववादी आंदोलन ईसाई मानववाद का ही एक रूढ़िवादी रूप रहा। इसका नेतृत्व कार्डिनल ज़िमेंस डी सिनेरोज द्वारा किया गया। ज़िमेंस ने सालमनका विश्वविद्यालय में विधि और धर्मशास्त्र का अध्ययन किया और अपने जीवन की शुरुआत एक पादरी के रूप में की। स्पैनिश चर्च में शीघ्र ही उनका पद काफी ऊंचा हो गया। वह नए ज्ञान या पुनर्जागरण के दर्शन की शिक्षा के प्रसार से जुड़े थे और उन्होंने अल्काला विश्वविद्यालय की स्थापना भी की। इसमें प्रशिक्षित छात्रों के लिए चर्च में ऊंचे पद की व्यवस्था थी। उनका शिक्षा कार्यक्रम धर्मशास्त्र, प्राकृतिक दर्शन, विधि, लैटिन, ग्रीक और हेब्रयू भाषाओं पर केंद्रित था। लुसियो मैरिनेयो, सिक्यूलो और मार्टिन जैसे कुछ अन्य विद्वान मानववादी विचारों से परिचित थे। स्पेन में मानववाद ने रूढ़िगत रूप धारण कर लिया। इसका इस्तेमाल मुख्य रूप से चर्च की प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करने और पादरियों की बौद्धिक क्षमता बढ़ाने के लिए चर्च के अधिकारियों की शिक्षा की विषयवस्तु के विस्तार के लिए किया जाता था। यों कहें कि इसका उद्देश्य स्पैनिश चर्च की महत्ता को बढ़ाना था।

इंगलैंड, फ्रांस और स्पेन में मानववाद मूल रूप से नई शिक्षा और शैक्षणिक सुधारों का आंदोलन रहा। इसका नेतृत्व महत्वपूर्ण विद्वानों और चर्च के नेताओं ने किया। इसके

विपरीत जर्मनी में मानववाद ने एक अलग रूप ले लिया। यूरोप के पश्चिमी राज्यों में मानववादी कार्यक्रम चर्च और समाज से विरासत में मिले ढांचे में चलता रहा लेकिन जर्मनी में इसका रोम-विरोधी चरित्र विकसित हुआ। जर्मनी में केंद्रीय सत्ता की कमी थी। जर्मन क्षेत्र कई छोटे-बड़े राज्यों में बंटा हुआ था। हर राज्य के चर्च के पास सापेक्ष आर्थिक और राजनीतिक ताकत थी। फ्रांस या जर्मनी की तुलना में जर्मनी में मध्ययुगीन विश्वविद्यालयों का स्वर्णिम काल काफी देर से आया। विश्वविद्यालयों में सशक्त वितंडावादी परंपरा विकसित हो गई थी जिसने बौद्धिक और धार्मिक जीवन को प्रभावित किया। जर्मन मानववाद की उत्पत्ति के बारे में दो भिन्न-भिन्न मत हैं। एक सामान्य मत यह है कि धार्मिक सुधारों के प्रयास आधुनिक भक्ति (डिवोशियो मॉडर्ना) और 'बंधुत्व-समुदायों' के रूप में आंदोलनों के साथ आरंभ हुए। इन समुदायों में धर्मपरायणता पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया। मानववादी आंदोलन का आधार इन समुदायों ने तैयार किया जबकि मानवतावादी विचारों के स्रोत इटली से मिले। दूसरा मत हाल के कुछ लेखकों (रॉबर्ट ब्लेक, पृ. 17) द्वारा व्यक्त किया गया है। इनका मानना है कि यद्यपि मानववाद 1500 ई. तक जर्मनी के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में प्रविष्ट कर चुका था और 1535 ई. तक इसने मध्ययुगीन वितंडावाद के शैक्षणिक प्रभुत्व को सफलतापूर्वक कम कर दिया था, फिर भी इसकी सफलता आधुनिक भक्ति (डिवोशियो मॉडर्ना) जैसे आंदोलनों की देसी बुनियादों पर आधारित नहीं थी। उनके अनुसार जर्मन मानववाद एक इतालवी आयात था। यह उन विद्वानों और संरक्षकों द्वारा आरंभ किया गया जिन्होंने इतालवी केंद्रों में स्वयं अध्ययन किया था। जर्मन मानववाद का प्रसार सुधार आंदोलन के प्रसार और धर्मनिरपेक्ष शासकों की भूमिका से जुड़ा है। इटली के मानववादियों की तुलना में जर्मन मानववादियों का विश्वविद्यालय जीवन से अपेक्षाकृत अधिक नजदीकी संबंध था। जर्मनी के महत्वपूर्ण नगरों में प्रिंटिंग प्रेस की उपस्थिति के कारण इन विचारों का यहां अपेक्षाकृत तेजी से प्रसार हुआ। मानववादी विचारों को दरबारों में और बिशपों के बीच समर्थन मिला। तथापि जर्मन राज्यों में मानववाद के उदय ने विश्वविद्यालय को वितंडावाद और मानववादी विचारों के बीच रणभूमि में तबदील कर दिया। मार्टिन लूथर के आने से पहले ही जर्मनी धार्मिक विवाद का केंद्र बन गया था। इसके बाद गृहयुद्ध का समय आ गया। इन घटनाओं से वितंडावादियों और मानववाद समर्थकों के बीच संघर्ष काफी तीक्ष्ण हो गया। हीडेलबर्ग विश्वविद्यालय मानववादी शिक्षा का केंद्र बन गया जहां सुधार का देसी मॉडल पेश किया गया। बौद्धिक गतिविधियों की दो शाखाएं विकसित हो गईं। पहली शाखा का नेतृत्व वुर्टेनबर्ग में जान्स रूशलिन (1455-1522) द्वारा किया गया। मौलिक ईसाई स्रोतों के अध्ययन के लिए उन्होंने यहूदी रहस्यवादी लेखनों का अध्ययन किया। उनके इन प्रयासों में मानववादियों ने उनका समर्थन किया। दूसरी शाखा का नेतृत्व जान्स फेफरकार्न ने किया। वह एक डोमिनिकन पादरी थे जिन्होंने ईसाई धर्मशास्त्र के अध्ययन में रूशलिन के यहूदी परंपराओं के प्रयोग का

विरोध किया। यह मानववादियों और वितंडावादियों के बीच जंग का एक कारण बन गया। आरंभ के प्रख्यात जर्मन मानववादी विद्वानों में से एक जान्स वैसेल थे। उन्होंने अपना मानववादी प्रशिक्षण इटली में प्राप्त किया और हीडेलबर्ग में ग्रीक अध्यापन शुरू किया। उनके उत्तराधिकारी रूडोल्फ एग्रीकोला थे जो जर्मन मानववाद के जनक माने जाते थे। सोलहवीं सदी के दौरान मानववादियों का एक समूह एरफर्स्ट स्थित म्यूटियन के आसपास केंद्रित था। इस केंद्र ने बहुत से युवा मानववादियों को तैयार किया। इन मानववादियों ने शायद ही कोई अकादमिक कार्य किया। न ही वे औपचारिक अध्यापन से जुड़े थे लेकिन उन्होंने चर्च व्यवस्था के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण का सृजन किया। इस प्रकार जर्मन मानववाद विकेंद्रित राजनीतिक तंत्र से उत्पन्न हुआ। इसे नगरों और शहरों के उन बहुसंख्य लोगों का समर्थन प्राप्त था जिन्होंने सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के कारण दुख झेला था। इस मानववादी आंदोलन ने उत्तरोत्तर राजनीतिक सुधारों और चर्च पर हमलों पर ध्यान केंद्रित किया। इससे धार्मिक सुधार के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण हुआ।

इटली के नागरिक मानववाद के विपरीत उत्तरी यूरोप में मानववाद ने ईसाई मानववाद का रूप धारण कर लिया। उत्तरी यूरोप के नगर यद्यपि काफी समृद्ध और संपन्न थे और अंतरराष्ट्रीय व्यापार से जुड़े थे लेकिन जिस प्रकार की स्वायत्तता फ्लोरेंस और वेनिस जैसे शहरों को थी, इन नगरों को प्राप्त नहीं थी। उत्तरी नगर राज्य सत्ता के अधीनस्थ रहे और उन्हें स्वायत्त नागरिक अधिकार नहीं थे। उत्तरी राज्यों की प्रभुत्वशाली सामंती संरचना ने सामाजिक जीवन में चर्च की भूमिका बढ़ा दी थी। चर्च शिक्षा का केंद्र और संरक्षक था और यह केवल विशिष्ट प्रकार के सुधारों को ही सहन कर सकता था। अत: उत्तरी मानववाद के धार्मिक और धर्मशास्त्रीय अध्ययनों में विशिष्टीकरण की प्रवृत्ति थी। नैतिक और धार्मिक सुधार इस आंदोलन का सार था। इसने देसी सांस्कृतिक आंदोलनों को प्रोत्साहित किया और इसलिए ऐसा लगता है इसका प्रभाव लंबे समय तक रहा। उत्तरी मानववादियों की रुचि शैक्षणिक संस्थानों का निर्माण करने और स्थानीय रीति-रिवाजों और इतिहास के अनुसार शिक्षा के संवर्द्धन में अधिक थी। इतालवी नगरों की संपन्नता और शहरी समाज की धर्मनिरपेक्ष भावना की शक्ति ने कला और साहित्य के संवर्द्धन के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण किया। मानववादी गतिविधियों के दायरे के खयाल से इतालवी मानववाद का दायरा अपेक्षाकृत काफी बड़ा था।

आल्प्स के दोनों ओर अर्थात इतालवी नगरों और शेष यूरोप में मानववादी आंदोलन ने नए दृष्टिकोण का सृजन किया। इससे लोगों के सोच का दायरा काफी व्यापक हो गया लेकिन इनका तत्काल प्रभाव समाज के कुछ वर्गों तक सीमित था। यहां तक कि कई मानववादियों के दिलो-दिमाग में पुराने और नए खयालात साथ-साथ मौजूद थे। लोरेंजो दा मेदिची जैसी शख्सियत ने एक ओर जहां अश्लील और शराब पीने संबंधी गीत लिखे वहीं दूसरी ओर उन्होंने संतों को समर्पित भक्ति के रहस्यवादी गीत भी लिखे। इसने इस विश्वास

को जन्म दिया कि मानववाद आधुनिकतावाद का अंकुरण काल था। जॉन स्टीफेंस तो यहां तक कहते हैं कि मानववादी शोरगुल करने वाले और आत्मश्लाघा में लगे पदाधिकारी थे जिन्हें विचारों के बारे में शायद ही कोई चिंता थी। वे राजकुमारों और नागरिक सरकारों के लिए कार्य करते थे। उनका मुख्य कार्य पत्र और भाषण लिखना, और नागरिक चेतना को व्यक्त करने के लिए नैतिक शोध प्रबंध लिखना था। उन्होंने अभी तक वैज्ञानिक अवधारणाओं की कोई प्रणाली विकसित नहीं की थी और वे विश्वास और ज्ञान के बीच झूल रहे थे। मानववाद के हाल के अध्ययनों से उनके चरित्र का अपेक्षाकृत काला पक्ष सामने आया है जैसे जादू-टोना में उनका विश्वास और महिलाओं के बारे में उनके विचार।

मानववादियों की उपलब्धियों के बारे में विचार करते समय यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि कई मानववादियों में पेशेवर लेखक और प्रतिलिपि लेखक के रूप में असाधारण कुशलता थी। उन्होंने तेरहवीं और चौदहवीं सदी में यूरोप में प्रचलित गोथिक बैकहैंड हस्तलेखन के स्थान पर लिपियों को इसका आधुनिक रूप दिया। (राबर्ट ब्लैक, पृ. 76)। मानववादियों ने घसीट लेखन में सुधार करके आधुनिक इतालवी लिपि तैयार की। हालांकि लैटिन भाषा के पुनरुत्थान के उनके प्रयास को पूरी सफलता नहीं मिली। कुछ मानववादी लेखनों में खास तौर पर लियोनार्दो ब्रुनी के पुराशास्त्रीय पाठों के भाषाशास्त्रीय अध्ययन में ऐतिहासिक अध्ययन के लिए आलोचनात्मक तकनीक का उपयोग किया गया। व्याकरण के पाठ्यक्रम के क्षेत्र में यह कहा जाता है कि पंद्रहवीं सदी के मानववादियों ने मध्ययुग के लैटिन पाठ्यक्रम को पचास वर्षों के अपेक्षाकृत छोटे-से समय में बदल दिया और इससे काफी महत्वपूर्ण अकादमिक क्रांति ला दी। इस विषय पर हाल के लेखनों में इस बात पर बल दिया जाता है कि यह परिवर्तन इतना अचानक नहीं हुआ था, बल्कि यह काफी अधिक जटिल और क्रमिक परिवर्तन था। मानववादियों का सबसे स्थायी किस्म का योगदान ग्रीक भाषा का पुनरुत्थान था। यद्यपि मध्य युग में कुछ गिने-चुने अध्ययन किए गए थे लेकिन ग्रीक को विद्यालय या विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में जगह नहीं मिली थी। ग्रीक अध्ययन का प्रोत्साहन बाइजैंटाइन से मिला जहां पूरे मध्यकाल के दौरान इसका अध्ययन जारी रहा था। मानववादी अपनी गतिविधियों से उस नागरिक संस्कृति को संवर्द्धित करते थे जो अपेक्षाकृत धर्मनिरपेक्ष और मानवीय थी यद्यपि यह कम धार्मिक नहीं थी। इसे मानव सम्मान का युग माना जाए या मनुष्य की दैन्यावस्था का जैसा कि फैजियो और पोजियो ने चित्रित किया है, यह एक अनिर्णीत बहस है।

मानववाद और महिलाएं

कुछ इतिहासकार मानते हैं कि पुनर्जागरण काल के दौरान उच्च वर्गीय महिलाओं की प्रतिष्ठा घट रही थी। मध्यकाल के अंतिम वर्षों और पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समाज में उनकी भूमिका, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य की प्रकृति, उनके संपत्ति के

अधिकारों और उनकी राजनीतिक शक्तियों के अध्ययन से पता चलता है कि पुनर्जागरण काल में पहले की अवधियों की तुलना में महिलाओं को कम अधिकार प्राप्त थे। यह नोट करना रोचक है कि सुधारों और मानव सम्मान की वकालत करने वालों को भी महिलाओं के लिए शायद ही कोई चिंता थी। महिलाओं और उनकी शिक्षा के प्रति उनका रवैया अस्पष्ट था, यद्यपि वे महिलाओं के लिए अच्छी शिक्षा की उपयोगिता को खुलेआम अस्वीकार नहीं करते थे। साथ ही वे कभी नहीं चाहते थे कि महिलाएं उस स्तर को प्राप्त करें जो वे पुरुषों के लिए निर्धारित करते थे। इसके प्रमाण पुरुषों को दिए गए उनके सुझावों में प्रदर्शित होते हैं। जिस काम को पुरुषों द्वारा किए जाने की सिफारिश की जाती थी, उसे महिलाओं के लिए अवांछनीय समझा जाता था क्योंकि यह माना जाता था कि यह कार्य उन्हें परिवार के दायित्वों से विमुख होने को प्रेरित करेगा। पूरे यूरोप में बहुत ही कम महिलाओं को मानववादी आंदोलन में योगदान देने का मौका मिला। वे आम तौर पर शासक परिवारों की होती थीं। इनमें इंगलैंड की प्रिंसेस मैरी ट्यूडर और एलिजाबेथ, नवारे की मार्गरेट और फ्रांस की कैथरीन डी मेदिची के नाम शामिल हैं। यहां तक कि राजकुमारियों से भी यह आशा नहीं की जाती थी कि वे मानववादी कार्यक्रमों में भाग लें। इतालवी मानववादियों द्वारा महिलाओं, जिनमें शासक महिलाएं भी शामिल थीं, को अलंकार और अन्य मानववादी विषयों का अध्ययन करने से मना किया जाता था। उनका मानना था कि महिलाओं की एक बार शादी हो जाने के बाद उन्हें ये सभी अध्ययन बंद कर देने चाहिए। यदि कोई महिला फिर भी अपना अध्ययन जारी रखना चाहती है तो उसके लिए एकमात्र रास्ता यह है कि वह किसी महिला मठ में शामिल हो जाए या एकांत जीवन बिताए। थामस मोर के कद के मानववादी भी महिलाओं के लिए गैर ईसाई क्लासिक्स पढ़ने के बजाए ईसाई अध्ययन पर अधिक जोर देते थे क्योंकि व्यंगों और हास्य रचनाओं में अनैतिक विचार शामिल होते थे। हालांकि ये सभी निषेधात्मक विचार कुछ महिलाओं के उत्साह को नहीं डिगा सके। उन्होंने मानववादी शिक्षा में भाग लिया और कुछ मानववादी विषयों में विशिष्टता हासिल की। यहां यह भी स्मरणीय है कि उनकी संख्या बहुत कम थी और उनमें से अधिकांश समाज के सर्वोच्च वर्ग की थीं।

पंद्रहवीं सदी के दौरान इटली के एक चिकित्सक की बेटी क्रिस्टाइन डी पिज़ान को प्राचीन भाषाएं सीखने के लिए उसके पिता और बाद में उसके पति द्वारा प्रोत्साहित किया गया। उनकी मृत्यु के बाद उसने अकादमिक लेखनों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। वह फ्रांसीसी दरबार में रहती थी जहां उसने *जॉन ऑफ आर्क* और शिक्षा पर एक पुस्तक लिखी। लेकिन उसकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक *बुक ऑफ दि सिटी ऑफ लेडीज* (1405) थी। अपनी पुस्तक में उसने पुरुषों के इस तर्क का खंडन किया कि महिलाएं पुरुषों से कमजोर हैं और नैतिक निर्णय करने में अक्षम हैं। क्रिस्टाइन ने तर्क दिया कि महिलाओं के पिछड़े होने का मुख्य कारण उनमें शिक्षा की कमी है। वेरोना की इसोता नोगारोला भी एक अन्य

मानववादी थीं। उसके पास महान साहित्यिक कौशल था और वह प्रतिभावान लेखिका थी। लेकिन उनकी पुस्तकों के प्रति समयुगीन पुरुष मानववादियों की प्रतिक्रिया न केवल हतोत्साहित करने वाली बल्कि अत्यधिक कठोर भी थी।

इंगलैंड में थामस मोर की बेटियों को बहुत अधिक शिक्षित और सुसंस्कृत माना जाता था। चूंकि वे मानववादी अकादमियों में प्रवेश नहीं कर सकती थीं, इसलिए उन्होंने अपने शिक्षकों, अपने पिता और स्वाध्याय से ज्ञान अर्जित किया। इंगलैंड में मानववादी विचार इटली से आया और इसने महिलाओं के एक छोटे समूह को प्रभावित किया। इन महिलाओं ने मानववादी शिक्षा प्राप्त करना आरंभ किया। ये मुख्य रूप से संभ्रांत वर्ग की महिलाएं थीं। इनकी रुचि दर्शन, धर्मशास्त्र और कविता में थी और ये प्राचीन पुस्तकों के अनुवादों का अध्ययन करती थीं। मार्गरेट ने कविताओं और शोध ग्रंथों के अलावा लैटिन भाषण भी लिखे। इरेस्मस की पुस्तक के अनुवाद के जरिए उन्हें बहुत प्रतिष्ठा और ख्याति मिली लेकिन उन्होंने कभी भी कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया न ही अपनी मौलिक पुस्तकों का प्रकाशन कराया। कुछ मुद्दों पर अपने पिता थामस मोर से उसके गहरे मतभेद थे।

फ्रांसीसी मानववादी महिलाओं ने पुरुषों की उनके प्रति आम संशयवादिता के बावजूद अपने ज्ञान और गुणों का सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन किया। फ्रांसीसी शासक फ्रैंसिस प्रथम की बहन मार्गरेट ऑफ नवारे ने अपना अलग दरबार बनाया जिसमें वह महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देती थी। उन्होंने अपने लेखनों में धार्मिक सुधारों के कार्य को आगे बढ़ाया। कुछ मानववादी महिलाएं उनके दरबार में उपस्थित होती थीं और बौद्धिक गतिविधियों में शिरकत करती थीं। इन महिलाओं में इंगलैंड की संभ्रांत महिलाएं जैसे मैरी, एन बोलिन और फ्रांस की भावी महारानी कैथरीन डी मेदिची शामिल थीं। उन्होंने *हेप्टोमेरोन* नामक पुस्तक लिखी जिसमें 73 कहानियां थीं। उनकी मृत्यु के बाद इसका प्रकाशन हुआ और बाद में इसका अंगरेजी भाषा में भी अनुवाद किया गया। यद्यपि उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की वकालत नहीं की, न ही उनके लिए समाज में बेहतर स्थान की ही मांग की लेकिन उन्होंने विवाह की परंपरागत संस्था की आलोचना की। बोकाचियो ने *कंसर्निंग फेमस वीमेन* में समयुगीन आदर्शों के लिए 104 प्रख्यात महिलाओं का आदर्श प्रस्तुत किया। यह प्राचीन ग्रीक और रोमन साहित्य के लेखनों से लिया गया शोध ग्रंथ था। इसमें इन महिलाओं की उनके पारंपरिक गुणों, जैसे शुचिता, आज्ञाकारिता आदि के लिए प्रशंसा की गई थी। बोकाचियो के समान ही मार्गरेट ने भी अपने लेखन के लिए संवाद रूप अपनाया जिसमें कहानी को कहने में पुरुष और महिलाओं की बराबर भागीदारी थी। बहरहाल क्रिस्टाइन डी पिज़ान ने अपनी पुस्तक *बुक ऑफ दि सिटी ऑफ लेडीज* (1405) में इस पर जबरदस्त प्रतिक्रिया दी और यूरोप के बौद्धिक और राजनीतिक जीवन में महिलाओं के योगदान को रेखांकित किया। अन्य फ्रांसीसी मानववादी महिलाओं में मुख्य रूप से जीन डी एल्ब्रेट, रीनी डी फ्रांस, जैकलिन जांग्वि और डचेज डी मांटपेसियर का नाम शामिल है। कुछ महिलाएं उग्र स्वभाव की भी थीं जैसे लुई लेवे। इन्होंने महिलाओं से आग्रह किया कि खुद को घरेलू कामों तक सीमित नहीं रखें। उन्होंने रूमानी प्रेम पर एक संकलन प्रकाशित किया। वह प्राचीन साहित्य और अलंकार से भी परिचित थी। बोकाचियो और महान प्रोटेस्टेंट सुधारक जॉन केल्विन ने उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियां कीं। ये उच्च मध्यवर्गीय महिलाएं थीं जो अपनी कमजोरी के बजाए पुरुषों के उनके प्रति नजरिए के कारण अवरुद्ध महसूस करती थीं। मांतुवा की डचेज, इजाबेल के दरबार में भी अनेक महिला मानववादी और कलाकार थीं। फिर भी आम धारणा यह थी कि महिलाएं उच्च स्तरीय साहित्यिक या कलात्मक कार्य नहीं कर सकती हैं। महिलाओं को नागरिक मानववाद के गुणों को प्रदर्शित करने के प्रति हतोत्साहित किया जाता था। कुछ महिलाओं ने प्राचीन भाषाओं और दर्शन को सीखने का भी प्रयास किया लेकिन वे अपवाद मात्र ही थीं।

सोलहवीं सदी के आरंभ में कुछ कारकों का प्रभाव साक्षरता के प्रसार पर पड़ा और प्रकारांतर से इसका एक सीमित असर महिलाओं पर भी हुआ। फ्रांसीसी अनुभव के आधार पर कैथलीन एम. बॉस्वात्ज कहती हैं कि पंद्रहवीं सदी के अंत में प्रिंटिंग प्रेस के आने से किताबें और पठन सामग्री उच्च वर्ग के घरों तक पहुंच गईं जो इसके पहले तक महलों और मठों तक सीमित थीं। जैसा कि कुछ मुद्रकों की बीवियां और बेटियां भी मुद्रण कार्य में सक्रिय रहती थीं इसलिए मानववादी शिक्षा कार्यक्रमों से महिलाओं को दूर रखे जाने के बावजूद मानववादी विचार घरों में भी पहुंचने लगे (*अ हिस्टरी ऑफ वीमेंस राइटिंग इन फ्रांस*)। फिर भी पुनर्जागरण में महिलाओं की भूमिका बहुत ही सीमित रही क्योंकि उन्हें शायद ही वह शिक्षा मिल पाती थी जो उन्हें लेखन के लिए प्रोत्साहित करे। इसके अलावा उन्हें नौकरशाहों, प्रशासकों या आचार्यों जैसे सार्वजनिक भूमिका वाले कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता था। आधुनिक समय से पूर्व के समाज ने सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी पर पूर्ण नियंत्रण लगा रखा था।

चाक्षुष कला

साहित्य के समान ही चाक्षुष या दृश्य कला भी पुनर्जागरणकालीन इटली में एक लोकप्रिय गतिविधि थी क्योंकि इसे एक प्रतीकात्मक भाषा समझा जाता था। इसे सामाजिक, आध्यात्मिक या राजनीतिक मूल्यों के संचरण का माध्यम माना जाता था। पुनर्जागरण काल के दौरान चाक्षुष कलाओं में एक आंतरिक शक्ति थी और ये नागरिक गौरव की बात बन गई। शहरी केंद्रों के बाहरी दृश्य को कला की दृष्टि से आंका जाने लगा। पीटर बर्क के अनुसार 1350 और 1550 के बीच कलाओं में दो परिवर्तन आए—प्रकृति की ओर लौटना और कला को पौराणिकता पर आधारित करना। पहले ने चित्रकला को प्रभावित किया जबकि दूसरे ने शिल्पकला की प्रवृत्तियों का निर्धारण किया।

एक सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में मानववाद का कला, वास्तुशिल्प और संगीत के क्षेत्र में दिलचस्पी पैदा करने में काफी बड़ा योगदान था। मानववाद का उद्देश्य लौकिक जीवन को पौराणिक मॉडल्स पर कला का रूप देना और कला और विद्वत्ता के सभी रूपों को परिपूर्ण बनाना था। मानव मुक्ति और मनुष्य की गरिमा पर जोर दिए जाने से बौद्धिक स्वतंत्रता और वैयक्तिक अभिव्यक्ति के नए वातावरण का सृजन हुआ। ग्रीक और रोम के धर्मनिरपेक्ष और मानवीय दर्शन की पुनः प्राप्ति से न केवल व्यक्तिवाद का उदय हुआ बल्कि कला के क्षेत्र में नई प्रवृत्तियों और शैलियों को बढ़ावा मिला। शिल्पकार, वास्तुकार और चित्रकार पुराने बाइजैंटाइन और गोथिक शैलियों को छोड़ बिलकुल स्वतंत्र और आंतरिक अभिव्यक्तियों में लग गए। क्लासिक्स की संस्कृति और सौंदर्य प्रेम इतालवी पुनर्जागरण के सबसे उल्लेखनीय पहलू बन गए।

इतालवी कला में नई शैलियों का आरंभ तेरहवीं सदी के अंत में और चौदहवीं सदी के आरंभ में फ्लोरेंस के ज़ियोतो दी बौंदोन (1267–1337) जैसे कलाकारों की कृतियों में देखा जा सकता है। बोकाचियो ने उन्हें नई कला का संस्थापक कहा। महान कवि दांते ने अपनी *डिवाइन कॉमेडी* में उन्हें महानतम जीवित कलाकार बताया है। जियोतो की ख्याति बहुत तेजी से फैली और शीघ्र ही वह पुनर्जागरण काल की चित्रकला के संस्थापक के रूप में जाने जाने लगे। उन्होंने बाइजैंटाइन कला के पारंपरिक और कठोर रूपों को छोड़कर पुराशास्त्रीय कला की खूबसूरती को पुनर्जीवित किया। उन्होंने दुनिया को इसके वास्तविक रूप में पेश करने की कोशिश की। पुनर्जागरण काल के मध्य में कला के पूर्ण विकसित रूप की तुलना में जियोतो की पिंड जैसी आकृतियां और अल्पविकसित प्राकृतिक छवि बहुत यथार्थपरक नहीं लगते थे। उनकी कला में मौलिकता यह थी कि वह प्रकृति से इसके अनिवार्य रूपों को लेकर उन्हें सरल और अभिव्यंजनात्मक रूप में प्रस्तुत करने में सक्षम थे। अपने समय में जियोतो की बहुत अधिक मांग थी। उन्हें पेरूरी, बार्दी और अंजो के किंग राबर्ट जैसे धनाढ्य बैंकरों का संरक्षण प्राप्त था। उनकी महत्वपूर्ण शिल्प कलाकृतियों में आसीसि के ऊपरी चर्च के भित्तिचित्र, पादुवा में आरेना चैपेल के भित्तिचित्र, फ्लोरेंस कैथेड्रल के भित्तिचित्र शामिल थे। उनकी चित्रकला में निर्दोषों की हत्या, सत्य का स्मारक, शोक, ईसा मसीह को धोखा और संत फ्रैंसिस की मौत जैसे चित्र शामिल हैं। ये सभी कलाकृतियां मानवीय मनोवेगों और आख्यानपरक बारीकियों को व्यक्त करने की उनकी शक्ति को दरशाती हैं।

जियोतो के बाद विकसित कला ने आकृतियों और प्राकृतिक दृश्यों के बीच अपेक्षाकृत अधिक यथार्थपरक संबंध स्थापित किया। फ्लोरेंस कलात्मक सृजन का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। धनाढ्य व्यापारियों के इस शहर से ज्यादा आत्मविश्वास और आशा किसी भी शहर में नहीं था। पुनर्जागरण काल में कला के विकास में क्रांतिकारी प्रवृत्तियां लोरेंजो ग़िबर्ती (1378–1455), फिलिप्पो ब्रुनेलेशी (1377–1446), मसासियो (1401–1428) और दोनातेलो (1386–1466) की कृतियों में मौजूद थीं। उनके शिल्प, वास्तु और चित्रकलाएं प्रयोग पर आधारित थे। इस प्रक्रिया में उन्होंने परिप्रेक्ष्य के नियमों के जरिए स्थान और काल को दृश्य रूप में प्रस्तुत किया। पुनर्जागरण के दौरान प्रयोग की प्रवृत्तियां दो दिशाओं में विकसित हुईं। पहली चित्रकला के गणितीय पक्ष जैसे परिप्रेक्ष्य के नियमों को हिसाब में लेने, बाहर के स्थान का संघटन और रोशनी और छाया के उपयोग पर बल देती थी। परिप्रेक्ष्य का अभिप्राय त्रिआयामीय वस्तुओं को दो आयाम वाले सतह पर प्रस्तुत करना है। यह इस प्रतिपादन पर आधारित है कि समानांतर रेखाएं दूर जाकर मिलती हुई प्रतीत होती हैं। दूसरी संचलन और शारीरिक संरचना के अन्वेषण पर जोर देती थी जैसा कि अंतोनियो द्वारा तनावग्रस्त मानव शरीर को प्रस्तुत करता हुआ चित्र है। यह दृश्य का यथार्थपरक चित्रण था।

ग़िबर्ती को फ्लोरेंस में चर्च के दरवाजों को डिज़ाइन करने के लिए नियुक्त किया गया। ये कांसे के दरवाजे थे। पौराणिकता से प्रेरित आकृतियों में काल बोध का सृजन करके उन्होंने एकरेखीय परिप्रेक्ष्य की नई तकनीकी के उपयोग द्वारा दरवाजों पर न्यू टेस्टामेंट और ओल्ड टेस्टामेंट की कहानियां पेश कीं। उनकी यह कृति तुरंत विख्यात हो गई। मिशेल एंजेलो ने उन दरवाजों का 'स्वर्ग के दरवाजे' के रूप में वर्णन किया। इस कार्य में ग़िबर्ती ने एक और मशहूर शिल्पकार फ़िलिपो ब्रुनेलेशी को बाहर करके नियुक्ति पाई थी। ब्रुनेलेशी ने शिल्पकला को छोड़कर वास्तु को अपनाया और वह पुनर्जागरण काल के महानतम वास्तुकार बन गए।

चित्रकला में नवपरिवर्तन की गुंजाइश बहुत कम थी। यही स्थिति शिल्पकला और वास्तु के क्षेत्र में भी थी क्योंकि चित्रकला का कोई पुराना मॉडल मौजूद या बचा हुआ नहीं था। फ्लोरेंस चर्च में मसासियो की त्रिमूर्ति एकरेखीय परिप्रेक्ष्यों के प्रयोगों पर बनी एक नई शैली की चित्रकला है। उसके बाद अनेक नए कलाकारों ने चित्रकला को नई ऊंचाइयां दीं। सैंड्रो बोटिसेली (1445–1510) ने अपनी मशहूर कृतियों, 'वीनस और स्प्रिंगटाइम का जन्म' में प्राचीन प्रतीकवाद को शामिल किया। ये चित्र मेदिची घराने के लिए बनाए गए थे और सत्य, सौंदर्य और मानवता के नियोप्लैटोनिक प्रतीकवाद पर आधारित थे।

फ्लोरेंस के युवा कलाकारों और वास्तुकारों में फ़िलिप्पो ब्रुनेलेशी (1377–1446) का नाम प्रमुख है। जियोती के बाद ब्रुनेलेशी ने सुव्यवस्थित संसक्ति बोध प्रदान करने में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्हें फ्लोरेंस के मुख्य गिरजाघर को पूरा करने के लिए नियुक्त किया गया था। यह गोथिक संरचना थी। ब्रुनेलेशी ने वास्तुकला की तकनीकी में पूरा महारत हासिल किया था। फ्लोरेंटाइन चाहते थे कि उनके चर्च पर भव्य गुंबद हो। वह कोई भी कलाकार नहीं बना सका था क्योंकि जिन स्तंभों पर गुंबद बनाया जाना था उनके बीच सामने से काफी बड़ा विस्तार अपेक्षित था। ब्रुनेलेशी ने इसके लिए सफलतापूर्वक एक तरकीब निकाली। उन्होंने वास्तुकला में नई शैलियों का निर्माण किया। इनमें प्राचीन नमूनों

के खूब इस्तेमाल किए गए ताकि समन्वय और खूबसूरती के नए रूपों का सृजन किया जा सके। कहा जाता है कि इसके लिए उन्होंने रोम की यात्रा की और मंदिरों और महलों के भग्नावशेषों का व्यक्तिगत रूप से अध्ययन किया और उनके सजावट और रूपों के खाका चित्र तैयार किए। अगली कई शताब्दियों तक यूरोप और अमरीका के वास्तुकार स्तंभों या तिकोने पत्थरों जैसे उनके क्लासिकल रूपों को अपनाते रहे। साथ ही उनकी कृति पहले की कृतियों से अलग थी क्योंकि इसमें स्तंभों, कुड्य स्तंभों और मेहराबों का सम्मिलन अपनी शैली में किया गया था ताकि रोशनी और छाया का प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। उनका दरवाजों के चौखटों का निर्माण स्पष्ट रूप से प्राचीन संरचनाओं में उनकी निपुणता को दरशाता है। उनकी वास्तुकला अतीत का अनुकरण नहीं थी बल्कि परिप्रेक्ष्य की कला की उनकी खोज ने आने वाली कई पीढ़ियों को प्रभावित किया। परिप्रेक्ष्य का नियम गणित पर आधारित था। इसके द्वारा यह दरशाया जाता था कि वस्तु ज्यों-ज्यों पृष्ठभूमि में पीछे खिसकती जाती है इसका आकार घटता जाता है। ब्रुनेलेशी के प्रयोग और सृजन अनुपात का महत्व निदर्शित करते हैं। उनके अध्ययन और परिप्रेक्ष्य पुनर्जागरण काल की कला के विकास के लिए महत्वपूर्ण साबित हुए।

जिस प्रकार ब्रुनेलेशी अग्रणी वास्तुकार थे उसी प्रकार दोनातेलो महानतम शिल्पकार थे। उनकी कृतियों ने इस क्षेत्र में नई दिशा दी। ये कलाकृतियां ऊर्जा और भाव से परिपूर्ण थीं। इनमें एक जोश और सचाई थी जैसा कि डेविड की कांस्य की मूर्ति से स्पष्ट है। दोनातेलो ने प्रकृति के चित्रण के मामले में अपने पूर्ववर्तियों की सौम्य परिष्कृति के स्थान पर प्रकृति का एक नया और जोशपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने शरीर रचना विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित किया। उनका यह भी मानना था कि खूबसूरती अनुपात का मामला है। पुनर्जागरण कलाकारों की खूबसूरती के प्रति यही दृष्टिकोण पुनर्जागरण काल की कला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।

पुनर्जागरण का चरम काल

पंद्रहवीं सदी के अंतिम दशक में इतालवी कला के क्षेत्र में प्रमुख परिवर्तनों का आरंभ देखा गया। लगभग सन 1490-1520 का समय 'पुनर्जागरण का चरमकाल' कहलाता है। पुनर्जागरण के आरंभ में प्राचीन काल की कला का बेढंगे तरीके से अनुकरण किया जाता था। इसे सौंदर्य और यथार्थ के प्रस्तुतीकरण के स्रोत के रूप में उपयोग किया जाता था। पुनर्जागरण के चरम रया शीर्ष काल के दौरान इस कला का वैज्ञानिक और आलोचनात्मक ढंग से विश्लेषण किया गया जिससे कलात्मक सृजन पूर्णता के स्तर तक पहुंच गया। शिक्षित मानववादी और नगर-राज्यों के संभ्रांत वर्ग के लोग नए विचारों को समझते और इसका मूल्यांकन करते थे। दरअसल 1450 के दशक के करीब से परिवर्तन, खास तौर पर

चित्रकला के क्षेत्र में देखा जाने लगा। इसके पहले की कला मानववाद द्वारा प्रभावित और संशोधित थी। भित्तिचित्रों का समय गोजोली और गिरलांदजो से आरंभ हुआ हुआ। कैशल आंद्रे के विचार में पुनर्जागरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता 'अनेक खानों में गहरे रूप में विभक्त अनुशासनों' की प्रवृत्ति थी। भिन्न-भिन्न अनुशासन जैसे, मानववादी भाषाविज्ञान का 'सार्वभौम मनुष्य', कला की तकनीकी और वैज्ञानिक सिद्धांत, शरीर रचना विज्ञान, अनुपात बोध को व्यक्त करने के लिए ज्यामितीशास्त्र का उपयोग, पौराणिकता और अलंकार एक-दूसरे क्षेत्रों से बंधते जा रहे थे और यही पुनर्जागरण काल का प्रतीक चिह्न था।

'शीर्ष पुनर्जागरण' काल में कला और वास्तुकला का ध्यान प्रकृति की चाक्षुष और सैद्धांतिक जीत पर केंद्रित था। यह लियोनार्दो, मिशेल एंजेलो, रेफेल, ब्रामेंते और कई अन्य व्यक्तियों की प्रतिभा और कौशल को व्यक्त करती थी। पुनर्जागरण कला की हाल की व्याख्या से दो अलग-अलग विचार सामने आए हैं। पहला विचार इस शैली के वास्तव में पुराशास्त्रीय गुण पर बल देता है। इसमें चौथी और पांचवीं सदी ईसापूर्व की ग्रीक कला, जिसकी आध्यात्मिक और औपचारिक महत्ता थी, और समन्वय और समतोल का योग है। इतने समन्वय और समतोल उत्तरपुराशास्त्रीय कला के इतिहास में कभी भी नहीं थे। यह पुराशास्त्रीय नमूनों पर निर्भरता के साथ मानव आकृतियों में प्रस्तुत सांसारिक खूबसूरती में कलाकारों की व्यक्तिगत रुचि दरशाती है। दूसरा मत इस बात पर बल देता है कि वास्तु जैसे क्षेत्रों ने प्राचीन नमूनों को कभी भी पुनः प्रस्तुत नहीं किया। ये मानववाद के विद्वानों की तुलना में अपने युग की सचाई के बारे में अधिक जानकारी देते हैं। वे पुरानी परंपराओं का विकास नकल के रूप में नहीं बल्कि सर्जक के रूप में करना चाहते थे। यद्यपि इस युग का वास्तुशिल्प प्राचीन सिद्धांतों पर आधारित था, लेकिन अलंकरण समकालीन रुचि के अनुसार किया जाता था। कला इतिहासकार ए. विट्टकोवर के अनुसार पुनर्जागरण काल की वास्तुकला की विषयवस्तु प्राचीन मध्यकालीन और बाइजैंटाइन वास्तु रूपों से ली गई थी। स्तंभों पर बने मेहराब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्रिस्चियन बैसिल्काज से लिए गए थे जो प्रकारांतर से बाद के दिनों की प्राचीन संरचनाओं की कला पर निर्भर थे। पुनर्जागरण काल की प्रतीकात्मक मेहराबदार छतें, ऊंचे गुंबद और वर्गाकार क्रॉसिंग और गुंबदों के वृत्त के आकार के बीच संक्रांति बाइजैंटाइन शैली से प्रभावित थी। पुनर्जागरण काल के स्थापत्य के प्रमुख आदर्श सरल ज्यामितीय आकृतियों की सममिति और नियमितता, अलग-अलग पिंडों की अखंडता और अभिव्यक्ति की स्पष्टता के जरिए विभिन्न स्रोतों की पूर्णता में प्रतिबिंबित होते थे। नगर योजना और बागीचे का ढांचा स्थापत्य के दो ऐसे रूप थे जिनका विकास पुनर्जागरण के अंतिम दिनों में हुआ। अनुपात के नियमों के जरिए अलबेर्ती की परंपरा जारी रखी गई। समन्वय और संतुलन पुनर्जागरण कला की उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। चित्रकला के क्षेत्र में प्राचीन नमूनों की अनुपस्थिति के कारण कला की अंतर्वस्तु ग्रीक और रोमन मिथक और ऐतिहासिक विषयवस्तु से ली गई थी। पुनर्जागरण के चित्रों में कुछ

अलंकरण की बारीकियां होती थीं लेकिन ये किसी भी हाल में नकल नहीं होती थीं। चित्रों से परिपक्वता और भव्यता झलकती थी जो निरंतर प्रयोगों और अभिव्यक्ति की तीव्रता से आई थी।

इटली में पुनर्जागरण की पराकाष्ठा के समय (1490 के दशक से 1520 के दशक तक) तीन महान कलाकारों—लियोनार्दो द विंची, मिशेल एंजेलो और रेफेल की कृतियां ही सबसे महत्वपूर्ण थीं। उन्होंने कला की दुनिया में नए मानक स्थापित किए। लियोनार्दो द विंची (1452–1519), जो फ्लोरेंस के शायद महानतम कलाकार थे, पुनर्जागरण की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्तित्व माना जाता था। वह एक चित्रकार, वास्तुकार, अभियंता, संगीतकार, गणितज्ञ, सैन्य और हाइड्रॉलिक अभियंता, कवि और वैज्ञानिक के मूर्त रूप थे। वह गरीब सामाजिक पृष्ठभूमि के थे और अपने जीवन की शुरुआत एक कलाकार की दुकान से की। लेकिन शीघ्र ही लोरेंजों और मेदिची का संरक्षण प्राप्त हो गया। उन्होंने पूर्व के कलाकारों खास तौर पर ब्रुनेलेशी द्वारा आरंभ किए गए प्रयोग की परंपरा को जारी रखा। उनकी कृति मानव शरीर के अंगों के गहन अध्ययन और बड़े पैमाने पर प्रयोगों पर आधारित थी। इन प्रयोगों में मानव शरीर की चीर-फाड़ करना भी शामिल था। उनकी रचनाएं चार अलग-अलग कालखंडों में विभक्त हैं। उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत फ्लोरेंस में की और वहां 1482 तक कार्य किया। फिर वे मिलान चले गए। वहां 1499 तक रुके। इसी वर्ष जब फ्रांसीसी सैनिकों ने इस शहर पर आक्रमण किया वह फ्लोरेंस लौट आए और वहां 1506 तक कार्य किया। फ्रांसीसी राजा, फ्रैंसिस प्रथम का निमंत्रण स्वीकार करने के लिए पहले वे कुछ समय मिलान में रुके। अंततः फ्रांसीसी राजा के दरबार में ही जीवनपर्यंत कार्य किया। वह प्रकृति के बिलकुल सही-सही अनुकरण में विश्वास करते थे। उन्होंने खुद अपनी कृतियों का सृजन प्रकृति के अध्ययन के आधार पर किया। मानव शरीर की रचना का उनका विश्लेषण अद्भुत था क्योंकि यह मनुष्य की लाशों के चीर-फाड़ के उनके व्यक्तिगत प्रयोग पर आधारित था। प्रकृति के प्रति उनका प्रेम पूजा के समान था। उनकी श्रेष्ठ कृतियों में *दि वर्जिन ऑफ दि रॉक्स*, *दि लास्ट सपर* और *मोनालिसा* (ला जियोकोंदा) शामिल हैं। उनकी कृतियां न केवल उनकी असाधारण तकनीकी कौशल और विज्ञान की समझ बल्कि ज्यामितीय संरचना बोध भी दरशाती हैं। चित्रकला में छोटी-से-छोटी वस्तु भी बिलकुल सही ब्यौरे के साथ प्रस्तुत की गई है। *द लास्ट सपर* का चित्र मिलान में एक भोजनालय की दीवारों पर बनाया गया था। उन्होंने इसमें चित्रित पात्रों की अंदरूनी प्रतिक्रिया को बखूबी पेश किया है। हर पात्र एक भाव, एक मनोवेग को उजागर करता है क्योंकि यह चित्र ईसा मसीह को दिए गए धोखे से संबंधित है। मोनालिसा एक ऐतिहासिक चित्र बन गया है। यह शाश्वत सौंदर्य की प्रस्तुति है। गौण पात्रों का प्रमुख और गौण निरूपण, संरचना बोध और रोशनी और छांव का प्रयोग विंची की कला की निशानियां हैं। एक वास्तुकार के रूप में उन्होंने मेदिची का निवास और मिलान के चर्च का

निर्माण किया। 1883 में मिले मानव शरीर की रचना के खाकाचित्रों और कुछ अन्य चित्रों वाले एक नोटबुक से उनके वैज्ञानिक दिमाग का पता चलता है क्योंकि इसमें करघा, चरखा और यहां तक कि हवाई जहाज की रूपरेखा थी।

पुनर्जागरण के अंतिम दिनों के एक और महान कलाकार मिशेल एंजेलो बोनारोती (1475–1564) थे। विंची के समान ही वह भी फ्लोरेंस के रहने वाले थे, लेकिन जहां विंची प्रकृतिवादी थे वहीं मिशेल एंजेलो एक आदर्शवादी। वह अमूर्त सचाइयों को व्यक्त करना पसंद करते थे। वह एक टस्कन थे। उन्हें अपने खानदान पर नाज था क्योंकि वह बैंकरों के परिवार से थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे क्योंकि वह एक चित्रकार, शिल्पकार, वास्तुकार और कवि थे। अदृश्य सच को समझने की उनमें असाधारण शक्ति थी। मिशेल-एंजेलो मनुष्य की क्षमता के प्रति मानववादी आकर्षण को बड़ी खूबसूरती से व्यक्त करते थे। वह सशक्त चरित्रों के माध्यम से मानव आकृतियों खास तौर पर पुरुषों का चित्रण करते थे। कलात्मक कार्यों में उनकी सेवा लेने के लिए राजकुमार और पोप प्रतिस्पर्द्धा करते थे। फ्लोरेंस नगर के अधिकारियों ने इन दोनों महान कलाकारों को टाउन हॉल के परिषद भवन की दीवारों पर अपने इतिहास से एक कहानी के चित्रण के लिए आमंत्रित किया। कला के इतिहास में यह एक महान क्षण था लेकिन शीघ्र ही मिशेल एंजेलो को पोप के निमंत्रण पर रोम जाना पड़ा। उन्हें वहां एक विशालकाय मकबरे का निर्माण करने के लिए बुलाया गया था। मिशेल एंजेलो तुनकमिजाज थे और जल्दी ही आपा खो देते थे। उम्र बढ़ने के साथ यह स्वभाव और भी बढ़ता गया। उनकी प्रशंसा की जाती थी। उनकी तुनकमिजाजी और अबाध स्वतंत्रता से लोग डरते भी थे। उन्होंने पोप जुलियस द्वितीय द्वारा दिए गए कला कार्य को छोड़ दिया लेकिन बाद में पोप द्वारा आश्वस्त किए जाने के बाद व कुछ अंतराल के बाद काम पर लौट आए। अतः उनके चित्रों में दो अलग-अलग शैलियों और मानव स्थिति की प्रस्तुति की झलक है। चित्रकला में उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि सिस्टाइन चैपेल की छत का चित्र (1508–1512) है। यह *बुक ऑफ जेनेसिस* के एक दृश्य का चित्रण है जो एक ही स्थान पर चित्रों का संकेंद्रण दिखाता है। ग्रीक शैली के प्रति अपनी प्रतिबद्धता बनाए रखते हुए उन्होंने समन्वय, एकात्मकता और गरिमा के सिद्धांतों का अनुसरण किया। उनकी सुप्रसिद्ध कलाकृति *लास्ट जजमेंट* सिस्टाइन चैपेल की वेदी की दीवारों पर बना भित्तिचित्र है। इसने मिशेल एंजेलो को वह ऊंचाई दी जो उनके पहले किसी को नसीब नहीं हुई थी। उनके जीवन और मनोदशा में परिवर्तन का उनकी कृति पर बहुत बड़ा प्रभाव था। बहरहाल जिस मकबरा के निर्माण के लिए उन्हें रोम आमंत्रित किया गया था उसे वह पूरा नहीं कर सके। सेंट पीटर्स चर्च जैसी विशाल परियोजना के वित्तपोषण के लिए बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यकता थी। पोप जुलियस ने धन जमा करने के लिए पूरे यूरोप में राजाओं, जमींदारों और बिशपों से अपील की। यह विडंबना ही है कि इस मसले ने प्रोटेस्टेंट आंदोलन की चिनगारी सुलगा दी। इसके अलावा मिशेल एंजेलो की परियोजना 1527 में

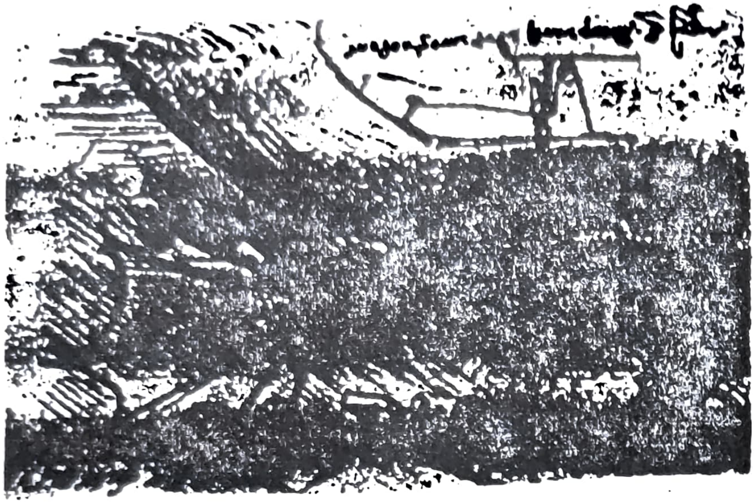

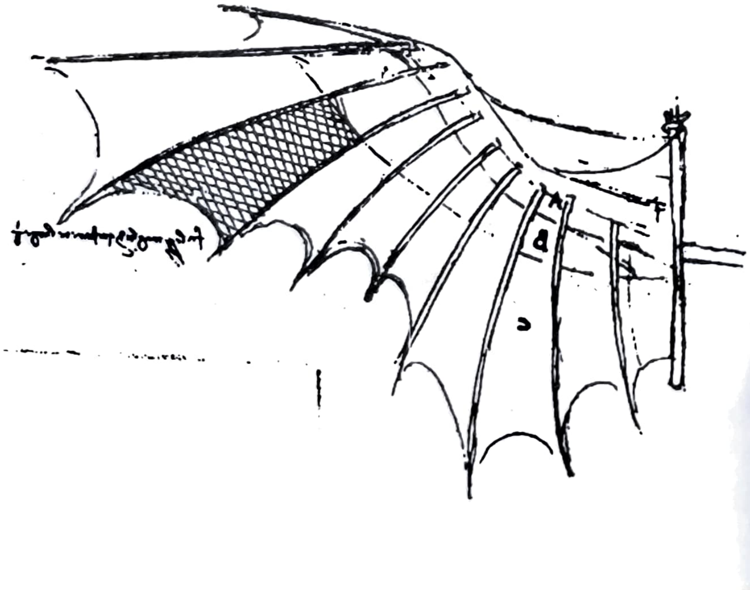

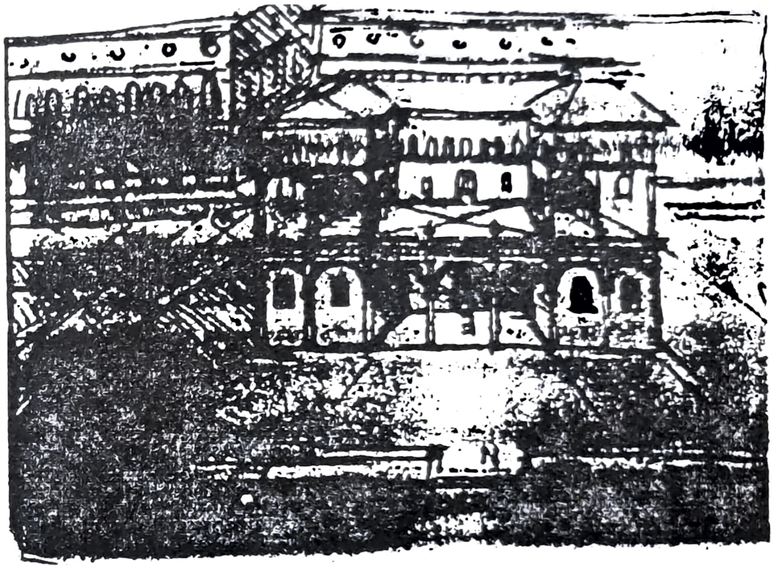

चार्ल्स पंचम द्वारा रोम के आक्रमण से बहुत गंभीर रूप से बाधित हुई। इस आक्रमण ने नगर को पूरी तरह तहस-नहस कर दिया और वित्तीय संकट खड़ा कर दिया। मिशेल एंजेलो एक प्रतिभावान कवि के रूप में भी याद किए जाते हैं। उन्होंने कई कविताएं लिखीं। खास तौर पर प्यार की कविताओं में 343 चतुर्दशपदी छंद, गीत और कैपिटोली (व्यंगात्मक छंद) शामिल हैं। एक शिल्पकार के रूप में उनकी सबसे बड़ी कृतियां *रिबेलियस स्लेव* और *डेविड* हैं। डेविड साढ़े पांच मीटर ऊंची मूर्ति है जो मानव आकृति की खूबसूरती की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। इसे फ्लोरेंस सिटी हॉल के सामने लगाया गया ताकि यह नगर के मानववादी मूल्यों को प्रदर्शित कर सके। अन्य कृतियों में *मैडोना ऑफ दि स्टेयर्स*, *बैटल ऑफ सेंटार्स*, *मैडोना एंड चाइल्ड*, *अपोलो*, *मोजेल* और *विक्टरी* शामिल हैं। एक वास्तुकार के रूप में उन्होंने *लियो दशम के चैपेल* और *सेंट पीटर के गुंबद* का निर्माण किया।

फ्लोरेंस के दो महान कलाकार, लियोनार्दो और मिशेल एंजेलो जब एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा कर रहे थे, एक अन्य महान कलाकार ऊर्बिनो नगर में उभरे। वह कलाकार रेफेल सैंजियो (1483-1520) थे। वह *अंब्रियन स्कूल* के शिष्य थे। उन्होंने अपनी कला उस क्षेत्र के एक विख्यात कलाकार पियेत्रो पेरूगिनो से सीखी थी। उन्होंने वेदी पट पर चित्रांकन में महारत हासिल किया था। थोड़े ही समय में रेफेल ने कला जगत में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया। वह खूबसूरत, बुद्धिमान और कुलीन पात्रों का चित्रांकन करना पसंद करते थे। 37 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई लेकिन अपने छोटे-से जीवनकाल में उन्होंने विविध और महान कलात्मक उपलब्धियां हासिल कीं। उन्होंने कई भवनों की रूपरेखा बनाई और रोम के भग्नावशेषों का अध्ययन किया। अपने समय के विद्वानों और महान हस्तियों से उन्होंने अपने संपर्क बनाए। पोप के चर्च में उनकी बड़ी इज्जत थी। उन्होंने एक धनाढ्य बैंकर अगोस्तिनो चिगी के बंगले में फ्लोरेंस के एक कवि की कविता पर आधारित भित्तिचित्र बनाया। उनकी कला न केवल संरचना की गुणवत्ता बल्कि आकृतियों की खूबसूरती और प्रकृति का एक संजीदा चित्रण प्रस्तुत करती है। वह टेपेस्ट्री कार्टून्स और मेडोना पेंटिंग्स के लिए भी जाने जाते हैं। उनकी चित्रकारी स्वाभाविक और खूबसूरती की मिसाल लगती है। *मेडोनो डेल ग्रैंडुका* पुराशास्त्रीय नमूने पर आधारित एक चित्रकारी है। कई पीढ़ियां इसे पूर्णता का मानक मानती थीं। यह कलाकार की नाजुक भावना को पेश करती है क्योंकि उन्होंने बालक ईसा को बहुत-ही सही और आकर्षक मुद्रा में चित्रित किया है। उन्होंने वैटिकन चर्च की दीवारों और कई कमरों की छतों को भित्तिचित्र से सुसज्जित किया है। यह डिजाइन और संतुलित रचना में उनकी प्रवीणता दरशाती है। उनकी चित्रकारी पुराशास्त्रीय शिक्षा और प्रयोगधर्मिता का संश्लेषण प्रस्तुत करती है।

इस प्रकार महान इतालवी कलाकार वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य की खोज, मानव रचना विज्ञान का ज्ञान, जिनका उपयोग खूबसूरत मानव आकृतियों के निर्माण के लिए किया जाता था, भव्यता और अनुपात बोध को दरशाने वाले भवनों के पौराणिक रूपों का ज्ञान और कलात्मक

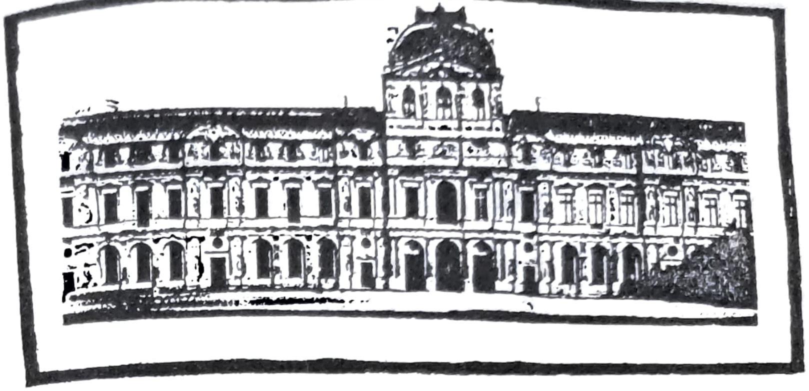

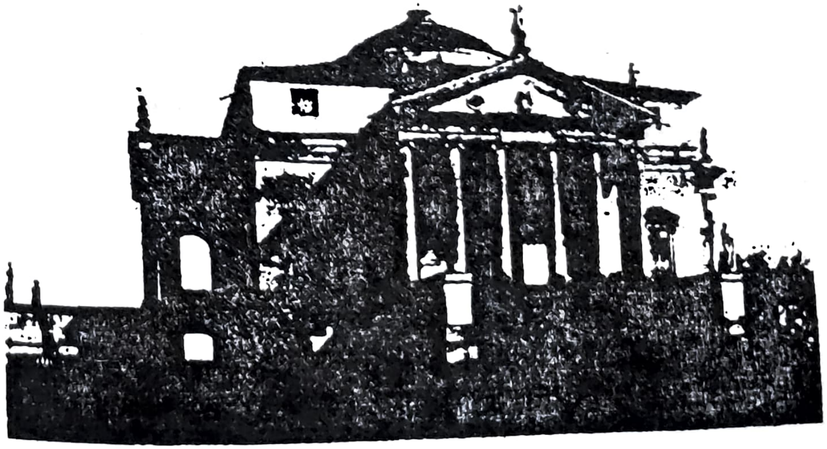

1550 में पैलेडियो द्वारा बनाया गया
सोलहवीं सदी का एक इतालवी महल : विसेंजा के निकट रोतोंदा विला

रचनाओं में ज्यामिती के निरंतर उपयोग के द्वारा ठोस उपलब्धियां दरशाते हैं। पुनर्जागरण के समय की चित्रकारी और शिल्पकला की एक उल्लेखनीय विशेषता थी नग्न मानव शरीर के चित्रों और मूर्तियों का निर्माण क्योंकि मानववादी मानते थे कि मनुष्य ईश्वर की सबसे खूबसूरत रचना है।

इटली के बाहर पुनर्जागरण काल की कला-

जैसा कि उत्तरी यूरोप में मानववाद की अपनी अलग विशेषताएं थीं, इटली के बाहर कलात्मक विकास अकसर इतालवी कला से प्रभावित होते थे, लेकिन कलात्मक रचनाओं की शैली और विषयवस्तु के निर्धारण में अलग-अलग क्षेत्रों की विचित्रताओं की भी भूमिका थी। गोंबरिच ने अपनी पुस्तक *अ क्राइसिस ऑफ आर्ट* में कहा है कि जर्मनी, हॉलैंड और इंगलैंड जैसे उत्तरी देशों में कलाकारों को वास्तविक संकट का सामना करना पड़ रहा था। उनके सामने यह प्रश्न था कि चित्रकारी की जाए या नहीं। यह संकट सुधारवादी आंदोलन के कारण आया था क्योंकि बहुत से प्रोटेस्टेंट सुधारकों को चर्च में संतों की मूर्तियों या चित्रों के निर्माण पर आपत्ति थी। वे इन चित्रों को संत पोप संबंधी मूर्तिपूजा का प्रतीक मानते थे। फलस्वरूप कलाकारों ने संरक्षण का एक बड़ा महत्वपूर्ण क्षेत्र खो दिया। कट्टर कैलविनिस्टों ने सभी प्रकार के प्रदर्शन और सजावट, यहां तक कि कला के रूप में सजावट पर आपत्ति की। इसके अलावा उत्तर में भवनों की शैली भी विशाल भित्तिचित्रों से सजावट के अनुकूल नहीं थी, जैसी कि इतालवी महलों में सजावट की गई थी। नतीजतन इटली के बाहर कलात्मक सर्जना चित्रकारी तक सीमित हो गई। फिर भी सोलहवीं सदी के धार्मिक उथल-पुथल के पूर्व कला के विकास ने यूरोप के कुछ भागों में नई ऊंचाई हासिल कर ली।

बरगंडी के दरबार में कला और पुनर्जागरण संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केंद्र विकसित हुआ। यह एक छोटा-सा ड्यूक क्षेत्र था जो फ्रांसीसी नियंत्रण से खुद को मुक्त कराने की कोशिश कर रहा था। पंद्रहवीं सदी के मध्य में अनेक दरबारी और विद्वान, कलाकार और संगीतकार इस दरबार में आए। बरगंडी के ड्यूक महान कलाकारों और वास्तुकारों को आमंत्रित करते रहते थे। एक डच शिल्पकार, क्लाऊस स्लूटार (1350-1406) को चैंपमेल के महिला मठ (कांवेंट) की सजावट के लिए नियुक्त किया गया। जान वान इयैक (1390-1441) इस दरबार के सबसे प्रसिद्ध कलाकार थे। उन्हें छविचित्र कला (पोर्ट्रेट पेंटिंग) के लिए खास तौर पर जाना जाता था। उन्होंने कई दरबारियों का चित्र बनाया। इतालवी कलाकार भी उनकी प्रशंसा करते थे। फिर भी परिप्रेक्ष्य और आकृति के प्रति वे उतने सजग नहीं थे जितने इटली के कलाकार।

नीदरलैंड में भी कला का एक महत्वपूर्ण केंद्र विकसित हुआ। जेरॉम हीरोनिमस

बोश्यक (1450-1516) एक अन्य मशहूर चित्रकार थे। अपनी कलाकृतियों में उन्होंने आश्चर्यजनक कल्पनाशीलता का परिचय दिया है। धार्मिक विषयों से संबंधित अपने चित्रों में भी उन्होंने न केवल संतों के चित्रांकन पर बल्कि बहुत-सी साधारण बातों पर भी ध्यान दिया है। उन्होंने मनुष्य की पापमयता का विरूप-चित्रांकन और स्वार्थ की क्रूरताओं को प्रस्तुत किया है। नीदरलैंड के एक अन्य जाने-माने चित्रकार रैम्ब्रैंट वा रिज्न (1606-1667) थे। जैसा कि यह स्पैनिश शासन के खिलाफ डच प्रतिरोध और बुर्जुआ की जीत का समय था इसलिए कलात्मक विषयवस्तुओं में भी राजनीतिक जीवन के इसी पहलू का चित्रण हुआ है। इस क्षेत्र में व्यापारियों के अल्पतंत्र का दबदबा था। रैम्ब्रैंट राजनीतिक स्थिति से घबरा गए लेकिन उन्होंने साधारण लोगों, उनके चरित्र और भावनाओं और कुछ धार्मिक विषयों के चित्रांकन पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने पोर्ट्रेट पेंटिंग के क्षेत्र में नाम कमाया। माना जाता है कि उन्होंने कोई सौ अपनी तस्वीरें बनाईं।

अल्ब्रेक्ट ड्यूरर (1471-1528) उत्तरी पुनर्जागरण के एक और महान कलाकार थे। वह एक विख्यात सोनार के बेटे थे। वह हंगरी से आए थे और जर्मनी के न्यूरेमबर्ग नगर में बसने का निर्णय किया था। उनमें चित्र बनाने की अद्भुत प्रतिभा थी। उन्हें काष्ठचित्र कला की विशिष्टता हासिल थी। अपनी कला में निपुणता हासिल करने के लिए उन्होंने स्विट्जरलैंड में बास्ल सहित सदूर क्षेत्रों की यात्रा की। न्यूरेमबर्ग पुस्तक व्यापार का एक महत्वपूर्ण केंद्र था। वहां उन्होंने कुछ पुस्तकों के लिए कुछ काष्ठचित्र बनाए। उन्होंने तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्तरी इटली की भी यात्रा की। ड्यूरर ने इतालवियों से न केवल प्रेरणा ली बल्कि अपने काष्ठचित्रों और नक्काशियों से उन्हें भी प्रभावित किया। उनकी नक्काशी की तकनीक रैंमोंडी से काफी प्रभावित थी। उनके भूदृश्यों के चित्रांकन ने अनेक इतालवी चित्रकारों को प्रेरित किया। उन्होंने अनेक माध्यमों में प्रयोग किया। वह जानवरों और वनस्पति जीवन के खूबसूरत वाटर कलर चित्रकारी के लिए जाने जाते हैं। वह धार्मिक विषयों की अनोखी नक्काशी और महान काष्ठचित्रों के लिए भी मशहूर हैं। उनकी कला उत्तरी और दक्षिणी परंपराओं का मिश्रण है, उदास और दैवी मनोवेग का मिश्रण। उन्होंने आइने में देखकर अपने बहुत-से चित्र बनाए। उनकी मशहूर कृतियों में *वर्जिन एंड चाइल्ड, आदम, दि फॉल ऑफ मैन, दि फीस्ट ऑफ रोज गार्डेन* और *सेल्फ पोर्ट्रेट* शामिल हैं। काष्ठचित्र की तकनीक जर्मनी में पहले से ही मशहूर थी लेकिन ड्यूरर के चित्रों में इसने अभिव्यक्ति की नई ऊंचाइयों को छुआ। उनके चित्रों में त्रिआयामीय आकर्षण था जो पहले के काष्ठचित्रों में नहीं देखा गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने परिप्रेक्ष्य का उपयोग करना इतालवियों से सीखा था। इतालवी कलाकारों के समान ही मनुष्य के नग्न रूपों के प्रति उनमें भी आसक्ति थी लेकिन उनके नग्न मानव चित्र अंजीर के पत्तों के द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं। यह उत्तरी यूरोप की रूढ़िवादी परंपराओं के प्रति सम्मान दरशाता है। अनुपात और परिप्रेक्ष्य पर उनका शोध प्रबंध *टीचिंग ऑफ मेजरमेंट* 1532 में प्रकाशित हुआ। बाद

में इसका लैटिन में अनुवाद हुआ। शायद इरेस्मस के ईसाई आदर्शों का उनकी शैली पर गहरा प्रभाव था।

पुनर्जागरण कलाकारों की दूसरी पीढ़ी में हैंस हॉलबेन (1497–1543) का नाम शामिल किया जा सकता है। वह एक जर्मन कलाकार थे जिन्होंने सुधार के रूप में धार्मिक उथल-पुथल के कारण जर्मनी छोड़ दिया। वह लंदन में आकर बसे और हेनरी अष्टम के दरबारी चित्रकार बन गए। बाद में प्लेग से उनकी मृत्यु हो गई। इंगलैंड में उनकी कलात्मक संभावना सीमित थी। दरबारी चित्रकार का काम मैडोना की नैसर्गिक सुंदरता की चीजों को चित्रित करना नहीं बल्कि आभूषणों और शाही फर्नीचर की डिजाइन तैयार करने, समारोहों के अनुकूल वस्त्रों के निर्माण, शाही महल और इसके हॉल को सजाने और शाही हथियारों पर कलात्मक चित्रकारी करने में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करना था। हॉलबेन एक चतुर और महत्वाकांक्षी चित्रकार थे। उन्होंने अपना ध्यान पोर्ट्रेट पेंटिंग पर केंद्रित किया जो कि इंगलैंड में कला का एक लोकप्रिय रूप था। उन्होंने इरेस्मस के साथ गहरी दोस्ती बना ली थी। उनकी सिफारिश पर वह थामस मोर के साथ रहे। उन्होंने इन दोनों शख्सियतों की तस्वीरें बनाईं। वह कुशल लघुचित्र चित्रकार थे और अपने चित्रों में करीब-करीब फोटोग्राफी की-सी सचाई हासिल की। उनके मशहूर चित्रों में *थामस मोर*, *द एंबेसडर* और *किंग हेनरी अष्टम* शामिल हैं।

फ्रांस में पुनर्जागरण की अपनी एक अलग विशेषता थी। लूई सप्तम और फ्रैंसिस प्रथम विद्वत्ता और कला के बहुत बड़े संरक्षक थे। 1515 में फ्रैंसिस ने मारिग्नेनों तक सैन्य नेतृत्व किया जिससे मिलान पर जीत हुई। इससे उन्हें विंची की चित्रकारियों सहित महान कलाकृतियों को देखने का अवसर मिला। अगले वर्ष उन्होंने बूढ़े विंची को निमंत्रण भेजा। महान इतालावी कलाकार लियोनार्दो द विंची को 7,000 स्वर्ण मुद्राएं और फ्रांस के किसी भी क्षेत्र में अपनी पसंद का महल देने का वादा किया गया। फ्रैंसिस बड़ी संख्या में कलाकारों और वास्तुकारों को अपने यहां बुलाने में सफल रहे। डच प्रोर्ट्रेट पेंटर जान क्लॉट भी फ्रांसीसी कला संग्रह में योगदान देने के लिए फ्रांस में रहते थे। फ्रैंसिस ने अपने महल की दीवारों को भित्तिचित्र से सजाने के लिए अनेक अन्य इतालवी चित्रकारों को भी बुलाया। इनमें एंद्रे देल सार्तो, बेनिवेंजुवा सेलिनी, एल रोसो और फ्रैंसेस्को प्राइमातिसियो के नाम शामिल हैं, जो उनके दरबार में आए थे। लआर नदी के किनारे बने किले फ्रांस में स्थापत्य का विशिष्ट उदाहरण थे। फ्रैंसिस और उनके कुलीनों ने मशहूर एंबोइस, चैंबर्द और शेनोंसिएक्स के किले बनवाए थे। इन संरचनाओं में गोथिक शैली और पुनर्जागरण के नए स्थापत्य का सम्मिश्रण था। गोथिक शैली मध्यकालीन फ्रांस में बहुत प्रचलित थी। फ्रांस की भव्य इमारतों में इस शैली का खूब प्रयोग हुआ था। वहीं पेरिस में लूव्र और इसके निकट फांतेनब्ल के नए शाही महल पुनर्जागरण की कुछ भव्य संरचनाएं थीं। पीयर लेस्कॉत ने लूव्र की रूपरेखा तैयार की थी। स्थापत्य की इतालवी पौराणिक शैली से इसकी गहरी समानता

थी। शातो (किला) जीवन ने समृद्ध संस्कृति वाले एक आदर्श दरबारी समाज का निर्माण किया था जिसकी कास्तिग्लियों ने कल्पना की थी।

पुनर्जागरण काल के दौरान बागवानी पर ध्यान दिया गया था। बोलोना के एक सीनेटर क्रिस्सेंजियो ने चौदहवीं सदी के आरंभ में ग्राम्य जीवन और बागवानी के बारे में लिखा था जो कि फ्लोरेंस में 1471 में प्रकाशित किया गया था। पहला जैविक उद्यान पीसा में 1543 में और दूसरा पादुवा में 1545 में बना। यद्यपि बागवानी कला का विकास सर्वप्रथम इटली में हुआ, उद्यानिकी और पुष्प बागवानी के रूप में इसमें परिपूर्णता हालैंड ने हासिल की। लीडेन का बागीचा 1577 में बनना शुरू हुआ। इसमें नए-नए पौधे लगाए गए। बाहर जाने वाले जहाजों के कप्तानों को दुनिया के सभी भागों से बीज और पौधे लाने के निर्देश दिए गए थे। शीघ्र ही इस बाग में 6,000 प्रजाति के पौधे एकत्र हो गए। कुछ वर्षों बाद फ्रांस ने भी मांतपेलियर में एक विशाल बाग का निर्माण किया।

संगीत

जहां इटली कला और स्थापत्य के क्षेत्र में एक प्रेरणा स्रोत था, संगीत के क्षेत्र में प्रवृत्ति बिलकुल विपरीत थी। संगीत के विकास में उत्तरी यूरोप खास तौर पर फ्लैंडर्स ने नया मानक स्थापित किया। पुनर्जागरण पूर्व काल में इटली और फ्रांस में फ्रैंसेस्को लैंडिनी (1324–1397) और ग्विलाम मैशुएटत (1300–1377) जैसे संगीतकारों ने संगीत में प्रयोग किए थे। उन्होंने संगीत का एक स्कूल *आर्स नोवा* आरंभ किया था। फलस्वरूप 1450 और 1600 के बीच संगीत कला का बहुत तेजी से विकास हुआ। इस विकास का बहाव उत्तरी यूरोप से इटली की ओर था। संगीत में बढ़ती रुचि किसी खास स्थान तक सीमित नहीं थी। इसे उत्तरी यूरोप के कई दरबारों में देखा जा सकता था। बाद में यह इटली के राज्यों में फैल गई। यहां उत्तरी संगीत की न केवल प्रशंसा की जाती थी बल्कि प्रयोगों और नई तकनीकों से इसका विकास भी किया गया।

बहुध्वनिक संगीत की तकनीक का विकास फ्लेमिश संगीतकारों के एक समूह द्वारा पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में किया गया। इसे दूसरे फ्लेमिश स्कूल के रूप में जाना जाने लगा। पहला स्कूल बरगंडी के दरबार में विकसित हुआ था। डफे एक अन्य जाने-माने संगीतकार थे जो कांस्टेंस के चर्च परिषद में वृंदगान गाते थे। इतालवी उनकी बहुत प्रशंसा करते थे। नीदरलैंड्स में उन्होंने बहुध्वनिक संगीत की परंपरा (एक आकर्षक और जटिल शैली जिसमें अनेक आवाजें अपने अलग-अलग सुर का अनुसरण करती थीं) की स्थापना की। उनके सबसे मशहूर शिष्य ओकेघम थे।

फ्लेमिश स्कूल के ख्यातिलब्ध नाम जॉन ओकेघम (1430–1495) और जेकब ओब्रेक्त (1430–1505) थे। ओकेघम फ्रांस के राजाओं के शिक्षक थे। तकनीकी प्रयोगों के जरिए संगीत के क्षेत्र में उन्होंने बहुत बड़ा योगदान दिया। ओब्रेक्त की संगीत प्रतिभा का

विकास एंटवर्प के चर्च में हुआ। एक समय में वह इरेस्मस के संगीत शिक्षक थे। उनका संगीत स्वत:स्फूर्त और सुरीला था। यह उस प्रारूप पर आधारित था जिसे *वोकल आर्केस्ट्रेशन* कहते हैं। उनके गीत बहुत लोकप्रिय थे। चाक्षुष कलाओं के विपरीत, जहां प्राचीन वस्तुओं और साहित्य का अध्ययन कलाकारों और वास्तुकारों को प्रेरित करता था, संगीत का विकास इन आदर्शों से मुक्त था। सोलहवीं सदी के आरंभ में फ्लेमिश संगीतकारों ने अन्य क्षेत्रों खास तौर पर फ्रांस के संगीतकारों के साथ संपर्क बनाना शुरू किया। वहां से वे पूरे यूरोप में दरबारों और गिरजाघरों में फैल गए। नीदरलैंड्स के कैथेड्रल स्कूलों ने ही शेष यूरोप को संगीत की शिक्षा दी।

संगीत का एक और विख्यात स्कूल था जो 'अनुकरण' के सिद्धांत पर आधारित था। इसे ओकेघम की रचनाओं में देखा जा सकता है। संगीत के इतिहासकार उनकी तुलना दोनातेलो से करते हैं। जिस प्रकार दोनातेलो ने शिल्पकला में एक नई शैली की खोज की थी, ओकेघम ने संगीत के एक नए रूप की खोज की। इस बहुध्वनिक संगीत की शैली में अलग-अलग आवाजें एक साथ शुरू नहीं होती थीं बल्कि एक के बाद एक आरंभ होती थी। यह शैली लोचदार संगीत देती थी लेकिन प्रभावोत्पादकता एकल थी। उस काल के संगीत रचनाकारों द्वारा बहुध्वनिक संगीत के जटिल रूपों के सृजन के लिए नए-नए प्रयोग किए जाते थे। एक और सुस्पष्ट प्रवृत्ति गायन संगीत से वाद्ययंत्रों का धीरे-धीरे समाप्त होना था। फलस्वरूप विशुद्ध बेसंगत शैली की शुरुआत हुई। अब पूर्ण ध्यान व्यक्तिगत सुर पर केंद्रित था। पंद्रहवीं सदी के अंत में और सोलहवीं सदी के आरंभ में वर्षों के दौरान संगीत के प्रमुख केंद्र 'निचले' देशों में संकेंद्रित रहे। फ्रांस का दरबार भी संगीतकारों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बन गया। यहां संगीत की विविध प्रवृत्तियां जस्क्विन डेस प्रेस (1450-1521) द्वारा मिला दी गई थीं। उन्होंने अपनी संगीत को अन्यों से अधिक व्यंजनात्मक बनाया। उनका संगीत भावना और शब्दों के अर्थ पर आधारित था। उनकी ख्याति यूरोप के दूरस्थ दरबारों तक फल गई और अन्य क्षेत्रों की संगीत और संगीतकारों पर उनका प्रभाव बढ़ता रहा। उन्हें 'संगीत का राजकुमार' और प्रथम संगीत रचनाकार कहा जाता है। उनकी रचना में एक औपचारिक संतुलन था।

सोलहवीं सदी के दौरान संगीत का विकास इंगलैंड में भी हुआ। ट्यूडर राजा खास तौर पर हेनरी अष्टम और एलिजाबेथ प्रथम बड़े उत्साह के साथ संगीत को संरक्षण प्रदान करते थे। अंगरेज संगीतकारों ने न केवल इटली में मैड्रिगल संगीत को अपनाया बल्कि गीतों और वाद्य यंत्रों के सृजन के रूप में संगीत को पूर्णता भी दी। विलियम बाइर्ड (1543-1623) इंगलैंड के मशहूर संगीतकार थे। उनकी तुलना नीदरलैंड्स और इटली के संगीतकारों के साथ की जा सकती है। एलिजाबेथ के समय में संगीत काफी धर्मनिरपेक्ष हो गया। पहले संगीत की रचना केवल चर्च के लिए ही की जाती थी। बाद में इसकी लोकप्रियता जमींदारों के घरों और सामाजिक आयोजनों में देखी जा सकती थी।

इटली में संगीत के दो प्रमुख केंद्र थे जो रोम और वेनिस में स्थित थे। जहां रोम का संगीत रूढ़िगत और पारंपरिक रहा, वहीं वेनिस के संगीतकार नए प्रयोग करने में विश्वास करते थे। रोमन केंद्रों में धार्मिक वृंदगान पर ध्यान दिया जाता था और इनमें निरपेक्ष भक्ति और गंभीरता का स्वर अपनाया गया था। जियोवानी पियेरलिग्वी डा पालेस्त्रिना (1525-1594) रोम के महान संगीतकारों में से एक थे। वह अपने धार्मिक गीतों के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपनी कई रचनाओं (जिनमें *मैड्रिगल्स*, *मासेस* और *मोटेट्स* शामिल थे) को मुद्रित भी करवाया। जैसा कि वेनिस उत्तरी इटली का बड़ा विश्वनगरीय शहर था इसलिए संगीत वहीं की आबादी की जीवंतता को प्रतिबिंबित करता था। वेनिस की संगीत में जोस्क्विन का प्रभाव भी देखा जा सकता था।

यूरोप में संगीत कलात्मक अभिव्यक्ति के रूप में नई ऊंचाई पर पहुंच गया। यद्यपि हर भौगोलिक क्षेत्र ने अपने संगीतकारों के समूह और संगीत शैली का विकास पर लिया था, फिर भी संगीत का अपने उत्पत्ति स्थान से बाहर भी स्वत:स्फूर्त प्रभाव था। इस प्रकार यह एक यूरोपीय कला के रूप में उभरा। संगीत की रचनाओं की दो अलग-अलग प्रवृत्तियां—धर्मनिरपेक्ष और धार्मिक संगीत काफी लोकप्रिय हो गईं। ये प्रवृत्तियां पुनर्जागरण काल की शिक्षा और प्रयोगधर्मिता की भावना को व्यक्त करती थीं।

अत: पुनर्जागरण का युग पौराणिकता के पुनरुत्थान की अवधि, नए विचारों के निर्माण का काल माना जाता है। इस दौरान साहित्य, शिक्षा और इतिहास लेखन से लेकर कला, स्थापत्य, संगीत और नागरिक गुण तक व्यापक मानवीय गतिविधियां उजागर हुईं। इसने पौराणिक आदर्शों को पुन: प्रस्तुत किया, राजनीतिक संस्थानों का विश्लेषण किया और मानव समाज में नई रुचि पैदा की। यह काल विभिन्न विचारों और प्रतिभा को प्रस्तुत करता है जिसका समयुगीन दुनिया के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण था। प्रयोगधर्मिता और कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करके इस आंदोलन ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रवृत्तियों की शुरुआत की। यद्यपि पुनर्जागरण एक अलग आंदोलन नहीं था और इसकी जड़ें मध्यकालीन अतीत में थीं, अत: इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि इसने आधुनिक युग के अभ्युदय में योगदान किया।

उत्तर पुनर्जागरण कला का विकास दो अलग-अलग आंदोलनों में हुआ : 16वीं सदी में मैनरिज्म (व्यवहार वैचित्र्य) और 17वीं और 18वीं शताब्दी में बरोक (अत्यलंकृत) आंदोलन। मैनरिज्म शैली के लिए प्रयुक्त इतालवी शब्द का पर्याय था। यह पुराशास्त्रीय आदर्शवादी परिपूर्णता के विरुद्ध प्रतिक्रिया था। चित्रकारी के आवेगात्मक प्रभाव पर बल देने और चित्रकार के भावों की अभिव्यक्ति के लिए कला रोशनी का विरूपण और स्थान विषयक ढांचों को प्रदर्शित करती थी और भावात्मक प्रस्तुतीकरण के चरम पैमाने का सृजन करती थी।

पुनर्जागरण की महत्वपूर्ण घटनाएं

1300-21 : दांते द्वारा *दि डिवाइन कामेडी* का लिखा जाना।

1304-14 : जियोतो ने पादुवा स्थित आरेनो चैपेल का विख्यात भित्तिचित्र बनाया।

1304-74 : पेट्रार्क, इतालवी मानववाद के जनक। रोम में उन्हें राष्ट्रकवि का सम्मान दिया गया।

1350 : बोकाचियो ने *दि डेकामेरॉन* लिखा।

1373 : सलुताती को फ्लोरेंस का चांसलर बनाया गया।

1385-1400 : चॉसर द्वारा *कैंटरबरी टेल्स* की रचना।

1400 : *पैनिगरिक ऑन दि सिटी ऑफ फ्लोरेंस* में ब्रुनी ने रोम गणराज्य का इतिहास लिखा।

1401 : लोरेंजो ग़िबर्ती को फ्लोरेंस के बैपटिस्ट्री (चर्च) के दरवाजों के निर्माण के लिए नियुक्त किया गया।

1419 : ब्रुनेलेशी ने फ्लोरेंस में अपनी मशहूर संरचना *फाउंडिंग हास्पीटल* पूरा किया।

1425-52 : ग़िबर्ती ने मशहर *इस्टर्न ब्रांज डोर* का निर्माण पूरा किया।

1434 : जॉन वॉक इंक्क ने *अर्नोल्फिनी वेडिंग* का चित्रांकन किया; कॉसिमो मेदिची फ्लोरेंस में सत्ता में आए।

1452 : लियोनार्दो द विंची का फ्लोरेंस में जन्म हुआ।

1453 : तुर्कों द्वारा कस्तानबुल पर कब्जा के साथ बाइजैंटाइन साम्राज्य का अंत हो गया।

1455 : गुटेनबर्ग के बाइबल और सांध्यगीतों का प्रकाशन।

1469 : मार्सिलियो फिचीनो ने प्लैटोनिक धर्मशास्त्र प्रकाशित किया।

1478 : बोटिचेली का *स्प्रिंगटाइम*।

1484 : बोटिचेली ने *दि बर्थ ऑफ वीनस* चित्र बनाया।

1494 : फ्रांस के चार्ल्स अष्टम ने इटली में मिलान पर आक्रमण किया। अन्य राज्य भी शमिल हो गए और इटली का युद्ध 1538 तक चला। फ्लोरेंस में रिपब्लिकन सरकार की पुनर्स्थापना हुई।

1497 : लियोनार्दो द विंची ने अपना चित्र *दि लास्ट सपर* पूरा किया।

1499 : ब्रामैंटे का मिलान से रोम आना रोम की सांस्कृतिक प्रधानता के आरंभ का संकेत था।

1500 : मिशेल एंजेलो ने रोम में *पियेटा* उत्कीर्ण किया। इरेस्मस की पुस्तक *अडेगिया* प्रकाशित हुई।

1501-4 : मिशेल एंजेलो ने डेविड की स्मारकीय मूर्ति बनाई।

1506 : विंची ने *मोनालिसा* चित्र बनाया।

1508-12 : मिशेल एंजेलो द्वारा वैटिकन स्थित सिस्टाइन छत का निर्माण किया गया।

1511 : इरेस्मस की पुस्तक *प्रेज ऑफ फॉलि* का प्रकाशन।

1513 : मैकियावेली की *दि प्रिंस* का प्रकाशन।

1514 : रेफेल द्वारा *बालाटाज ट्राइंफ* का चित्रांकन।

1516 : थामस मोर की *यूटोपिया*।

1518 : रेफेल ने *क्यूपिड* और *साइक* का चित्रांकन किया।

1527 : स्पेन के शहंशाह चार्ल्स पंचम द्वारा रोम पर आक्रमण।

1528 : कास्तिग्लियों की पुस्तक *दि बुक ऑफ दि कोर्टियर* प्रकाशित हुई।

संदर्भिका

फ्रेडरिक बी आर्ट्ज, *फ्राम द रेनासां टू रोमांटिसिज्म : ट्रेंड्स इन स्टाइल इन आर्ट, लिटरेचर एंड म्यूजिक, 1300-1830*, शिकागो, शिकागो यूनिवर्सिटी प्रेस, 1962. पुनर्जागरण काल की सांस्कृतिक उपलब्धियों और नई प्रवृत्तियों के अध्ययन के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है.

हैंस बेरान, *दि क्राइसस ऑफ दि अर्ली इटैलियन रेनासां*, प्रिंसटन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1966. नागरिक मानववाद और राजनय और बौद्धिक जीवन के बीच संबंध के बारे में जानकारी के लिए यह पुस्तक देखें.

माइकेल बैक्सेंडल, *पेंटिंग एंड एक्सपिरिएंस इन फिफ्टींथ सेंचुरी इटली : अ प्राइमर इन द सोशल हिस्टरी ऑफ पिक्टोरियल स्टाइल*, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972. यह पुनर्जागरण कला के विकास की व्याख्या सुस्पष्ट और वैज्ञानिक ढंग से करती है.

राबर्ट ब्लैक (संपादन), *रेनासां थॉट, अ रीडर*, लंदन और न्यूयॉर्क, राऊतलेज, 2001. यह सभी के लिए अनिवार्य पुस्तक है क्योंकि इसमें पुनर्जागरण के विविध पहलुओं पर सभी विख्यात विद्वानों द्वारा लिखे लेख हैं.

जीन ए. ब्रुकर, *दि सिविक वर्ल्ड ऑफ अर्ली रेनासां फ्लोरेंस* (अनुवाद एस.जी.सीं. मिडलमोर), प्रिंसटन, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1977. इसमें फ्लोरेंस के शहर की भौतिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं और सांस्कृतिक विजय की उत्कृष्ट व्याख्या की गई है.

पीटर बर्क, *पोपुलर कल्चर इन अर्ली मॉडर्न यूरोप*, दूसरा संस्करण, ऑल्डरशाट, -------, 1994. यह पुनर्जागरण के सामाजिक पहलू की नई व्याख्या है.

————, *दि इटैलियन रेनासां*, कैंब्रिज पॉलिटी प्रेस, 1972, संशोधित तृतीय संस्करण, 1987. पुनर्जागरण काल की कला की समृद्धि में योगदान देने वाली सृजनात्मकता, शैली और प्रभावों का विश्लेषण.

जेकब बर्खार्ट, *दि सिविलाइजेशन ऑफ दि रेनासां इन इटली*, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1981 (प्रथम संस्करण 1860)., उन्नीसवीं सदी में यह एक नई व्याख्या है फिर भी इस विषय पर अब तक की सबसे स्वीकार्य विद्वत्तापूर्ण पुस्तक है.

लॉरा सेरेटा, *क्लेक्टेड लेटर्स ऑफ ए रेनासां फेमिनिस्ट* (अनुवाद डायना रॉबिन), शिकागो, दि यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1997.

आंद्रे चेस्टेल व अन्य, *दि रेनासां : एसेज इन इंटरप्रिटेशन*, लंदन, मैथूइन, 1982. यह पुनर्जागरण पर विख्यात विद्वानों के लेखों का संकलन है. यह विविध व कम ज्ञात पहलुओं को प्रस्तुत करती है.

एम गिलमोर, *दि वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिज्म, 1453-1517*, न्यूयॉर्क, हार्पर कोलोफोन, 1952. यह सर्वेक्षण खास तौर पर मानववाद के सर्वेक्षण की प्रकृति में लिखी गई एक अच्छी पुस्तक है.

ई.एच. गोंबरिच, *दि स्टोरी ऑफ आर्ट*, न्यूयॉर्क, फेडॉन, 1951. यह एक कला समालोचक की महत्वपूर्ण पुस्तक है.

———, *सिंबोलिक इमेजेज : स्टडीज इन दि आर्ट ऑफ दि रेनासां*, तीसरा संस्करण, ऑक्सफोर्ड, 1985. यह पुनर्जागरण कला के विशेषज्ञ द्वारा लिखी गई पुस्तक है.

जे.आर. हेल, *रेनासां यूरोप : दि इंडिविज्अल एंड सोसाइटी, 1480-1520*, बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1971. इस पुस्तक का जोर लोगों पर न कि घटनाओं पर है.

आर.जे. नेक्ट, *रेनासां वारियार एंड पैट्रन, दि रेन ऑफ फ्रैंसिस I*, कैंब्रिज, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996.

पी.ओ. क्रिस्टेलर, *रेनासां थॉट : दि क्लासिक, स्कॉलैस्टिक एंड ह्यूमैनिस्टिक स्ट्रेंस*, न्यूयॉर्क, हार्पर टार्क बुक, 1961. यह मानववादी विचारों पर एक विद्वत्तापूर्ण और मौलिक रचना है जो इस विषय पर नई अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करती है.

वाल्टर डी. मिगनोला, *दि डार्कर साइड ऑफ दि रेनासां : लिटरेसी, टेरिटोरियलिटी एंड कोलोनाइजेशन*, मिशिगल प्रेस, यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, 1995. इसमें यह तर्क दिया गया है पुनर्जागरण के सभी पहलू गौरवपूर्ण नहीं थे. इसके कुछ पहलू अंधकारमय भी थे.

ग्विडो रगीरो (संपादन), *ए कंपैनियन टू दि वर्ल्ड्स ऑफ दि रेनासां*, ऑक्सफोर्ड, ब्लैकवेल, 2002. यह पुनर्जागरण की दुनिया के विविध पहलुओं पर आलेखों का एक बड़ा संकलन है. इसमें पुनर्जागरण के समय के समाज के नकारात्मक पहलुओं और आंदोलनों की उपलब्धियों और सीमाओं का उल्लेख शामिल है.

जॉन स्टीफेंस, *दि इटैलियन रेनासां, दि ओरिजिंस ऑफ इंटेलेक्चुअल एंड आर्टिटिस्टिक चेंज बिफोर रिफॉर्मेशन*, लंदन, लांगमैन, 1990. यह पुस्तक संस्कृति, लैटिन अक्षरों और कला के क्षेत्र में आए परिवर्तनों और इटली की विरासत की व्याख्या करती है.

अध्याय तीन

खोजयात्राएं, खोज और औपनिवेशिक साम्राज्य

अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों की शुरुआत और यूरोपीय वाणिज्यिक अर्थव्यवस्था के विस्तार का भौगोलिक खोजयात्राओं और अज्ञात देशों की खोज के क्रम में हुई समुद्री गतिविधियों के साथ गहरा संबंध था। आरंभ में इसकी रफ्तार धीमी रही। लेकिन पंद्रहवीं सदी के अंतिम दशक में इसमें गति आई। इसके परिणामस्वरूप अमरीका, एशिया का औपनिवेशीकरण आरंभ हुआ। दूर-दराज के क्षेत्र में अपने औपनिवेशिक साम्राज्य विकसित करने वाले यूरोपीय देशों में पुर्तगाल और स्पेन पहले देश थे। इसके बाद पश्चिमोत्तर यूरोप के राज्यों ने विश्व के विभिन्न भागों में अपने-अपने उपनिवेश स्थापित किए। इस औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा के कारण ही हाल तक कई युद्ध लड़े गए।

पंद्रहवीं शताब्दी तक यूरोपीय राज्यों ने थलमार्ग के माध्यम से पूरब के देशों में व्यापारिक संबंध स्थापित कर लिए थे। मसालों में काली मिर्च, दालचीनी, लौंग और जावित्री के साथ-साथ रेशम और सूती वस्त्र भारत के साथ-साथ अन्य पूर्वी देशों से मंगाए जाते थे और इटली के वेनिस अथवा जेनोआ के व्यापारी इन सामानों को जहाज के जरिए यूरोप भेजा करते थे। इन चीजों को लिवांत के माध्यम से पश्चिमी यूरोप पहुंचाया जाता था। इसी प्रकार अफ्रीका के कुछ हिस्से यूरोपीय सामानों के बदले सोना और बहुमूल्य धातु भेजते थे। पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान तुर्की साम्राज्य के उदय से यूरोपियों को सड़क मार्ग से एशिया आने-जाने में कठिनाई होने लगी। इस कारण और ईसाई और इसलाम धर्म के आपसी धार्मिक विरोधों के फलस्वरूप इसलामी और ईसाई राज्यों के बीच धर्मयुद्ध छिड़ गया। इसी कारण से एशिया पहुंचने के लिए समुद्री मार्ग खोजने की दिशा में तेजी आई। पुर्तगालियों और स्पेनवासियों ने अज्ञात देशों की खोज के लिए समुद्री यात्राओं को संरक्षण और प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया।

लगभग पूरी पंद्रहवीं शताब्दी तक समुद्री और महासागरीय यात्राओं पर पुर्तगालियों का दबदबा कायम रहा। पुर्तगाली नाविकों और नौचालकों ने समुद्री हवा के प्रवाह का व्यावहारिक ज्ञान हासिल किया। इसके माध्यम से वे आस-पड़ोस के द्वीपों और निर्जन तटों तक पहुंचने में सफल रहे। काफी लंबे समय तक माना जाता रहा था कि पुर्तगाली इस क्षेत्र में इसलिए अग्रणी थे क्योंकि वे पंद्रहवीं सदी के मध्य तक इसलाम से अपने प्रदेश फिर से जीत कर